जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

जुलाई 2017 द्वितीय पक्ष पृष्ठः 52 मूल्यः 7:00 रुपये

जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से परम श्रद्धेय गुरु भगवंतों को दीक्षा, स्मृति एवं जन्म दिवस पर हार्दिक अभिनंदन-वंदन-नमन

RNI NO. - 2123/57
Date of Posting 23-24/07/2017
at Lodhi Road, H.O. New Delhi-110003
जुलाई 2017, द्वितीय पक्ष

Postal Regn. No. DL(ND) 11/6156/2015-16-17
U(C) 66/2015-17 Licenced to Post
Without Pre-Payment
Date of Printing 20 July 2017

स्व. श्री नाथु लाल जी वड़ाला जैन

स्व. सौ. सलुबाई जी वड़ाला जैन

जीवन प्रकाश योजना आधार स्तम्भ

स्व. श्री नाथु लाल जी वड़ाला जैन एवं स्व. सौ. सलुबाई जी वड़ाला जैन

गाँव बागोल, नाथद्वारा, जिला - राजसमन्द (राजस्थान)

राजस्थान प्रदेश की अरावली पर्वत माला की गोद में एवं श्रीनाथ जी की पावन नगरी श्री नाथद्वारा के पास बसे बागोल गाँव में जन्मे स्व. श्री नाथुलाल जी वड़ाला जैन, पूर्वजों द्वारा मिले सुसंस्कारों की बदौलत प्रारंभ से ही समाज सेवा में अग्रणी रहते थे। कम उम्र में ही आप मुंबई पधारे एवं अपना व्यवसाय शुरु किया तथा अपने परिवार का नाम रोशन किया। आपकी धर्मपत्नी स्व. सौ. सलुबाई जी जैन वड़ाला देव–गुरु–धर्म के प्रति समर्पित रही। आपके चार पुत्र श्री रमेशचन्द्र जी जैन, श्री मांगीलाल जी जैन, श्री देवीलाल जी जैन सभी पिता के दिये हुए संस्कारों के अनुरुप चल रहे है। आपके एक पुत्र स्व श्री प्रकाशचन्द्र जी जैन बहुत कम आयु में ही इस संसार से चले गये। आपकी पुत्रवधुएं सौ. शकुन्तला देवी जैन, सौ. पिस्ता देवी जैन, सौ. लाजवंती देवी जैन सभी समाज सेवा में तत्पर है। आपके पौत्र लोकेश कुमार जी जैन व्यवसाय में संलग्न हैं। पौत्रवधु सौ. भावना जी जैन सुसंस्कारों के साथ पारिवारिक जिम्मेदारियां निभा रही है। आपकी सुपौत्री देवांशी सुपौत्र आशुतोष एवं आंचल जैन सभी संस्कारों से पल्लवीत है।

आपके सुपुत्र श्री देवीलाल जी जैन वड़ाला ने पिता जी के दिये हुए संस्कारों से मुंबई में कैलाश स्टील इंडस्ट्रीज़ के नाम से व्यवसाय शुरु किया, जो भारत के कई शहरों में स्टेनलेस स्टील के बर्तनों की आपूर्ति करती है। श्री वड़ाला जी पूर्व में अनेक पदों पर सेवा दे चुके हैं। वर्तमान में आप मेवाड़ संघ मुंबई के वरिष्ठ मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली के वरिष्ठ मार्गदर्शक, मेवाड़ भवन गोरेगांव के स्वर्णिम ट्रस्टी एवं कार्यकारिणी सदस्य, जनकल्याण सेवा समिति आर.एस.एस. दांडेसर, मुंबई भाग के अध्यक्ष, जैन संस्कार मंच के संरक्षक पद पर सेवा दे रहे हैं। आपकी पुत्रवधु सौ. लाजवंती देवी जैन वड़ाला पूर्व में मेवाड महिला मंडल मुंबई की प्रमुखा, संरक्षिका, अध्यक्षा एवं संगठन मंत्री के साथ कई पदों पर सेवा दे चुकी है। वर्तमान में आप मेवाड महिला की कार्यकारिणी प्रमुखा, ज्ञान प्रकाश समिति सेवा संघ मुंबई की संयोजिका, जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली, जीवन प्रकाश योजना की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा ऐसे कई पदों पर आप सेवा दे रही हैं।

आपकी सेवा से प्रसन्न होकर श्रमण संघीय महामंत्री पूज्य गुरुदेव श्री सौभाग्यमुनि जी म. 'कुमुद' ने 'दान विरांगना' उपाधि से अलंकृत किया। आपको सुश्राविका रत्न, विदुषी नारी रत्न, समाज सेवा रत्न एवं संस्कार गौरव की उपाधियों से भी सम्मानित किया गया। आपका पूरा परिवार मेवाड़ प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री अम्बालाल जी म., श्रमण संघीय महामंत्री पू. गुरुदेव श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद', पू. प्र श्री मदनमुनि जी म., राजस्थान सिंहनी पू. श्री प्रेमवती जी म. के परम भक्त एवं उनके दिये हुए संस्कारों के अनुसार चल रहे हैं। इस प्रकार आपका पूरा परिवार समाज सेवा में समर्पित है, सत्य है कि ऐसा परिवार समाज के लिये एक आदर्श है। श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की जीवन प्रकाश योजना के आधार स्तम्भ बनने पर बड़ाला परिवार को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद।

मोहनलाल चोपड़ा जैन	डॉ. अशोककुमार एन.पगारिया जैन	महेन्द्र बोकरिया जैन	संजय बोथरा जैन	लादुलाल बाफना जैन
(राष्ट्रीय अध्यक्ष)	(राष्ट्रीय महामंत्री)	(राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष)	(अध्यक्ष-जीवन प्रकाश योजना)	(मंत्री-जीवन प्रकाश योजना)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526, वेस्ट रोहतास नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12-शहीद भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली- 110 001 से प्रकाशित

श्रमण संघीय युग प्रधान आचार्य पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. सा. एवं युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि म. सा. आदि संतों के इंदौर चातुर्मास प्रवेश की कुछ झलकियाँ

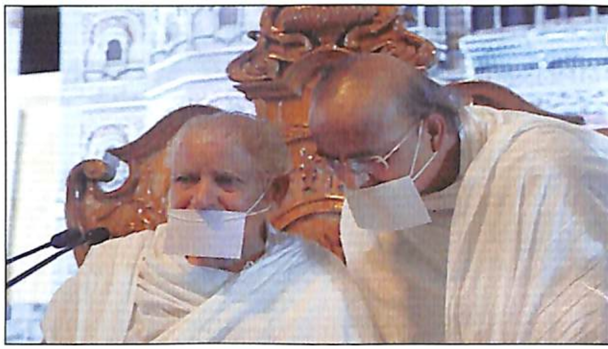

उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म. सा. के चेन्नई चातुर्मास प्रवेश की कुछ झलकियाँ

महाराष्ट्र प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषि जी म. आदि ठाणा के चातुर्मास प्रवेश के अवसर पर जाप एवं साधना पत्रिका का विमोचन का दृश्य।

श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री राममुनि जी म. 'निर्भय', युवा संत पू. श्री विकास मुनि जी म. विरार, मुंबई चातुर्मास प्रवेश के लिये जाते हुए

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

श्रमणसंघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः।
स्थानकवासिजैनानां कॉन्फ्रेंसनामविश्रुता, समाजोत्थानकार्येषु संस्थेयमस्ति तत्परा।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

वर्ष-60 अंक-14 जुलाई 2017 द्वितीय पक्ष 23-24 जुलाई मूल्य एक प्रति 7 रुपये

प्रधान सम्पादक
अशोककुमार एन. पगारिया जैन
सम्पादन सहयोगी
शेर सिंह जैन
बालचंद खरवड़ जैन

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
नई दिल्ली
जैन भवन
12, शहीद भगत सिंह मार्ग
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
दूरभाषः 011 - 23363729, 23365420
फैक्स : 011 - 23344380
E - mail
aissjc1906@gmail.com
Website
www.jainconference.org

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1000/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 1500/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता	
12 वर्ष	रु. 1000/-

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	श्री अशोककुमार एन. पगारिया जैन	07
अध्यक्षीय उद्‌गार	श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन	09
शिव संदेश	पू. श्री शिव मुनि जी म.	11
अमर अमृतालोक	पू. श्री वरुण मुनि जी म.	12
व्यक्ति स्वयं भाग्य ...	पू. डॉ. प्रमोदकुंवर जी म.	13
पांडवों की परीक्षा	पू. श्री युगल निधि कृपा श्री जी म.	15
गुरु पूर्णिमा का महत्व	पू. श्री देशनाश्री जी म.	16
पढ़ाई की उम्र ...	पू. श्री ज्योत्सना जी म.	18
हमारी इच्छाओं में ..	श्री अविनाश चोरड़िया जैन	19
सूक्ष्म या विराट ...	श्री महेन्द्र बोकरिया जैन	20
भारतीय संस्कृति के नक्षत्र ...	श्री मनोहरलाल कांठेड़ जैन	21
चातुर्मास संस्कृति ...	श्री नेमीचंद दलाल जैन	23
जैन दिवार की ...	डॉ. दिलीप धींग	24
एक विराट व्यक्तित्व ...	श्री प्रफुल्ल कुमार सी. कोटेचा जैन	26
चातुर्मास को ऐतिहासिक ...	श्री सुमेर सिंह मुणोत जैन	28
अल्पसंख्यक जैन ...	डॉ. एस. कृष्णचंद चोरड़िया जैन	30
संशोधन के माध्यम से सेवा	श्री जीएम बोथरा जैन	34
प्रधानाचार्यश्री	श्री तरुण जैन	35
रंगों का संसार	सौ. निधि दिनेश लोढ़ा जैन	38
पूज्य आचार्यश्री ...	संकलन सौ. स्व. उमराव देवी धींग	39
समाचार प्रकाश		40
शोक समाचार		50

सम्पादक एवं जैन कॉन्फ्रेंस का लेखक के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है। कृपया मौलिक विचार ही प्रेषित करें। किसी लेखक या पुस्तक से ली गई सामग्री का आभार अवश्य प्रकट करें। लेख एक पृष्ठ तक सीमित रखें तथा अपना नाम, पता एवं मोबाईल नंबर अवश्य लिखें। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युग प्रधान, आगम अतिधन्वा, आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज
युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज

उपाध्याय मण्डलः श्री विशाल मुनि जी महाराज 'वाचनाचार्य'
श्री मूलचंद जी महाराज
श्री रमेश मुनि जी महाराज
श्री जितेन्द्र मुनि जी महाराज
श्री प्रवीण ऋषि जी महाराज
श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज

प्रवर्तक मण्डलः श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत'
श्री रमेश मुनि जी महाराज
श्री कुन्दन ऋषि जी महाराज
श्री सुमन मुनि जी महाराज
श्री रतन मुनि जी महाराज
श्री मदन मुनि जी महाराज
श्री प्रकाश मुनि जी महाराज 'निर्भय'
डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज

महामंत्री - श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद'

मंत्री मण्डलः श्री शिरीष मुनि जी महाराज
(शिवाचार्य मुख्य सचिव)
श्री आशीष मुनि जी महाराज
श्री कमल मुनि जी महाराज 'कमलेश'

सलाहकार मण्डलः श्री सुमतिप्रकाश मुनि जी महाराज
श्री सहज मुनि जी महाराज
श्री सुकन मुनि जी महाराज
श्री सुरेश मुनि जी महाराज 'शास्त्री'
श्री तारक ऋषि जी महाराज
श्री रमणीक मुनि जी महाराज
श्री दिनेश मुनि जी महाराज
श्री विनय मुनि जी महाराज 'भीम'
श्री राम मुनि जी महाराज 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डलः श्री ज्ञानप्रभा जी महाराज
श्री चंदना जी महाराज
श्री सुधा जी महाराज
श्री सुप्रभा जी महाराज
श्री सरिता जी महाराज

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

विश्वस्त मण्डल (2011-2017)

1. श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर - चेयरमैन
2. श्री कांतिलाल जैन, मुंबई - सदस्य
3. श्री नेमीचंद चोपड़ा जैन, पाली - सदस्य
4. श्री राजेन्द्र कीमती जैन, हैदराबाद - सदस्य
5. श्री राजेन्द्र प्रसाद कोठारी जैन, बैंगलोर - सदस्य
6. श्री शेर सिंह जैन, दिल्ली - सदस्य
7. श्री चन्दनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर - सदस्य
8. श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नासिक - सदस्य
9. श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई - सदस्य
10. श्री रमेश चंद जैन (काहनी), दिल्ली - सदस्य

पदेन सदस्य -

11. श्री अविनाश चोरड़िया जैन - पदेन सदस्य
12. श्री बालचंद खरवड़ जैन - पदेन सदस्य
13. श्री नेमनाथ जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
14. श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
15. डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन - पदेन सदस्य

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

	एस.टी.डी.	दूरभाष कार्यालय	दूरभाष निवास	मोबाइल	फैक्स
राष्ट्रीय अध्यक्ष :					
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	0253	2461546, 2465569	2460026, 2461546	09423962818 09423963100	2461546
निवर्तमान अध्यक्ष :					
श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	0731	401157, 4011111		09303232777	4011110
चेयरमैन विश्वस्त मण्डल :					
श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर	080	25475895, 25478567	25475901, 25475695	09844152853	41250211
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण :					
श्री जे. डी. जैन, गाजियाबाद	0120	2706100	2750100	09810006462	
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	02932	280898,280899	222125,325125	09829025729	222125
श्री सुवालाल वाफना जैन, धुले	02562	232033, 233133	235544, 235555	09422296155	
प्रमुख मार्गदर्शक :					
श्री कान्तिलाल एच. जैन, मुंबई	022	26398752	26352434	09821033225	26356983
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली	011	43573099,43573499		09313813899	23346899
श्री रामकुमार जैन, लुधियाना	0161	2449493, 2447538	2448714, 4413040	09814002335	2449957
श्री चंदनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर	0731	2540914	2540900	09826022621	
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष :					
श्री विलास लोढा जैन (वरिष्ठ), अहमदनगर				09960666065	
श्री बालचंद खरवड़ जैन, मुंबई	022	29255921, 29250508	25222104	09821668548	29200223
श्री भंवरलाल डी. वोहरा जैन, मोलेला (राज.)				09324556349	
श्री औंकारसिंह सिरोया जैन, उदयपुर	0294	2414033	2410374	09414167574	
श्री वालासाहेव चोरड़िया जैन, मुंबई	022	26367681	26367381	09324122233	
श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	0240	2337015, 2324811	2480979	09822659910	
श्री रमेश भण्डारी जैन, इंदौर	0731	460069 4070069		09302103817	2460069
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर	0181	5001111, 5019611		09815184311	
श्री भंवरलाल भण्डारी जैन, हैदराबाद				09440897417	
श्री वी. शांतिलाल पोखरना जैन, बैंगलोर			9845155799	09342535887	
श्री जगदीश चन्द्र जैन, पानीपत	0180	4009181		09896200081	
राष्ट्रीय महामंत्री :					
डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	020	46703433	09422036831	09028736831	
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष :					
श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	011	43573099, 43573499		09868125710	23346899
राष्ट्रीय मंत्री :					
श्री विमल जैन, अम्बाला	0171	3294322	09216701008	09466701008	
श्री संजय जैन, 'निशा' लुधियाना	0161	2621237		09417253101	
श्री कंवरलाल सूर्या जैन, भीलवाड़ा	01482	236641	239104	09414113056	
श्री सोहनलाल भण्डारी जैन, नाशिक				09823079708	
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	0253	2599400	2599500	09422246500	
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	011	27372290		09810672111	
श्री विजय डागा जैन, मुंबई	022	28470384	28398165	09821095976	
श्री पारस दुगड़ जैन, धुले	02562	278519		09423193447	
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद				09810078214	
श्री आनंद कोठारी जैन, बैंगलोर	080	28538338		09341234176	
श्री प्रसन्नकुमार संचेती जैन, चेन्नई				09035010666	
श्री सागर सांखला जैन, भोसरी				08888090999	

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री					
श्री दिनेश एम. सुराणा जैन, दिल्ली	011	27296131		09310054428	
राष्ट्रीय प्रचार - प्रसार मंत्री :					
श्री सुभाष जैन 'लिली', मंगलदेश (पंजाब)				09814699393	
श्री रिखबलाल सांखला जैन, मुंबई				09820668898	
राष्ट्रीय युवा शाखा :					
अध्यक्ष- **श्री शशिकुमार कर्नावट जैन 'पिन्टू',** मालेगांव				09823955515	
महामंत्री- **श्री रवि मदनलाल लोढ़ा जैन,** औरंगाबाद	0240		2338224	09822276008	
राष्ट्रीय महिला शाखा :					
अध्यक्षा - **श्रीमती रूचिरा ललित सुराणा जैन,** मुंबई			09423966963	09820004079	
महामंत्री - **श्रीमती विनिता राजेन्द्र ओरड़िया जैन,** सूरत				09426115241	
जीवन प्रकाश योजना :					
अध्यक्ष - **संजय बोथरा जैन,** घोटी				09822596781	
मंत्री - **श्री लादुलाल बाफना जैन,** मुंबई				09833866852	
जीव दया योजना :					
अध्यक्ष - **श्री प्रकाश सिंघवी जैन,** सूरत				09879550981	
मंत्री - **श्री छितरमल रांका जैन,** सूरत				08980018801	
मानव सेवा योजना :					
अध्यक्ष - **श्री महेश डाकोलिया जैन,** इंदौर	0731	2531066	2970666	07773866000	531066
मंत्री - **श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन,** इन्दौर	0731	28753681	2780090, 2785232	09425062147	
ज्ञान प्रकाश योजना :					
अध्यक्ष - **श्री भंवरलाल पगारिया जैन,** बैंगलोर				09448238429	
मंत्री - **श्री अशोक कुमार धोका जैन,** बैंगलोर	080	41221890		09844058123	
वैय्यावच्च समिति :					
अध्यक्ष - **श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन,** नाशिक	0253	2575799		09422944800	
मंत्री - **श्री महावीर नाहर जैन,** वड़गांवशेरी, पुणे				09822285538	

:: सम्माननीय प्रांतीय अध्यक्ष मण्डल ::

श्री आनन्दमल छल्लानी जैन (तमिलनाडु)	मो. : 098410 30035
श्री महावीरचंद अलिजार जैन (आंध्र प्रदेश)	मो. : 094924 44444
श्री सुरेशचन्द छल्लाणी जैन (कर्नाटक)	मो. : 093412 32573
श्री अतुल जैन (दिल्ली)	मो. : 098110 75336
श्री विनय जैन (हरियाणा)	मो. : 086075 00001
श्री राकेश जैन 'लक्की' (पंजाब)	मो. : 098150 20661
श्री मनमोहन जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098370 67082
श्री विमल तातेड़ जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 098260 62838
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 094220 74172
डॉ. गुमानसिंह पीपाड़ा जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098300 30774
श्री सतीश नारायणदास लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 22138
श्री कांतिलाल बोथरा जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 094223 05755
श्री चन्द्रेश आर. कच्छारा जैन (गुजरात)	मो. : 095958 91111

:: सम्माननीय प्रांतीय महामंत्री मण्डल ::

श्री महावीरचन्द बोहरा जैन (तमिलनाडु)	मो. : 096772 47246
श्री दिलीप कुमार धारीवाल जैन (आन्ध्र प्रदेश)	मो. : 098480 54130
श्री मनोहरलाल लुकड़ जैन (कर्नाटक)	मो. : 098806 28555
श्री जसवंत जैन (दिल्ली)	मो. : 098104 35108
श्री राजेन्द्र जैन (हरियाणा)	मो. : 099963 33388
श्री अरुण जैन (पंजाब)	मो. : 098155 66885
डॉ. रश्मिकांत जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098083 79242
श्री संजय नवलखा जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 094251 01230
श्री बलवंत सिंह हींगड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 098297 85197
श्री आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098302 49151
श्री मनोजकुमार एम. सेटिया जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 21511
श्री रविन्द्र रमनलाल लुकड़ जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 098231 29411
श्री दिनेश संचेती जैन (गुजरात)	मो. : 093769 01329

सम्पादकीय

हमारा सपना पूरा हुआ, डायलिसिस सेंटर का निर्माण हुआ

– डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, राष्ट्रीय महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : ashokpagariyaandco@gmail.com

प्रिय पाठक भाईयो एवं बहनों,

सादर जय जनेन्द्र!

चातुर्मास प्रवेश सभी जगह बड़े ही हर्षोल्लास से संपन्न हुये। सभी ओर से प्रवेश समारोह में श्रावक-श्राविका एवं हमारे युवा साथियों ने भारी संख्या में उपस्थित होकर भी श्रीसंघ का मान बढ़ाया। सभी श्रद्धेय संत-सतियों के प्रवचन सुचारु रुप से शुरु हो चुके हैं। हमें इस बात का ध्यान रखना है कि जितना हो सके उतना लाभ संतों की अमृतवाणी (अमृतवर्षा) का लिया जाये। उसे अपने जीवन में उतारना है, अपने जीवन को सफल ही नहीं बल्कि सार्थक बनाना है।

इस पखवाड़े में बड़ी महत्त्वपूर्ण घटना हुयी। हमारा एक सपना पूरा हुआ, कई दिनों से मैं यह सपना देख रहा था कि जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से डायलिसिस सेंटर का निर्माण हो। मानव सेवा का यह प्रथम स्थाई रुप से समाज के लिये बड़ा साताकारी प्रकल्प है। गरीब, जरुरतमंद लोगों को बार-बार डायलिसिस करना संभव हो नहीं पाता, केवल उनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण। एक डायलिसिस का खर्चा लगभग दो हजार से पच्चीस सौ तक हॉस्पिटल में लिया जाता है। पूरे माह में अगर चार भी डायलिसिस करने की आवश्यकता हुई तो 8000 की राशि गरीब कहा से लायेगा? इस बात को मद्देनज़र रखते हुए हमारे स्नेही जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य प्रफुल्ल जी कोठारी ने डेढ़ वर्ष पहले श्री सतीश जी बनवट के मार्गदर्शन से 'कोठारी चेरिटेबल ट्रस्ट' की ओर से डायलिसिस सेंटर शुरु किया। वहां इतने गरीब लोग डायलिसिस के लिए आते हैं कि एक-एक कहानी सुनकर आंख में आंसू आ जाते हैं। मानव सेवा का यह महान कार्य देखकर हमारे मन में ही यह बात आ गयी कि हम भी कुछ जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से ऐसा ठोस काम करें ताकि ज़रुरतमंद लोगों को सहायता मिले। जीवनदान मिले और उनकी आयु में बढ़ोतरी हो, श्री पारसजी जैन मोदी के साथ बात हुई, उन्होंने हरी झंडी बनायी और जगह देखने के लिए कहा। दो तीन जगह देखने के बाद हमारे स्नेही थेरगांव श्रीसंघ के सचिव श्री अशोक जी सुराणा, सौ. अर्चना जी सुराणा जैन के सुपुत्र अमित और सी.ए. श्री पंकज जी ने 1200 वर्ग फुट जगह 11 साल के लिए देने के लिए हां भर दी मेरा तो दिल खुशी से उछलने लगा और तुरंत पारसजी जैन मोदी को यह जगह दिखायी। श्री प्रफुल्ल जी कोठारी, सतीश जी बनवट ने इस वास्तु को देखकर बड़ी खुशी से पसंद किया और आगे का काम शुरु हो गया। इस वास्तु का 11 वर्ष के लिए एग्रीमेंट बनाकर औपचारिकताएं पूरी कर ली। पूरा नवीनीकरण करवाया और योजना के अनुसार केवल 10 दिनों में डायलिसिस सेंटर बनवाया गया। श्री अशोक सुराणा जी की वर्षगांठ पर उद्घाटन निश्चित हुआ और नाम उनके पोत्रों का रखने की इच्छा प्रकट की, जो नाम पूछा तो हम हक्के-बक्के रह गये, इतने खुश हुये कि इतना बड़ा संजोग हम सोचकर भी जीवन में नहीं ला सकते उनके पोतों के नाम हैं 'ओम, जय और आनंद' हमने नाम रखा 'ओम जय आनंद डायलिसिस सेंटर' जो हमारे भगवंत आचार्य पू. श्री आनंदऋषि जी का नाम बिना किसी नियोजन से आपने आप आ गया और हमें बड़ा अच्छा सुकुन मिला।

यह पूरा प्रयास वैसे जगह की क्षेत्र के अनुसार मशीन का है लेकिन शुरु में पांच मशीन लगवाने का निश्चिय किया गया और हमारे ही राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य सर्व श्री नितिन जी चोपड़ा जैन, प्रकाश जी बोरा, अभय जी संचेती एवं समाज सेवी श्री राजेन्द्र मुथा, श्री मनोहरलाल जी लोढ़ा (चिंचवड़) ने पांच मशीन के लिए अपनी धनराशि घोषित की। श्री मनसुखजी गुगळे, विहारधाम योजना के प्रमुख आर.ओ. वाटर पॉट के लिए दान राशि घोषित की। उद्घाटन के दिन ही इस प्रोजेक्ट के कुल बजट की

रकम दानदाताओं ने घोषित कर मानव सेवा के इस महान कार्य को अपना पुरजोर समर्थन दिया।

महाराष्ट्र प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषि जी म., संस्कार दिवाकर पू. श्री आलोकऋषि जी म. की ओर से भेंटगांव तक 9 कि.मी. का उग्र विहार कर उद्घाटन समारोह को आर्शीवाद देने हेतु आये। हम पू. श्री जी को कोटि-कोटि वंदन नमन करते हैं। आपने इस कार्य को सराहा, शुभाशीर्वाद दिये। यह हमारे लिये अहोभाग्य की बात है। पूज्य गुरुवरों के सान्निध्य में ओम जय आनंद डायलिसिस विधिवत् जैन कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी चोपड़ा जैन तथा वास्तुदाता श्री अशोक जी सुराणा जैन के करकमलों द्वारा हुआ। इस अवसर पर पूरे महाराष्ट्र से आये हुए अनेक पदाधिकारी, श्रीसंघों के अध्यक्ष, पदाधिकारी, महिला युवा जैन कॉन्फ्रेंस की पदाधिकारियों इस ऐतिहासिक अवसर के साझीदार बनने का गौरव (सौभाग्य) प्राप्त किया।

श्री पारस जी जैन मोदी, डॉ. प्रो. अशोककुमार एन. पगारिया जैन तथा श्री सतीश जी बनवट जैन, प्रफुल्ल जी कोठारी जैन और पंचम जोन के सभी राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य हमारा सपना पूरा होने के आनंद की अनुभूति कर रहे थे। प्रफुल्ल जी जैन के प्रयास से पहले ही दिन पांच रोगियों का डायलिसिस करवाया गया। रात्रि 8 बजे उन मरीज भाई-बहनों के चेहरे पर जो मुस्कान थी, उससे हमारी थकान मानो गायब हो गयी यह मेरे मन में विचार आया। **'सपने वह नहीं होते जो हम नींद में देखा करते हैं, सपने तो वह होते हैं जो पूरे किये बिना हमें नींद नही आती'**। हमें इस बात की अनुभूति आ गयी और उस दिन-रात को हम प्रसन्नता से गहरी नींद में खो गये।

इस प्रकल्प में पंचम जोन के सभी राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्यों ने अपना योगदान देने का संकल्प किया है मैं सभी को धन्यवाद देता हूँ। उद्घाटन समारोह में राष्ट्रीय अध्यक्ष जी के साथ वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री विलास जी लोढ़ा जैन, श्री बालचंद जी खरवड़ जैन, श्री बालासाहेब चोरडिया जैन, श्री तनसुख जी झांमड जैन, महावीर प्रतिष्ठान पुणे के कार्याध्यक्ष एवं कॉन्फ्रेंस के पूर्व उपाध्यक्ष श्री विजयकांत जी कोठारी जैन, बिववेवाड़ी श्रीसंघ के अध्यक्ष एवं कॉन्फ्रेंस के पूर्व उपाध्यक्ष श्री पोपटलाल जी ओस्तवाल जैन एवं राष्ट्रीय मंत्री श्री सागर सांखला जैन, राष्ट्रीय महिला मंत्री सौ. लता पगारिया जैन, सौ. कविता शेठिया जैन, पंचम जोन महिला अध्यक्षा प्रो. सुरेखा कटारिया जैन, हमारे प्रकल्प सहयोगी पंचम जोन के कार्यकारी सदस्य श्री नितिन चोपड़ा जैन, श्री प्रकाश जी बोरा, श्री अभय संचेती, श्री कीर्ति दुगड़, श्री विलासजी पगारिया, श्री नेमीचंद गुगळे, श्री किरण जी गांधी, श्री प्रफुल कोठारी, श्री महावीर जी बहार, श्री गणेश जी ओसवाल अनिल जी नाहर, श्री रमणलाल जी लुंकड, पंचम जोन युवा अध्यक्ष श्री आदेश खिंवसरा तथा जीवन प्रकाश योजना राष्ट्रीय मंत्री श्री लादुलाल जी बाफना, राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री श्री रिखब जी सांकला, मार्गदर्शक श्री रमेश जी बाफना, श्री जय प्रकाश जी लुणावत, श्री पृथ्वीराज जी बोथरा तथा श्रावक-श्राविकाएं, पदाधिकारी उपस्थित थे।

विशेष रुप से कहना चाहूंगा कि सांसद श्री रंगजी बारणे ने अपनी व्यस्तता के बावजूद समय निकालकर उद्घाटन समारोह में उपस्थित होकर संबोधित करते हुए कहा कि जैन समाज देश के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाला समाज है। समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभाने वाले इस समाज ने देश भर में कई सामाजिक प्रयासों को अंजाम दिया है और गरीब जरुरतमंद लोगों को बड़े पैमाने पर सहायता की है। मैं इस समाज के योगदान के लिये उनका अभिनंदन करता हूं और डायलिसिस सेंटर जैसे मानवता के महान कार्य को शुभकामना देता अपनी ओर से हर प्रकार की सहायता करने का वचन देता हूँ।

भाईयो और बहनो! मैं जैन प्रकाश में आज तक डायलिसिस सेंटर के बारे में अपील करता हूँ, लेकिन आज अधिकारवाणी से कहूंगा डायलिसिस सेंटर हर जिले में खोलने का हम संकल्प करेंगे और हाँ, 'इरादा नेक हो, हौंसला बुलंद हो, आत्म विश्वास हो, दृढ़ संकल्प हो, मानवता के प्रति श्रद्धा हो, गरीबों के प्रति करुणा हो, तो कोई भी कार्य असंभव नहीं है। बस जरुरत है मन में ठान लेने की और कार्य को अंजाम देने की। मैं सभी को शुभकामना देते हुए संपादकीय पूरा करता हूँ।

द्वितीय पट्टधर पू. श्री आनंदऋषि जी का पावन जन्म सप्ताह सभी जगह 18 जुलाई से 26 जुलाई तक मनाया जा रहा है हम सभी बड़ी श्रद्धा भाव एवं भक्ति से इस सप्ताह के सभी कार्यक्रमों में शामिल होने का प्रयास करें। मैं समस्त जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से आचार्यश्री जी के चरणों में अभिनंदन करता हूँ, वंदन करता हूँ। ✧✧

अध्यक्षीय उद्गार

चहुं ओर हो रही है धर्म की गंगा प्रवाहमान !

- **मोहनलाल चोपड़ा जैन,** राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : chopdagroup@gmail.com

सम सम्माननीय बन्धुओं बहिनों !

सादर जय जिनेन्द्र !

जैसा कि आप सभी को ज्ञात है कि दिनाँक 07 जुलाई से चातुर्मास का मंगल प्रारंभ हो गए थे। चातुर्मास के मंगल प्रारम्भ से पूर्व हमारे प्रेरणा पुंज महान साधु-साध्वी जी महाराज अपने-अपने घोषित क्षेत्र में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश कर चुके तथा चहुं ओर महाराजश्री जी के मंगलमय पवित्र प्रवचनों की धरा प्रवाहमान हो रही है। जिस प्रकार श्रावण मास में चहुं ओर वर्षा का जल धरती को हरा-भरा कर देता है, उसी प्रकार से पूज्यवर साधु-साध्वी जी महाराज के मंगलमय प्रवचनों से चहुंओर धर्म की पतित पावन गंगा प्रवाहमान हो रही है।

यद्यपि चातुर्मास का सभी धर्म सम्प्रदायों में महत्व है। किन्तु जैन परम्परा में चातुर्मास को विशेष महत्व प्राप्त है। आगमों में साधु-साध्वियों के लिए नवकल्पी विहार का वर्णन चलता है। आठ महीने तक अपनी आत्म-साधना में रत रहते हुए विभिन्न क्षेत्रों को पूज्य संत-साध्वीगण वीतराग वाणी से लाभान्वित करते हैं, जबकि चार माह तक अपने कल्प के अनुसार एक क्षेत्र में विराजमान रहकर धर्मोद्योत करते हुए संघ समाज में नई चेतना का संचरण करते हैं।

श्रद्धालुजनों में धर्म साधना-आराधना के प्रति रूचि होती है, किन्तु संतजनों का दीर्घ समय तक सुसान्निध्य प्राप्त होने से उस रूचि में और अधिक अभिवृद्धि हो जाती है और होनी भी चाहिए। यह कटु सत्य है कि आज हमारे चातुर्मास अधिकांश रूप से व्यर्थ प्रदर्शन तथा आडम्बर के पर्याय बनते जा रहे हैं। जो कार्य सम्पन्न करने चाहिए वह कार्य लगभग गौण रह जाते हैं और जो कार्य गौण रहने चाहिए वे प्रमुखता पा जाते हैं। धूमधाम एवं दिखावे में चातुर्मास की सफलता मानना भूल है।

मेरा ही नहीं अपितु अधिकांश जनों का यह मानना है कि चातुर्मास में योजनाबद्ध रूप से आत्म अभ्युदय के साथ हमारे संघ समाज के हित की दृष्टि से विशेष सुप्रवृत्तियाँ चलनी चाहिए। श्रद्धेय साधु-साध्वीवृंद तो इस ओर ध्यान दें ही, किन्तु जागरूक श्रावक समाज को ही सचेष्ट रहना चाहिए। बच्चों में सुसंस्कार महिलाओं एवं युवा वर्ग में जागृति तथा स्वधर्मी भाई बहिनों की सेवा तथा स्वाध्याय के कार्यक्रमों को विशेष रूप से पुष्ट किया जाए। आलोचना के धरातल से ऊपर उठकर संघ समाज के संगठन को मजबूती मिले। इस तरह का चिन्तन और प्रयास भी चले। चातुर्मास की अवधि में कई उपकारी महापुरुषों की जन्म जयन्तियाँ, पुण्य तिथियाँ आदि भी आती हैं। इन्हें माध्यम बनाकर धर्म-साधना और रचनात्मक कार्यक्रमों को खुले मन से महत्व दिया जाए।

एक बार पुनः मैं संपूर्ण कॉन्फ्रेंस की ओर से मंगलमय चातुर्मास की कामना करता हूँ। साथ ही निवेदन करना चाहता हूँ कि चातुर्मास का विशेष लाभ लिया जाए साथ ही उन तुच्छ प्रवृतियों से बचा और बचाया जाए जिससे राग द्वेष की वृद्धि होती है।✧✧

आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनंद ऋषि जी म. जीवन परिचय

जन्म	:	26 जुलाई, 1900, शिराल चिंचोड़ी, ता. पाथर्डी अहमदनगर, (महाराष्ट्र) श्रावण शुक्ला प्रतिपदा
माता	:	श्रीमती हुलसा बाई गुगलिया
पिता	:	श्री देवीचंद गुगलिया
जन्म नाम	:	श्री नेमीचंद गुगलिया
गुरु	:	पूज्य श्री रत्नऋषि जी म. सा.
भागवती दीक्षा	:	7 दिसम्बर 1913, मीरी, ता. पाथर्डी, अहमदनगर (महाराष्ट्र), मार्ग शीर्ष शुक्ला नवमी
चादर महोत्सव	:	विक्रम संवत् 2020 अजमेर (राजस्थान)
दीक्षोपरांत नाम	:	आनंद ऋषि
शिक्षण	:	पंडित राजधारी त्रिपाठी
प्रथम प्रवचन	:	1920 अहमदनगर
प्रधानमंत्री पद	:	1952, सादड़ी सम्मेलन (श्रमण संघ)
आचार्य पद	:	13 मई, 1964-1992 (श्रमण संघ के आचार्य)
राष्ट्रसंत उपाधि	:	13 फरवरी 1975
दीक्षा अमृत महोत्सव	:	1987 अहमदनगर
स्मृति दिवस	:	28 मार्च, 1992 (संथारा पूर्वक देह विलय) अहमदनगर
डाक टिकट	:	9 अगस्त, 2002 (भारतीय डाक तार विभाग द्वारा)

शिव संदेश...

- युग प्रधान आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिव मुनि जी म.

चतुर्विध संघ में अध्यात्म की साधना को जीने का चातुर्मास एक अवसर है। प्रत्येक साधक महामंत्र का जाप करता है। स्वाध्याय करके ज्ञानार्जन करता है। बच्चों को संस्कार प्राप्त होते हैं। समाज को साधार्मिक सेवा एवं सुपात्र दान का अवसर प्राप्त होता है। संगठन मजबूत बनता है। संघ में मैत्री प्रेम का भाव निर्माण होता है। विभिन्न प्रकार की तपस्याओं का अवसर है चातुर्मास।

इस चातुर्मास में मेरा चिन्तन है कि प्रत्येक साधक अपने जीवन में आत्म बोध को प्राप्त कर मिथ्यात्व का त्याग करें, सत्य की साधना करें। **'सच्चं खु भगवं'** सत्य ही भगवान है। सत्य पर श्रृद्धा करना सम्यक्त्व है। सत्य की समझ प्राप्त करना सम्यक् ज्ञान है। सत्य की शोध करना उसका ध्यान. करना उसका अनुभव प्राप्त कर आत्म रमण करना सम्यक् चारित्र है। सत्ता में पड़े हुए कर्मो का कम समय में क्षय करने की कला है चारित्र। सम्यक् तप है। चातुर्मास में मोक्ष मार्ग में प्रगति हो। प्रत्येक साधक शरीर से पार आत्मा को महत्व दें। आत्मार्थी बनें।

आत्मार्थी शरीर व आत्मा में भेद करता है। इसी का नाम भेद-विज्ञान है। श्रवण से ज्ञान होता है, ज्ञान से विज्ञान अर्थात् विशेष ज्ञान भेद विज्ञान, अनुभव से शरीर अलग व आत्मा अलग का बोध प्राप्त कर अनशन आदि 12 तपों से देहाशक्ति तोड़ना। मूर्च्छा भाव से कर्म का बंधन होता है। होश से कर्म निर्जरा होती है। हर साधक को ये भान रहे की मैं आत्मा हूं। आत्मा का स्वभाव आनंद, शांति व ज्ञान है। अर्थात् ज्ञाता दृष्टा भाव हमारा स्वभाव है। इसमें जीने वाला साधक एकत्व में है।

आत्मा अकेली थी, अकेली है। आगे भी अकेली रहेगी इस एकत्व की साधना को चातुर्मास में पुष्ट करना है। जितने सगे सम्बन्धी वे सब शरीर से जुड़े है। में शरीर नहीं आत्मा हूं। यही बोध सम्यक्तव है।

श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य आनंदऋषि जी म.सा. के जन्मोत्सव पर हमारी वन्दनांजलि है कि हर परिस्थिति में हर कर्म के उदय को हम समभाव से सहन कर सकें। जीवन की प्रत्येक श्वांस आनंद पूर्वक व्यतीत हो। आनंद हमारा स्वभाव है। प्रत्येक जीवात्मा में आनंद है किन्तु अज्ञानवश व्यक्ति, मनोरंजन एवं इन्द्रियों के विषयो से आनंद पान में समय लगाता है और परिणाम स्वरुप क्षण भर आनंद, मिलता है और लम्बी कतार दुःख की खड़ी करता है। इसे ही जैनागम में कहा है। **'खणमित्त सुखा, बहुकाल दुक्खा'** - आचार्य आनंदऋषि जी ने अपने जीवन में साध्ना कर 24 घंटे आनंद में रहकर जीने की कला चतुर्विध संघ को प्रदान की, 30 वर्ष तक श्रमण संघ का नेतृत्व करते हुए उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितयों में समता भाव रखकर हम सब को आदर्श दिया की प्रतिकूलता में समता रखकर हम भारी कर्म क्षय कर सकते है। उन्होंने संगठन को मजबूत किया उनके जन्मोत्सव पर सामूहिक आयम्बिल एवं सदैव आनंद में रहने का संकल्प करके उनके जयंती मनाना सार्थक होगा।

मालव केसरी श्री सौभाग्यमल जी म.सा. की 33वीं पुण्य तिथि पर हम उनके चरणों में यही श्रृद्धा सुमन अर्पित करते है कि आपके जैसी विनय, एकता, समर्पण, त्याग की भावना हमारे भीतर जागृत हो। आपने श्रमण संघ के निर्माण में महत्त्व पूर्ण भूमिका निभायी। आपने श्रमण संघ के प्रथम पट्टधर आचार्य सम्राट आत्माराम जी म.सा. का नाम रखा जिसे सभी ने सहर्ष स्वीकार किया। आपके व्यक्तित्व का इतना प्रभाव था कि सभी ने उसे खुशी से स्वीकार किया।

✧✧

अमर अमृतालोक

- पू. श्री वरुण मुनि जी म.

उत्तर भारतीय प्रवर्तक पू. श्री अमरमुनि जी म. श्रमण संघ के एक देदीप्यमान शुभ नक्षत्र थे। आपका जन्म अविभाजित भारत के क्वेटा (वर्तमान पाकिस्तान) में भादया सुदी पंचमी विक्रम संवत् 1993 (तदानुसार ईस्वी सन् 1936) को एक प्रतिष्ठित क्षत्रिय परिवार में हुआ। बालक अमर ने बचपन में भारत-पाकिस्तान को विभाजित होते देखा। वे श्रद्धानिष्ठ पिता श्री दीवानचंद जी मल्होत्रा और श्रद्धाशील माता श्रीमती बसंती देवी जी के साथ विस्थापित हो, भारत आए। संयोगवस अम्बाला रेलवे स्टेशन पर वे अपने जन्म-दाता माता पिता से बिछुड गये। जब वे प्लेटफार्म पर उदास और निराश बैठे थे, तब लुधियाना निवासी एक जैन श्रावक ने बालक अमरनाथ को अकेले बैठे देखा। उन्होंने बालक की व्यथा कथा सुनी। दयालु श्रावक ने पुत्रवत अनुराग बरसाते हुए बालक को अपने साथ ले लिया। श्रावकजी आचार्य श्री आत्माराम जी म. के प्रति गहन श्रद्ध रखते थे। वे बालक अमर को आचार्यश्री के पावन सान्निध्य में ले गए। संयोगवश उस दिन महाश्रमणी पू. श्री अभय कुमारी जी म.सा. की सुशिष्या साध्वीरत्ना पू. श्री महेन्द्रा जी म. का दीक्षोत्सव था। दीक्षा महोत्सव देख बालक अमर की मनोभूमि पर विरक्ति के भाग अंकुरित हुए। वे आचार्यश्री का प्रवचन श्रवण कर संबोधि को उपलब्ध हुए। बालक अमर ने दीक्षा लेने का संकल्प लिया।

दिव्यदृष्टा आचार्यश्री ने इस विलक्षण बालक को अपने अंतेवासी पौत्र सुशिष्य भण्डारी पू.श्री पद्मचंद जी म. के वरदहस्त में सौंपते हुए कहा भण्डारी जी। यह बालक श्रमण धर्म अंगीकार करके एक दिन जैन संस्कृति का महान नायक बनेगा। इस कोहिनूर को बड़े ध्यान से तराशना, समय आने पर यह श्रमण धर्म में मुकुट में शोभायमान होगा। आपने भादवा सुदी पंचमी विक्रम संवत 2008 ईस्वी सन 1951 के शुभ दिन सोनीपत मंडी, हरियाणा में जैन मुनि दीक्षा ग्रह की। आप राष्ट्रसंत उत्तर भरतीय प्रवर्तक प.पू. भण्डारी पू. श्री पदमचंन्द्र जी म. के सुशिष्य बने। संयम ग्रहण के साथ ही गंभीर तलस्पर्शी ज्ञानाभ्यास और ध्यानाभ्यास के क्षेत्र में अहिर्निश ऊर्ध्वारोहण करते हुए अपने एक अनुशासनप्रिय सुविनीत शिष्य के रुप में ख्याति प्राप्त की।

गुरु के कुशल निर्देशन में पू. श्री अमरमुनि जी म. ने भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन का अगाध अध्ययन किया। वे कुशल प्रवक्त थे। जनमानस उन्हें वाणी के 'जादूगर' के रुप में सम्मानित करता था। पू. श्री अमरमुनि जी म. साधक और महान संघटक थे। संघरथ के कुशल सार्थवाही पू. श्री अमर मुनि जी म. का कद इतना ऊंचा था कि उन्होंने कभी पद की आकांक्षा नहीं रखी। अपने गुरुदेव को ही सभी पद और अलंकरण समर्पित किए। प.पू. युगप्रधान आचार्यश्री शिवमुनि जी म ने सस्नेह आग्रह करके सन 2003 में उन्हें उत्तर भारतीय श्रमण संघ का नेतृत्व करने को कहा।

चतुर्विध के संघ के विशिष्ट आग्रह पर आप श्रमण संघ की उत्तर भारतीय श्रमण परम्परा में प्रवर्तक जैसे गरिमा-महिमा मंडित पद से शोभायमान हुए। अपने गुरु के नाम से आपने कई संस्थाओं की स्थापना की। इनमें प्रमुख हैं - पदमधाम, पदम प्रकाशन,

(नरेला मंडी, दिल्ली) गुरु पदम ज्ञान मंदिर (विभिन्न क्षेत्रों में) गुरु पदम जैन साधना भवन (मानसा मंडी पंजाब) गुरु पदम जैन चैरिटेबल फिजियोथेरेपी हास्पिटल (मंडी निहालसिंह वाला पंजब तथा श्री गंगानगर, राजस्थान) आदि हैं।

युग प्रवर्तक श्रुताचार्य साहित्य सम्राट गुरुदेव श्री अमरमुनि जी म. ने संयम साधना के साथ-साथ सर्जना के कई प्रतिमान स्थापित किये। उनके सारस्वत पाणिपदमों से जैनागमों का सचित्र संपादन हुआ। यह अवदान युग-युगांतरों तक एक कीर्ति शेष स्मारक सा बना रहेगा। उन्होंने जैनागमों के संपादन के अतिरिक्त अन्य कई कृतियाँ रची। प्रमुख हैं - व्याख्या प्रज्ञप्ति (भगवती सूत्र, चार भाग ब्यावर से) श्री सूत्रकृतांग सूत्र 2 भाग, सिद्धांत और साधना आदि।

वे जैनागमों के अंग्रेजी अनुवादन करने से विश्व विख्यात हुए। अपने सुदीर्घ साधना काल में कई योग्य शिष्यों को जैनेन्द्रिय (दीक्षा) महा सम्पदा प्रदान की। पू. आचार्यश्री आत्माराम जी म.की श्रुत सम्पदा को विस्तार देने वाले इस भागीरथ व्यक्ति का सन् 2013 बसंत पंचमी के दिन लुधियाना पंजाब में संथारा समाधि सहित सिविल लाईन जैन स्थानक में महाप्रयाण हुआ। आज वे सदेह भले ही इस असार संसार में नहीं है पर अपने नाम के अनुरुप वे लाखों अनुयायियों के हृदयों में सदैव अमर रहे। ✧✧

व्यक्ति स्वयं भाग्य का निर्माता

- साध्वी-रत्ना पू. डॉ. श्री प्रमोदकुंवर जी म.

उज्जयिनी नगरी में राजा प्रजापाल का यश और वैभव मैना सुंदरी के विवाह पश्चात् नया अध्याय लेकर आया। अब राजा ने द्वितीय पुत्री सुर सुंदरी का विवाह करने के लिए राज ज्योतिषी को अच्छा मुहूर्त निकालने के लिए राज्यसभा में बुलाया तो निकट भविष्य में कोई श्रेष्ठ मुहूर्त नहीं होना बताया। राजा प्रजापाल सुर सुंदरी के विवाह के लिए और अधिक दिन मुहुर्त के अभाव में रूकना नहीं चाहता था, उसने बिना कोई मुहूर्त देखें सुर सुंदरी का विवाह अरिमर्दन राजा से कर दिया। राजकन्या को खूब दहेज दिया और राजसी वैभव के साथ विदा किया।

राजा अरिमर्दन राजपुत्री सुरसुंदरी और दहेज में मिला अपार धन लेकर अपनी नगरी की ओर लौट गया। एक अटवी से गुजरते हुए डाकुओं के दल ने राजकुमारी सुरसुंदरी सहित रत्न-माणिक्य सब लूट लिया। सुरसंदरी दस्यु दल के हाथों में उनकी क्रीत दासी बन गई और उसे नृत्य सीखा कर नाटक मंडली के हाथों बेच दी गई। उसे नाटक मंडली एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने लगी, जहाँ वह नृत्य करती थी। राजा बब्बन ने मुँह मांगा पैसा देकर नाटक मंडली को अपनी पुत्री के मौज-शौक के लिए खरीद लिया।

श्रीपाल राजकुमार उज्जयिनी नगरी से विदेश यात्रा के लिए धवल सेठ के साथ रवाना हुए। यह भी एक संयोग था कि श्रीपाल जब बब्बन राजा की कन्या मदनसेना से विवाह कर विदा हुए, वह नाटक मंडली (नर्तकियों का दल) उन्हें आमोद-प्रमोद के लिए उनके साथ दे दी। नर्तकी के रूप में सुरसुंदरी श्रीपाल के समक्ष नाटक मंडली में नृत्य कर उनका मनोरंजन करती थी। बारह वर्ष व्यतीत होने पर श्रीपाल राजा उज्जयिनी आए। मैना सुंदरी व माता से मिले। उनके साथ अन्य विवाहिता राजकुमारियाँ थी, जिनसे मैना सुंदरी का परिचय कराया।

श्रीपाल राजा ने उज्जयिनी नगरी को चारों ओर से घेर लिया और प्रजापाल राजा को संदेश भिजवाया कि या तो युद्ध के मैदान में मिले या अपने कंधे पर कुल्हाड़ा रखकर आत्म सर्मपण के भाव से राजा श्रीपाल के समक्ष आएं। राजा प्रजापाल ने मंत्रि परिषद् की आपात् बैठक बुलाई और सबकी राय मानकर युद्ध करने के बजाय आत्म-समर्पण करना ज्यादा श्रेयस्कर समझा।

राजा प्रजापाल शर्त अनुसार कंधे पर कुल्हाड़ा रखकर श्रीपाल राजा के तंबू की ओर बढ़े। मैना सुंदरी को वहाँ देखकर राजा प्रजापाल को आश्चर्य हुआ और विचार करने लगे, इतने में श्रीपाल ने आगे बढ़कर राजा प्रजापाल के कंधे से कुल्हाड़ा लेकर नीचे रख और वंदन नमस्कार किया।

नर्तकी बनी सुरसुंदरी को उज्जयिनी की भूमि और बचपन का स्मरण हो आया। वह यह समझ चुकी थी कि उसके पिता प्रजापाल और मैना सुंदरी के मध्य पिता-पुत्री का वार्तालाप चल रहा है, यह राजा और कोई नहीं, बल्कि वह राजवंश के जामाता हैं, जिनके साथ यह नर्तकी मंडली एक देश से दूसरे देश घूमती रही और नृत्य करती रही। अब उसका मन संकोच से भर गया, उसे लगा कि राज वैभव ओर राजा के समझ उसकी स्थिति मात्र नर्तकी की है।

श्रीपाल ने उज्जयिनी नगरी में एक दिन नाटक मंडली से नृत्य दिखाने का आग्रह किया। सुर संदरी अपने ही गृह नगर और पिता के समक्ष नृत्य करने के लिए तैयार नहीं हुई। श्रीपाल को यह ज्ञात नहीं था कि नाटक मंडली की प्रधान नर्तकी सुर सुंदरी है, वह मैना सुंदरी की बहिन है। उसने नर्तकी को आदेश किया कि आज की रात्रि भव्य नृत्य करना है और नाटक मंडली को अपना नाटक दिखाना है। श्रीपाल की राजाज्ञा के अधीन होने से सुर सुंदरी ने नृत्य किया और नृत्य करते हुए परिचय दिया की वह उज्जयिनी के राजा प्रजापाल की पुत्री सुरसुंदरी है, जो दस्यु दल के हाथों लुटी गई और नर्तकी बन गई। मैना सुंदरी ने ज्यों ही सुर सुंदरी के मुख से आप बीती कहानी सुनी, उसकी आंखों से अश्रु धारा बह निकली। वह नर्तकी बनी सुर सुंदरी को अपने निकट ले आई।

राजा प्रजापाल आश्चर्यचकित रह गए, उन्हें यह क्षण मात्र भी विश्वास नहीं हुआ कि उनकी पुत्री सुरसुंदरी डाकुओं के हाथों में पड़ कर एक साधारण नर्तकी बन गई और जामाता श्रीपाल की नाटक मंडली की प्रमुख नर्तकी होकर उनके साथ देश-विदेश घूमती हुई उज्जयिनी नगरी आई। राजा प्रजापाल के समक्ष अतीत एक चित्र की भांति उभर कर आया। वे सोचने लगे, विचित्र संयोग है कि उन्होंने पुत्री मैनी सुंदरी को प्रताड़ित करने के लिए एक कुष्ठ रोगी के साथ उसका विवाह किया, परंतु वह वीर पराक्रमी राजपुत्र कंचनवर्णी काया हो गया और सुर सुंदरी को एक बलशाली राजा के हाथों अपार धन वैभव देकर विदा किया था, लेकिन वह नर्तकी बनकर एक दासी का जीवन जी रही है।

पुत्री वास्तव में पिताकर्मी नहीं, अपितु स्वकर्मी होती है। व्यक्ति स्वयं अपने भाग्य का निर्माता होता है। माता-पिता, बंधु-बांधव और कुटुम्बजन सिर्फ उसके निमित्त होते हैं। व्यक्ति के कर्म ही उसका अतीत और भविष्य निर्धारित करते हैं। ✧✧

(... पृष्ठ संख्या 15 का शेष भाग)

हो? तब धर्मराज ने कहा - मैं पांडुपुत्र माता कुंती के पुत्रों में से हूं तो माता माद्री के पुत्र रूप में भी एक जीवित चाहिए। यह सुनते यह सुनते ही यक्ष पर प्रसन्न हो गया और चारों भाईयों को जीवित कर दिया। सबने पानी पीया और द्रौपदी के लिए भी पानी लेकर अपने गंतव्य स्थान को चले गये। ✧✧

पांडवों की परीक्षा

- पू. साध्वी श्री युगल निधि-कृपा जी म.

वनवास का काल में पांचों पांडव द्रौपदी के साथ जंगल में भटक रहे थे। एक समय जब वे भयानक जंगल से गुजर रहे थे, द्रौपदी को बड़ी जोर से प्यास लगी। तब धर्मराज ने छोटे भाई नकुल से कहा कि - तुम जाओ और कहीं से भी तूणीर-पात्र में पानी ले आओ। नकुल तुरंत ही बड़े भाई की आज्ञा मानकर चला। इधर-उधर तलाशने पर उसे एक सुंदर सरोवर दिखाई दिया जिसका पानी अत्यंत निर्मल था। यह देख नकुल का मन प्रसन्नता से भर गया। वह ज्यों ही पानी पीने को उद्यत हुआ त्यों ही उसे आकाशवाणी सुनाई दी - हे माद्रीपुत्र नकुल! पहले मेरे प्रश्न का जबाव दो फिर पानी पीने का साहस करना। तब नकुल ने कहा - कहिए। तब यक्ष ने कहा - मेरा प्रश्न है 'को मादते?' अर्थात् प्रसन्न है? प्रश्न सुनकर नकुल ने उसकी उपेक्षा की और पानी पीने ज्यों ही झुका कि वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ा।

उधर बहुत देर हो जाने पर भी नकुल को न आते देखकर युधिष्ठिर ने सहदेव को नकुल की खोज करने के लिए भेज दिया। तब वह खोजने उसी सरोवर के पास पहुंचा। भाई को मूर्च्छित देखकर वह घबराया। आस-पास देखा पर उसे कुछ भी समझ नहीं आया। इतने में उसे आकाशवाणी सुनाई दी - हे माद्रीपुत्र सहदेव! पहले मेरे प्रश्न का जबाव दो फिर पानी पीने का साहस करना। तुम्हारे भाई ने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया तो वह बेहोश होकर गिर पड़ा है। तब यक्ष ने प्रश्न पूछा - 'किमाश्चर्यम्' अर्थात् आश्चर्य क्या है? परन्तु सहदेव ने भी उपेक्षा करके जल पीना चाहा तो उसका भी वही हाल हुआ। तब भीम आये और उससे भी कहा गया कि प्रश्न का उत्तर दो फिर पानी पीना। यक्ष ने तीसरा प्रश्न किया 'का वार्ता?' अर्थात् समाचार क्या है? उसने भी उत्तर नहीं दिया तो उसकी भी यही दशा हुई। अर्जुन को युधिष्ठिर ने भेजा और वह भी जब सरोवर पर पहुंचा तो आकाशवाणी हुई। उससे भी यक्ष ने प्रश्न पूछा - 'का पथः स्मृतः?' अर्थात् कौन से पथ का अनुसरण करें? अर्जुन ने भी उत्तर नहीं दिया तो वह भी मूर्च्छित होकर गिर गया। चारों भाई मूर्च्छित होकर सरोवर के किनारे पर पड़े हुए थे।

अंत में सभी तलाश करने धर्मराज चले। सरोवर के पास जब चारों भाईयों को मूर्च्छित पाया तो सोच में पड़ गये। इतने में यक्ष प्रकट हुआ और बोला - इन्होंने मेरे प्रश्न के उत्तर नहीं दिये तो मैंने इनको मूर्च्छित किया है। आप भी पहले मेरे प्रश्न का उत्तर दें तब पानी पी सकते हैं। तब यक्ष ने चारों प्रश्न क्रमशः दोहराये। धर्मराज ने भी चारों प्रश्नों के उत्तर क्रमशः दिए। पहला प्रश्न था - कि प्रसन्न कौन है? ध र्मराज ने कहा प्रसन्न वही है जो किसी का कर्जदार नहीं है। दूसरा प्रश्न था कि आश्चर्य क्या है? धर्मराज ने कहा - प्रतिदिन अनेक प्राणी मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। यह बात प्रत्यक्ष में जानकर भी जो शेष बचे हुए लोग हैं वे सदैव यहाँ रहने की इच्छा करते हैं। भला इससे बढ़कर आश्चर्य और क्या हो सकता है।

तीसरा प्रश्न था कि समाचार क्या है? धर्मराज ने कहा - समय बीत रहा है और प्रतिपल हम मृत्यु के निकट पहुंच रहे हैं बस यही समाचार है। अंतिम प्रश्न था कि किस पथ का अनुसरण करना चाहिये। ध र्मराज ने कहा पथ वही है जिस पथ पर महापुरुष चल रहे हैं, क्योंकि अनेक पथ व्यक्ति को भ्रमित कर सकते हैं।

युधिष्ठिर ने चारों प्रश्नों के उचित युक्ति-युक्त उत्तर मिलने पर यक्ष बड़े ही प्रसन्न हुए और बोले - हे धर्मराज! मैं, तुम्हारे द्वारा दिये गये प्रश्नों के उत्तर सुनकर बहुत ही संतुष्ट हुआ हूं। अतः इन चार भाईयों में से जिस किसी को तू चाहे उसी को मैं जिंदा कर सकता हूं। कुछ पल सोचकर धर्मराज ने कहा - मैं माद्रीपुत्र नकुल को जीवित देखना चाहता हूं। यह सुनकर यक्ष आश्चर्य में पड़ गया और बोला - महाबली भीम और युद्ध परायण अर्जुन को छोड़कर आप सौतेले भाई को ही जीवित रखना क्यों चाहते

(शेष भाग पृष्ठ संख्या 14 पर ...)

गुरु पूर्णिमा का महत्त्व

– साध्वी पू. श्री देशनाश्री जी म.

गुरुपूर्णिमा के पावन दिवस पर भक्तगण अपने गुरु की पूजा-अर्चना करते हैं। जिसने भी अपने जीवन में गुरु का महत्त्व जाना है, अनुभव किया है, वे गुरु महिमा का बखान करते अघाते नहीं हैं। कहा भी है:-

सात समुंद की मसि करो, लेखन सब वनराय।।
धरती सब कागद करो, गुरुगुण लिख्या न जाय।।

अर्थात् सात समुद्र जितने पानी की स्याही से पूरी धरती रुपी काग़ज़ पर सारे वृक्षों की कलम बनाकर भी लिखने चलें, तो भी गुरु के गुणों को लिखा नहीं जा सकता। गुरु महिमा अपार है। क्यों है गुरु की इतनी महिमा? क्या है ये 'गुरु' तत्व, जिसके गुणगान सभी वेद, पुराण, शास्त्र, ग्रंथ करते हैं। आज की हमारी भौतिक चमक-दमक से परिपूर्ण जिन्दगी में क्या आवश्यकता है 'गुरु' की? सब कुछ तो है हमारे पास। माता-पिता, प्यार करने वाली पत्नी, पति, भाई-बहन, सगे-संबंधी, साथी, रिश्ते-नातेदार हैं, लेकिन इन सबके बावजूद इंसान के भीतर कुछ खालीपन, एक अधूरापन है; जिसे रिश्ते-नातेदार भी नहीं भर पाते हैं। हम स्वयं को बहुत रीता-सा महसूस करते हैं। ये तो 'गुरु' की ही महिमा होती है कि उनकी शरण में आकर हमें पूर्णता की एक झलक मिलती है।

हम अपने शुद्ध स्वरुप का दर्शन कर पाते हैं। गुरु के बिना राह शुरु नहीं होती। दुनिया के सबसे नज़दीकी रिश्ते में भी कहीं-न-कहीं दूरी बनी ही रहती है, लेकिन एक 'गुरु' का दर ऐसा है जहाँ कोई परायापन नहीं बचता; जहाँ सिर्फ अपनत्व ही अपनत्व है। जहाँ बस हेत-प्रेम की गंगा ही बहती है। ऐसे भगवत् स्वरुप 'सद्‌गुरु' से जब कोई मिलता है, उनके श्रीचरणों की शरण ग्रहण करता है, सच्ची पर्युपासना जब कोई कर पाता है; तभी वो जान पाता है कि इसी जीवन में मुक्ति का आनंद प्राप्त होता है 'गुरु' के सान्निध्य में रहकर। गुरु की निश्रा में रहने मात्र से सभी ताप-संताप, पीड़ा, कुण्ठा, गुनाहों के अहसास तिरोहित हो जाते हैं। उनकी दिव्य प्रेम से लबरेज़ आँखे न सिर्फ हमें सुरक्षित महसूस कराती है, बल्कि हमें अपने सारे गुनाहों के लिए क्षमित कर दिए जाने का अहसास कराती है। अपने होने पन का अर्थ हम तब समझ पाते हैं, जब 'सद्‌गुरु' हमारे जीवन में आता है। 'गुरु' ही हमें हमारे अस्तित्व का भान कराते हैं। इसीलिए जिन्होंने भी ऐसा रुहानी हस्ती से भेंट की हैं, वे फिर उन गुरु-चरणों को छोड़कर और कहीं किसी स्वर्ग या बैकुण्ठ की परवाह नहीं करते। रात-दिन गुरु के गुणगान करने के लिए उनकी जिह्वा लालायित रहती है। भाव-तरंगे हिलोरे ले-लेकर गुरु के चरण पखारती है। देह उनकी गुरुभक्ति के आनंद से स्वतः ही झूमने लगती है, पैर थिरकने लगते हैं। शरीर का रोम-रोम गुरु के प्रति श्रद्धावंत होकर कृतज्ञता और अहोभाव से भर उठता है।

गुरु पूर्णिमा का दिन गुरु के प्रति हमारे श्रद्धा-समर्पण के भावों की अभिव्यक्ति का दिन है। उनके द्वारा हम पर होने वाले अनंत उपकारों के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करने का दिन है। गुरु पूर्णिमा के दिन हम सर्वप्रथम गुरु के दिव्य आत्मगुणों से युक्त आभावलय में प्रवेश करने की अनुमति लेकर उनकी परिक्रमा करके तीन बार प्रदक्षिणा देते हैं। इससे हमारे भीतर रहे हुए सारे विकार चमत्कारिक रुप से निर्जरित होकर गुरु के सम्यग्ज्ञान-दर्शन आदि गुणों का स्वतः ही

संचार होने लगता है। फिर जब हम अनंत उपकारी सद्गुदेव के दाहिने पैर के अंगुठे पर चंदन-केसर से पूजा-अर्चन करके उनकी पर्युपासना में मन-वाणी और कर्म की एकाग्रता से शांतिपूर्वक बैठते हैं तो हम शनैः शनैः कर्म आवरणों के भार से मुक्त होकर स्वयं को पूर्णतया निर्मल और स्वच्छ महसूस करते हैं।

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर हम गुरु की अनुपम कृपा के प्रति आभारी होते हुए उन्हें प्रदक्षिणा देते हैं। गुरु तो सतत् हम पर रहमतों की वृष्टि करते हैं, आध्यात्मिक ज्ञान की संपदा हम पर लुटाते रहते हैं; लेकिन भेंट स्वरुप हम यत्किंचित्, जो कुछ हमारे पास है, उसे गुरु-चरणों में अर्पित करें। उनकी सुख-साता में हमारा भी योगदान हो। गुरु के ऋण से तो हम फिर भी उऋण नहीं हो सकते, लेकिन हमारी भावना यदि सर्वस्व समर्पण की हो, तो हमारा कल्याण ज़रूर होता है।

आओ हम सभी इस पावन अवसर पर सत्गुरुदेव के श्रीचरणों में अपनी श्रद्धा का अभिषेक करें।

प्रस्तुतिः- साधिका प्राग्भा विराट

✧✧

।।वेला चातुर्मास की।।

(तर्ज परदेशी परदेशी....)

गुरुवर से गुरुवर से विनती करें, विनती करें, हाथ जोड़कर अभिमान तोड़कर।
गुरुवर तो अपने ज्ञानी, जग सारा है जाने, कल सपने जो देखे पूरे हुए सुहाने,
चातुर्मास खोला तो नाचा मन मोर है, आप यहाँ पधारे तो आई नव भोर है,
बहारों के आने पर फूल नये खिलते हैं, आप जैसे संत बड़े पुण्यों से मिलते हैं।।
गुरुवर से गुरुवर से...

वेला चातुर्मास की तो सुंदर अति प्यारी, अब जप-तप से महकेगी, धर्म फुलवारी।
धर्म के ताल में हम डुबकियां लगायेंगे, महामंत्र की नित हम महिमा को गायेंगे।
आस हमारी तो आज हुई देखों पूरी है, मुक्ति नगर में नहीं रही कोई दूरी है।।
गुरुवर से गुरुवर से...

आगम का रस गुरुवाणी से बरसेगा, भक्तजनों का मन सुमनों सा हरसेगा,
चार मास तक हम धर्म ध्वजा को फहरायेंगे, 'अमृत' कर्म निर्जरा के तप घन छायेंगे,
बहुत समय के बाद सुअवसर आया है, गुरुवर का वर्षावास हमें मिल गया पाया है।।
गुरुवर से गुरुवर से...

- ज्योतिष सम्राट पू. श्री अमृतमुनि जी

पढ़ाई की उम्र में पढ़ाई ज़रुरी

- साध्वी पू. श्री डॉ. ज्योत्सना जी म.

जब हम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री आनंदऋषि जी म. की सेवा में अहमदनगर में थे, तब पर्युषण के दिनों में सभी साधु-साध्वियों के सामूहिक प्रवचन में एक-एक दिन की बारी बाँध दी गई। उस समय हमारी कौमुदी की पढ़ाई चल रही थी। हमारा मन तरसता था कि हम भी धर्मसभा में जाएं और प्रवचन श्रवण करें। हमारी भावना से हमने श्री महेन्द्रऋषि जी (वर्तमान युवाचार्य जी) को अवगत कराया।

पू. श्री महेन्द्रऋषि जी ने गुरुदेव को हमारी प्रवचन सभा में जाने की इच्छा जताई। श्री महेन्द्रऋषि जी के पूछने पर पूज्य गुरुदेव कुछ क्षण विचारमग्न हो गये और फिर बोले – 'प्रवचन तो जीवनभर सुनना भी है और सुनाना भी है। लेकिन मेरे पास आए हैं तो पढ़ाई जरुरी है। अभी पढ़ाई की उम्र है, पढ़ाई करनी चाहिए।

अष्ट संपदाओं के धनी पूज्य गुरुदेव के संकेत मात्र ही हमारे जीवन-निर्माण के सूत्र हुआ करते थे। अतः हम प्रवचन सभा में जाने की बजाय अध्ययन के प्रति समर्पित रहते थे।

गुरुदेव को सदैव सबका ध्यान रहता था। एक दिन अचानक उन्होंने हमें बुलाया और कहा कि कल श्री आदर्शऋषि जी म. का प्रवचन होगा, आप भी चले जाना। उस दिन के अलावा गुरुदेव ने संवत्सरी को भी प्रवचन में जाने के लिए फ़रमाया था।

वस्तुतः शिष्य-शिष्याओं की पढ़ाई-लिखाई और अध्ययन-अध्यापन के प्रति पूज्य आनंद गुरुदेव बेहद सजग रहते थे। अप्रमत्त जीवन, प्रबुद्ध संत-सम्पदा और जागरुक समाज के लिए वैसी सजगता की आज बहुत जरुरत है।

प्रस्तुति : डॉ. दिलीप धींग

✧✧

अगर आपको जैन प्रकाश पत्रिका नहीं मिल रहा है तो कृपया ध्यान दें

1. **आपने आजीवन सदस्यता फार्म पर जो पता दिया था अगर वह बदल गया है तो उसकी सूचना केन्द्रीय कार्यालय को देवें।**
2. **आपको जैन कॉन्फ्रेंस का आई-कार्ड नहीं मिला है तो उसकी जानकारी हमें अवश्य देवें।**
3. **अगर आपके परिवार में एक से अधिक पत्रिका प्राप्त हो रही है तो इसकी सूचना भी हमें अवश्य देवें। श्री विनय द्विवेदी सम्पर्क : 011-23363729**

E-mail : aissjc1906@gmail.com

- प्रधान सम्पादक

हमारी इच्छाओं में परमात्मा की छवि

- अविनाश चोरड़िया जैन, प्रमुख मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस

कहते हैं जैसे-जैसे आदमी की उम्र बढ़ती जाती है वह अनुभवी हो जाता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि हर नया दिन नया सवाल, नई परेशानी, नया काम लेकर आता है और आदमी उसी से सीखता चला जाता है। आदमी को वह अनुभव हमेशा याद रहता है और वह इसी अनुभव के बल पर कई प्रश्नों के उत्तर, या समस्याओं के हल सुझाता है। यह तो सर्वविदित है ही कि अगर कोई व्यक्ति कोई बात सीखता है उसके पीछे उसकी सीखने की चाह काम करती है। जैसे, किसी छोटे बच्चे को कोई सवाल आप सिखा रहे हों, उसका ध्यान इधर हो, यानी वह सीखना चाह रहा हो, तो वह याद कर लेगा। इसी प्रकार मनुष्य में नया जानने की, ज्ञान प्राप्त करने की चाह हमेशा होती है। यह और बात है कि जानने की चाह के विषय भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। कोई विज्ञान पढ़ता है कोई इतिहास। कोई साइकल ठीक करना सीखता है, तो कोई मोटर कार। किन्तु सीखने की चाह, नया कुछ जानने की चाह सब में होती है।

शास्त्रानुसार मनुष्य में दो बातों की चाह भी होती है। पहली है सदा रहने की। युधिष्ठिर महाराज व यक्ष के बहुत प्रसिद्ध प्रश्न-उत्तर याद कीजिए। यक्ष का उन प्रश्नों में एक प्रश्न था 'संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?' युधिष्ठिर महाराज ने उत्तर दिया, 'हालांकि हर कोई देखता है कि उसके आसपास के लोग मर रहे हैं, किन्तु हर व्यक्ति यही सोचता है कि वह कभी नहीं मरेगा।' इसका कारण है- हमारे अंदर की चाह-सदा रहने की। इसी के चलते सभी यह सोचते हैं कि हम कभी मरेंगे नहीं।

दूसरी बात है सुख चाहने की। हर व्यक्ति चाहे वह गरीब हो या अमीर, विद्यार्थी हो या अध्यापक, सुख चाहता है। हर कोई आनंद से जीना चाहता है। व्यक्ति जीवन भर इसी भाग-दौड़ में मरता फिरता है कि उसे सुख प्राप्त हो। इंसान बड़े घर बनाता है, बड़ी गाड़ी, आरामदायक बैठने की सीटें, नौकर रखता है, हर तरह के भरसक प्रयास करता है, कि वह सुखी हो सके। शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा हो, जो सुखी होना नहीं चाहता। अतः हम लोग तीन बातें हरदम चाहते हैं-सदा रहना, ज्ञान प्राप्त करना और सुख प्राप्त करना। किसी न किसी तरह ये तीन बातें हम हर पल, हर आयु में चाहते हैं। इसका कारण है हमारे शरीर के भीतर रहने वाली आत्मा। आत्मा भगवान कृष्ण का अंश है। भगवान विभु हैं, आत्मा गुण। चूँकि भगवान का स्वरूप है सच्चिदानन्द, इसलिए आत्मा का स्वरूप भी सच्चिदानन्द होता है। सच्चिदानन्द अर्थात् सत् (रहने की चाह) और आनंद (सुख प्राप्त करने की चाह)।

हमारे इस शरीर के भी दो भाग हैं, स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर। जो स्थूल शरीर है, जिसे हम देखते हैं, वह बनता है पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से। सूक्ष्म शरीर बनता है मन, बुद्धि और संस्कार से। स्थूल शरीर की रक्षा और पोषण करना हमारी मजबूरी है क्योंकि इसके बिना तो यह शरीर ही रह नहीं पाएगा। हम इस स्थूल शरीर के पांच तत्वों को उनकी खुराक देते हैं। पृथ्वी तत्व की खुराक हम पूरी करते हैं, भोजन करके। सभी खाद्य पदार्थ मिट्टी के ही स्वरूप हैं चाहे आप मानें या न मानें। सभी खाद्य वस्तुओं का स्रोत पृथ्वी ही है। जल तत्व का पोषण हम करते हैं पेय पदार्थ लेकर, स्नान करके इत्यादि। इसके अलावा हमारे पेट में जठराग्नि होती है जिसके रहने से हम भोजन को पचा पाते हैं। वायु तत्व का पोषण, सांस के रुप में हवा भीतर खींच कर व छोड़ कर करते हैं। आकाश अर्थात् खाली स्थान का पोषण होता है जब हम अपना स्थान स्थापित करते हैं। हम जहां कहीं भी जाएं, हम जो जगह घेरते हैं वह आकाश तत्व की पुष्टि है। इसके अलावा हमारे शरीर के रोएं, कर्ण छिद्रों के बिना हम जिन्दा नहीं रह सकते। ✧✧

सूक्ष्म या विराट होना ब्रह्म का आंशिक भाव है

– महेन्द्र बोकरिया जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

सभी प्राणियों की उत्पत्ति ब्रह्म से हुई है, इसलिए उनके रक्षक व पालनकर्त्ता भी ब्रह्म ही हैं। जो ब्रह्म ज्ञानस्वरूप है। यानी ज्ञान से ही ज्ञान पैदा हुआ और ज्ञान ही ज्ञान का संरक्षक व पालक है। आगे कहा है, ब्रह्म में ही सभी प्राणियों की गति है, जहाँ पर सारे प्राणी जाएंगे, जिसमें सारे प्राणी सम्यक रुप से प्रवृत्त होंगे, तुम उसे ही जानो। वह कौन है? 'तदेव ब्रह्म' अर्थात् वही ब्रह्म है। वह ब्रह्म चिन्मय स्वरुप है, जड़ स्वरुप नहीं है।

एक उदाहरण है जैसे एक पेड़ और साथ में उस पेड़ की छाया है। क्या पेड़ की छाया की तरह ही पेड़ है? सुना है कि फल खाने से भूख मिट जाती है। क्या पेड़ की छाया में लगे फल हमें खाने को मिलेंगे, क्या हमारी भूख मिटेगी? पेड़ में लकड़ी होती है और उस लकड़ी से मेज-कुर्सी इत्यादि बहुत सी चीजें बनती हैं, परन्तु क्या पेड़ की छाया से हमें लकड़ी मिलेगी, मेज-कुर्सी बन पाएंगे? क्या हमें उस पेड़ की छाया से पत्ता, फल या फूल इत्यादि कुछ मिल सकता है? नहीं, क्योंकि छाया में ये सब हैं ही नहीं। मान लो कि कोई व्यक्ति आरी लेकर पेड़ की छाया को काटने लगे। छाया को काटने से क्या वह कटेगी व क्या उसको पत्ता, फल या लकड़ी इत्यादि कुछ मिलेगा? कुछ नहीं मिलने पर यदि वह व्यक्ति कहे कि जो लोग ये कहते हैं कि पेड़ से लकड़ी, पत्ता या फल इत्यादि मिलते हैं, ये बात झूठी है। मैंने स्वयं काट कर देखा, न मुझे कुछ जलाने के लिए मिला, न मुझे कुर्सी-मेज बनाने के लिए लकड़ी मिली और न मुझे पेड़ का कोई फल या पत्ता ही मिला, इसलिए पेड़ जैसी कोई चीज है नहीं। तो क्या उस व्यक्ति का ऐसा कहना सही होगा?

व्यक्ति का ज्ञान, व्यक्ति का अनुभव पेड़ की छाया से है, पेड़ से नहीं। ठीक इसी प्रकार दुनिया की माया रुपी वस्तुओं को, माया रुपी शरीर इत्यादि को देखकर यदि कोई व्यक्ति भगवान के बारे में चिंतन करे तो क्या उसकी सोच, उसका निर्णय व अनुभव ठीक होगा? दुनिया की वस्तुओं को देखकर हम अनुमान लगाते हैं कि ईश्वर भी उसी प्रकार के होंगे। ईश्वर को सांसारिक व्यक्ति की तरह मानने से हमारी ईश्वर के बारे में गलत धारणा हो जाएगी। तब तो सीमित हो जाएंगे, उनमें कई तरह की कमियाँ आ जाएंगी, उनमें कई दोष आ जाएंगे, जबकि ईश्वर तो दोष-रहित हैं। ईश्वर का स्वरूप तो चिन्मय है, वे असीम हैं। वे अणु से अणु भी हो सकते हैं और विभु से विभु भी।

अणुत्व, विभित्व, मध्यमत्व व सर्वत्य भगवान में हैं। वे सर्वशक्तिमान हैं। महाभारत में जो विष्णु सहस्त्रानाम दिया गया है, आप उसे पढ़े। उसमें भगवान के एक हजार नाम दिए हैं, जिनमें से भगवान का एक नाम 'सर्व' भी है। यदि कोई तर्क करे कि निर्विशेष ब्रह्म तो विशेषण रहित है, ब्रह्म की कोई ताकत नहीं है, उनकी कोई हिम्मत नहीं है, तो उसका ये तर्क, उसका ये विचार गलत होगा। वह भगवान जो सर्व शक्तिमान हैं, उनमें निर्विशेषत्व का होना तो उसका एक आंशिक भाव है, यहाँ तक कि उनका अणुत्व व विभुत्व भी उनका आंशिक भाव ही है। माता यशोदा ने बड़ी कोशिश की उन्हें ओखली से बाँधने की, परन्तु वे बंधे नहीं। गोकुल की सारी रस्सियां जोड़ने पर भी रस्सी छोटे से गोपाल जी के पेट के माप के बराबर न हो सकी। वह हर समय दो अंगुल छोटी ही रही। वह बात अलग है कि जब स्वयं भगवान ने माता यशोदा जी की इच्छा पूरी करनी चाही, तो वे उस छोटी रस्सी से बँध गए जो माता यशोदा जी ने सबसे पहले उठाई थी।

✧✧

भारतीय संस्कृति के नक्षत्र एवं जैन कॉन्फ्रेंस के भूतपूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष पदम् विभूषण डॉ. दौलत सिंह कोठारी - एक जीवन परिचय

- **मनोहरलाल कांठेड़,** वरिष्ठ मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु की विज्ञान नीति में जो लोग शामिल थे, उनमें डॉ. कोठारी, डॉ होमी जहाँगीर भाभा, डॉ. मेघनाथ साहा और सी.वी. रमन थे। डॉ. कोठारी रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहाकर रहे। 1961 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष बनाए गए। इस पद पर वे दस वर्ष तक निरंतर कार्यरत रहे। 1964 में उन्हें राष्ट्रीय शिक्षा आयोग का अध्यक्ष बनाया गया। प्रशासकीय सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान प्रदान करने के लिये उन्हें सन् 1962 में भारत सरकार द्वारा **'पदम भूषण'** अलंकरण से सम्मानित किया गया। उन्होंने 1967 से 1970 तक हमारी मातृ संस्था श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर सुशोभित होकर समाज को एक नई दिशा दी व अपने तीन वर्षीय कार्यकाल में कॉन्फ्रेंस को कई सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से उच्चाईयों तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया। सन् 1967 में राष्ट्रीय सामाजिक जीवन में सतत् सेवाओं के परिणाम स्वरुप भारत सरकार ने आपको **'पदम विभूषण'** के अलंकरण से सम्मानित किया। पुनः 1973 से 1974 तक आपने जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर अपनी सेवाएं दी।

डॉ. दौलत सिंह कोठारी का जन्म 6 जुलाई उदयपुर (राजस्थान) में एक निर्धन स्थानकवासी ओसवाल जैन परिवार के सुसंस्कारित घराने में हुआ। वे मेवाड़ के महाराणा की छात्रवृत्ति से आगे पढ़े। 1940 में 34 वर्ष की आयु में वे दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पद पर नियुक्त हुए। प्रशासन शिक्षा विज्ञान के इतने अनुभवी व्यक्ति को भारत सरकार ने उच्च प्रशासनिक सेवा के लिए आयोजित सिविल सेवा परीक्षा की रिव्यु के लिए कमेटी का अध्यक्ष 1974 में बनाया, उनकी रिर्पोट के आधार पर भारत सरकार ने उच्च पदों आईएएस, आईपीएस और बीस वर्ष दूसरे विभागों के लिए एक सार्वजनिक (कामन) परीक्षा का आयोजन आरंभ हुआ। सबसे महत्त्वपूर्ण क्रांतिकारी कदम जो इस कमेटी ने सुझाया वह था अपनी भाषाओं में और अंग्रेजी में उत्तर देने की छूट और दूसरा उम्र सीमा के साथ-साथ देश भर में परीक्षा केन्द्र भी बढ़ाए जिससे देहात, कस्बों के ज्यादा से ज्यादा बच्चे इन परीक्षाओं में बैठ सकें तथा देश की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाएं देश के प्रशासन में समान रुप से हाथ बटा सकें। गाँधी, लोहिया के बाद आजाद भारत में भारतीय भाषाओं की उन्नति के लिए जितने काम डॉ. कोठारी ज़ी ने किये, उतने किसी अन्य ने नहीं किए।

यदि सिविल सेवा परीक्षा में अपनी भाषा में लिखने की छूट नहीं दी जाती तो गाँव-देहात के गरीब आदिवासी, अनुसूचित जाति, जनजाति के लोग उच्च सेवाओं में कभी भी नहीं आ सकते थे। अपनी भाषा में उत्तर लिखने की छूट से इन वंचितों में एक आत्म विश्वास तो जागा ही भारतीय भाषाओं के प्रति एक निष्ठा भी पैदा हुई। उनकी विलक्षण प्रतिभा कार्यकौशल के बीच उनका ऐसा व्यक्तित्व सँवरता हैं जो सदा सादगी का प्रतिमूर्ति रहा। जीवन में जो कुछ उन्हें मिला वह उनकी कड़ी, मेहनत, विलक्षण, प्रतिभा का परिणाम था। राष्ट्र के प्रति गहरे लगाव तथा धर्म व समाज के प्रति उनकी समपर्ण की भावना। आज भी युवा वर्ग के वैज्ञानिकों के लिए यथावत प्रेरणा स्रोत हैं। डॉ. कोठारी ने धर्म को मानने या आस्था तक ही सीमित नहीं रखा

बल्कि धर्म को विज्ञान की भांति सतत् खोज का विषय बना दिया। नागरिकों व समाजजनों से वे वैज्ञानिक की तरह धर्म की बात करते थे, इसलिए वे नास्तिक को भी प्रिय थे।

दिवंगत राष्ट्रपति मिसाइलमैन डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपनी आत्म कथा में जिन तीन वैज्ञानिकों का अपने जीवन पर प्रभाव माना उनमें से एक नाम है डॉ. दौलत सिंह कोठारी का, उच्च शिक्षा नीति निर्धारण के सबसे बड़े संस्थान यूजीसी के चेयरमैन के साथ जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय का उन्हें चांसलर बनाने के लिए प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने संविधान में संशोधन किया। जब देश में पहला अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ तो उसकी अध्यक्षता करते हुए उन्होंने कहा कि यदि विज्ञान का आधार अहिंसा नहीं हुई तो यह मानवता के लिए वरदान नहीं अभिशाप होगा। डॉ. कोठारी देश के सर्वोच्च संस्थाओं के प्रशासकीय मुखिया रहे, लेकिन कभी भी इन पदों पर रहते अपने व्यक्तिगत कार्यों के लिए सरकारी गाड़ी का उपयोग नहीं किया। इतने उच्च पदों पर पहुंचने के बाद भी उनके कपड़े कोल्हापुर रोड, दिल्ली जैन स्थानक की पटरी पर बैठा दर्जी सीलता था। परिग्रह के नाम पर उनके पास चार जोड़ी वस्त्र होते थे। सुनहरी स्मृतियों के बहाने किसी बड़े व्यक्तित्व के जीवन के ऐसे अनछुये पहलु नागरिकों समाजजनों की समझ को विस्तार तो देते ही हैं, प्रेरणास्पद भी होते हैं। तेरापंथ समाज ने उन्हें अणुव्रत पुरस्कार के साथ एक लाख रुपये देने की घोषणा की, इसे लेने से उन्होंने यह कह कर इंकार कर दिया कि अपरिग्रह अणुव्रत का अहम सिद्धांत है, तो इस पुरस्कार से जुड़े लाख रुपए के परिग्रह को मैं कैसे स्वीकार करूं।

दिल्ली विश्वविद्यालय और दिल्ली को उन्होंने छोड़ा, तब डॉ. कोठारी व श्रीमती कोठारी ने अपना जीवन दो सूटकेसों व दो बेगों में समेट लिया। इसके बाद जिस किसी ने उन्हें देखा हमेशा इतने ही समान में देखा। डॉ. दौलत सिंह कोठारी हमारे समाज के गौरव होकर जैन श्रावक थे, जिन्हें कोल्हापुर रोड़ के जैन स्थानक में मुख वस्त्रिका लगाकर समायिक करते हर किसी ने देखा है। उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर उनकी स्मृति में भारत सरकार द्वारा जारी किए डाक टिकट समारोह में देश के अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक आए, केन्द्रीय मंत्री आए, प्रदेशों के राज्यपाल और मुख्यमंत्री आए, दिल्ली विश्वविद्यालय के उपकुलपति व सर्वोच्च न्यायालय के न्यायधीश देश की शैक्षणिक, गाँधीवादी और अन्य संस्थाओं के शीर्षस्थ कार्यकर्त्ता आए, लेकिन अफसोस है कि वो समाज पर्याप्त संख्या में नहीं आया, जिसके वे सच्चे सपूत थे। शिक्षा, भाषा, मनीषी व भारत के महान रक्षा वैज्ञानिक सन 1983 में पंचतत्वों में विलीन होकर अरिहंत शरण में हो गए।

भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के विरले नक्षत्र देदिप्यमान, सरल सादगी के इस महापुरुष को उनके जन्म स्मृति दिवस पर जैन कॉन्फ्रेंस परिवार शत् शत् अभिनंदन व वंदन करता है। ✧✧

धर्म और व्यावहारिक जीवन अलग नहीं है, संन्यास लेना जीवन का परित्याग करना नहीं है, असली भावना सिर्फ अपने लिए काम करने की बजाये देश को अपना परिवार बना मिलजुल कर काम करना है। इसके बाद का कदम मानवता की सेवा करना है और अगला कदम ईश्वर की सेवा करना है।

चातुर्मास संस्कृति की अमूल्य धरोहर है

- नेमीचंद दलाल, बैंगलोर (कर्नाटक)

संत आए बसंत आयी। अनंतानन्त पुण्यवानी के उदय से संतों का सान्निध्य प्राप्त होता है और उससे भी अधिक पुण्यवानी के उदय से हमें संत-सतियों का चातुर्मास प्राप्त होता है। संतों के अध्यात्म एवं शुद्धता से अनुप्राणित आभामंडल समूचे वातावरण को शांति, ज्योति और आनंद के परमाणुओं से भर देता है। वे कर्म संस्कारों के रुप में चेतना पर परत-दर-परत जमी राख को भी हवा देते हैं। इससे जीवन-रुपी सारे रास्ते उजालों से भर जाते हैं। लोक चेतना शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनावों से मुक्त हो जाती है। भावनात्मक स्वास्थ्य उपलब्ध होता है।

संत धरती के कल्पवृक्ष होते है संस्कृति के प्रतीक, जीवन कला के मर्मज्ञ और ज्ञान के रत्नदीप होते हैं। उनके सान्निध्य में संस्कृति, परम्परा, धर्म और दर्शन का प्रशिक्षण लिया जा सकता है। उनका उपदेश किसी की ज्ञान चेतना को जगाता है तो किसी की विवेक चेतना को विकसित करता है। ठीक इसी तरह श्रावक भी संवदेनाओं एवं करुणाशीलता के फैलाव के लिये जागरुक बनते हैं। यह इस अवधि और इसकी साधना का ही प्रभाव है कि श्रावक की संवेदनशीलता इतनी गहरी और पवित्र हो जाती है कि वह अपने सुख की खोज में किसी को सुख से वंचित नहीं करता। किसी के प्रति अन्याय, अनीति और अत्याचार नहीं होने देता। यहां तक की वह हरे-भरे वृक्षों को भी नहीं काटता और पर्यावरण को दूषित करने से भी वह बचता है।

चातुर्मास का महत्त्व शांति और सौहार्द की स्थापना के साथ-साथ भौतिक उपलब्धियों के लिये भी महत्त्वपूर्ण माना गया है। इतिहास में ऐसे अनेक प्रसंग हैं, जहाँ चातुर्मास या वर्षावास और उनमें संतों की गहन साधना से अनेक चमत्कार घटित हुए हैं। यह अवधि जिसमें कुछ व्यक्ति सामूहिक रुप से ध्यान, साधना, तपोयोग या मंत्र अनुष्ठान करना चाहें, उनके लिये उपहार की भांति है। जिस क्षेत्र की स्थिति विषम हो, जनता विग्रह, अशांति, अराजकता या अत्याचारी शासक की क्रूरता की शिकार हो, उस समस्या के समाधान हेतु शांति और समता के प्रतीक साधु-साध्वियों का चातुर्मास वहां करवाया जाकर परिवर्तन को घटित होते हुए देखा गया है। क्योंकि संत वस्तुतः वही होता है जो औरों को शांति प्रदान करे। बाहर-भीतर के वातावरण को शांति से भर दे। जो स्वयं शांत रस में सराबोर रहता है तथा औरों के लिए सदा शांति का अमृत छलकाता रहता है। एक तरह से अध्यात्म एवं पवित्र गुणों से किसी क्षेत्र और उसके लोगों को लाभान्वित करने के लिये चातुर्मास एक स्वर्णिम अवसर है।

वर्षावास जैन परम्परा में साधना का विशेष अवसर माना जाता है। इसलिए इस काल में वे आत्मा से परमात्मा की ओर, वासना से उपासना की ओर, अहं से अर्हम् की ओर, आसक्ति से अनासक्ति की ओर, भोग से योग की ओर, हिंसा से अहिंसा की ओर, बाहर से भीतर की ओर आने का प्रयास करते हैं। वह क्षेत्र सौभाग्यशाली माना जाता है, जहाँ साधु-साध्वियों का चातुर्मास होता है। उनके अध्यात्म प्रवचन ज्ञान के स्रोत तथा जीवन के मंत्र सूत्र बन जाते हैं। उनके सान्निध्य का अर्थ है:- 'बाहरी'। ✧✧

जैन दिवाकर की आरतियों की महिमा

- डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई (तमिलनाडु)

जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज एक युगान्तरकारी मानवतावादी संत महापुरुष थे। पिछली सदी का पूर्वार्द्ध उनके अगणित बहुआयामी उपकारों से उपकृत है। जन जीवन को तनावों और बुराइयों से मुक्त करने के लिए उन्होंने तरह-तरह के उपाय किये। इन उपायों में एक उपाय है- मानव को भक्ति-योग से जोड़ देना। जैन संस्कृति में जप, स्तुति, कीर्तन आदि भक्ति योग के ही रुप हैं। जैन दिवाकर जी के समय में देश में **"ओम जय जगदीश हरे"** आरती तथा इस आरती की लय पर अन्य आरतियाँ खूब गाई जा रही थीं। तब से अब तक आरती की यह तर्ज भारतीय भक्ति-जगत में अपना स्थायी स्थान बनाए हुए हैं। मन्दिरों, धर्म-स्थलों और घरों में आज भी इस धुन पर कई प्रकार की आरतियाँ सुनने को मिल जाती है। संभवतः आरती की यह धुन भक्ति-काव्य की सर्वाधिक प्रचलित लोक-धुन है।

जैन परम्परा के इस लोकप्रिय श्रमणरत्न जैन दिवाकर के उपदेशों का प्रभाव जैन जैनेतर वर्ग में सर्वत्र व्याप्त था। उनकी ख्याति एक महान उपकारी लोक-सन्त के रुप में भी रही है। वे लोक-जीवन के पारखी थे तथा निपट साधारण आदमी से लेकर राजन्य व श्रेष्ठिवर्ग तक सभी वर्णों, जातियों और श्रेणियों के व्यक्ति उनके भक्त थे। उन्होंने अपनी धर्म-प्रचार शैली में अनेक प्रकार के प्रयोग किये। जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकरों पर तथा अन्य आरतियों की रचना उनकी प्रयोगधर्मिता का ही एक रुप है। वे अपनी धर्मसभाओं में भी सस्वर आरतियाँ गाते थे और श्रोता-समूह भी साथ गाता था, जिससे पूरा वातावरण भक्तिमय बन जाया करता था।

आवश्यक-सूत्र के दूसरे अध्ययन में चतुर्विंशतिस्तव आवश्यक के माध्यम से चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति का महत्त्व बताया गया है। मूल आगम उत्तराध्ययन-सूत्र (29/10) में भगवान से पूछा गया - **"चउव्वीसत्थएणं भंते! जीवे किं जणयई?"** हे भगवन्! चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति करने से जीव को क्या प्राप्त होता है? ईश्वरो उवाच- **"चउव्वीसत्थएणं दंसणविसोहिं जणयई।"** अर्थात् चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति करने से दर्शन-विशुद्धि की प्राप्ति होती है। दर्शन-विशुद्धि से श्रद्धा का परिमार्जन, सम्यक्त्व में पराक्रम, कष्टों को झेलने की शक्ति का विकास तथा तीर्थंकर भगवान जैसा बनने की पवित्र भावना अभिवर्द्धित होती है। इसीलिए चतुर्विंशति-स्तव को छः आवश्यकों में स्थान दिया गया है।

त्रिजगत के नाथ तीर्थंकर भगवान जन्म से तीन ज्ञान के धारी, दीक्षा लेने पर चार ज्ञानी तथा घाती कर्मों का क्षय करने पर केवलज्ञानी बन जाते हैं। देवाधिदेव तीर्थंकर प्रभु में अनेक विलक्षणताएँ होती हैं। जैसे वे 1008 लक्षण के धारक होते हैं। उनका रुप, बल, दान आदि सब अनुत्तर सर्वश्रेष्ठ होते हैं। उनके अष्ट महाप्रतिहार्य और 34 अतिशय होते हैं। उनकी वाणी 35 विशिष्ट गुणों वाली होती है। ऐसे तीर्थंकर भगवान की स्तुति-साधना से व्यक्तित्व विकास, आध्यात्मिक उन्नति और मनुष्य जीवन की सार्थकता का समावेश होता है। जैन दिवाकर जी ने आरती विधा के भक्ति-काव्य में तीर्थंकरों की स्तुति-रचना करके श्रावक-श्राविकाओं के लिए बहुत उपकार का कार्य किया। आरती के माध्यम से तीर्थंकर-स्तुति से जन-जीवन को दो स्तरों पर प्रत्यक्ष लाभ हुए:-

1. दीपक, अगरबत्ती, मूर्ति या तस्वीर के बिना भी आरती का पाठ करके भक्ति-रस में आसानी से डूबा जा सकता है। इससे भक्तजनों के लिए प्रभु की उपासना काफी आसान और सुविधाजनक हो गई।

2. ज्योतिर्विज्ञान के अनुसार मानव जीवन के साथ ग्रह-नक्षत्र के अच्छे-बुरे प्रभाव जुड़े रहते हैं। इन ज्योतिषीय मान्यताओं के आधार पर भारतीय जन-मानस ग्रहों के बुरे प्रभावों को उपशांत या क्षय करने के लिए तरह-तरह के उपाय करता आया है। कुछ उपाय आदमी को लंबे, थकाऊ और खर्चीले कर्मकाण्डों में भी उलझा देते हैं। जैन दिवाकरजी ने नौ ग्रह-पीड़ा नाशक आरतियों तथा सात वार की आरतियों की रचना करके निरापद समाधान प्रदान किया। चूंकि जैन दिवाकर जी एक पहुँचे हुए साधक थे, इसलिए उनके द्वारा रचित सरल भाषा की आरतियों में भी चमत्कारिक ऊर्जा भरी हुई है। इन आरतियों के भक्तिभाव से पाठ करने पर साधक को निश्चित ही लाभ होता है।

इनके अलावा जैन दिवाकर जी ने नवकार महामंत्र, श्रुतदेवी सरस्वती, गौतम स्वामी, आदि पर भी आरतियों की रचना की। आरतियों में उन्होंने प्रकट-अप्रकट मंत्र-शक्ति का समावेश भी किया। जैसे शारदा माता की आरती में उन्होंने आगम ग्रंथ व्याख्या-प्रज्ञप्ति के मंगलाचरण में से "**बंभीए लीविए**" पद ग्रहण करके उसे "ऊँ" के साथ समाविष्ट किया और कहा कि इसका नित्य पाठ करने से साधक विद्या में उत्तीर्ण बनता है और विद्वानों के बीच अपना स्थान पाता है। जो व्यक्ति या विद्यार्थी अपनी ज्ञान-साधना में आगे बढ़ना चाहते हैं, उनके लिए इस आरती की स्तुति तथा आरती में निर्देशित मंत्र का जप-ध्यान श्रेष्ठ परिणाम देने वाले सिद्ध होते हैं। यह अनेक साधकों ने अनुभव किया है।

इसी प्रकार अन्य आरतियों सम्बन्ध में भी समझना चाहिये। उनकी आरतियों में आत्म-शुद्धि, लोक-मंगल और वर्तमान जीवन की सुख-शांति की त्रिवेणी सतत् प्रवाहित हुई है। आरती की लय में स्तुति करते हुए भक्त अपने आराध्य से आसानी से जुड़ने की साधना कर सकता है। जैन दिवाकरजी के द्वारा रचित आरतियाँ भक्तिरस से भरे मंगल-कलश हैं। इसी वजह से ये आरतियाँ जन-जन में लोकप्रिय रही हैं। आरती-काव्य के अलावा भी जैन दिवाकरजी ने अनेक प्रचलित धुनों और रागों में सैकड़ों गीत, लोक-गीत, काव्य, चौबीसियाँ आदि रचे, जिन पर स्वतंत्र शोध-कार्य किया जा सकता है। ✧✧

जैन अल्पसंख्यक छात्रों के लिए आवश्यक सूचना

सभी जानते होंगे अभी नूतन विद्यार्थियों के स्कूल/कालेज में प्रवेश प्रक्रिया शुरु हो चुकी है। सभी माता-पिता ध्यान रखें नीचे दिये गये कुछ बातें:-

बच्चे के प्रवेश के वक्त बच्चों का दाखला (एल.सी.) बहुत ज़रुरी है। उसमें बच्चों की सम्पूर्ण महिती होती है।

सबसे पहले सभी जैन छात्रों के लिये उनके नाम के पहले जैन लगायें नाकि गौत्र।

उदाहरण के लिये छात्र का नाम - माता और पिता के नाम 'जैन' शब्द जुड़ा होना चाहिए।

- डॉ. प्रो. अशोककुमार एन पगारिया जैन

एक विराट व्यक्तित्व - आचार्यश्री जी

- प्रफुल्ल कुमार सी कोटेचा, मदुरांतकम (तमिलनाडु)

आज से 117 वर्ष पूर्व महाराष्ट्र की स्वर्ण धूली में एक अंकुर प्रस्फुटित हुआ। जिसकी महक से धरा महक उठी। वह अंकुर माँ हुलसा की ममतामयी गोद में सत् संस्कारों का सिंचन पाकर बढ़न लगा। उन संस्कारों ने बाल सुलभ चपलता के स्थान पर गंभीरता, बाल क्रीड़ा के स्थान पर अध्ययन-परायणता और चिंतन की प्रौढ़ता को जन्म दिया। गुरुदेव श्री रत्नऋषि जी म. की छत्रछाया में तथा उनकी वात्सल्यमयी दृष्टि में बाल मुनि आनंद संयम साधना और ज्ञानाराधना से अंतर जगत को प्रभावित करने लगा। अपने आराध्य को अपनी चिंता का परिधान पहनाकर स्वयं निश्चिंतता का जीवन जीने लगा। प्रखर-प्रतिभा, अथक श्रमशीलता और सतत जागरुकता से वात्सस्य की विशाल जलधारा में स्नान करने लगा। साधना के प्रथम चरण में भी प्रगति का अध्याय प्रारंभ हुआ।

प्रतिकूल परिस्थितियों में बालमुनि की प्रगति में बाधा बनने का प्रयास किया, किन्तु गंगा के निर्मल प्रवाह की तरह उनका व्यक्तित्व विस्तार पासा गया। बालमुनि की सतत जागरुकता के आगे बाल्यकाल को भी पराजित होना पड़ा। महामहिम युगपुरुष राष्ट्रसंत आचार्य आनंदऋषि जी म. की 117वीं जन्म जयंती पर श्रीमती चम्पाबाई प्रफुल्ल कुमार सौ. राजश्री, कु. जयश्री कोटेचा एवं समस्त कोटेचा परिवार की ओर से कोटिशः कोटिशः वंदन! वंदन!! वंदन!!!

आनंदघन, आनंद सरोवर, प्रतिपल ध्यानानंद
आत्मानंदी, आनंद बाबा, युग-युग से आनंद।
भक्त तारणी, करुणावाले, दुर्लभ कृपानिधान,
युक्ति मुक्ति शरण प्रदाता, साक्षात आनंद।।

आचार्यश्री जी का जीवन एक स्वयं उदाहरण है। वे जैसा सोचते थे, वैसा ही करते थे। कथनी व करनी में काई फर्क नहीं था। उनकी वाणी व चरित्र में एकता थी। महत्त्वाकांक्षा के पंक में भी वे कमल की तरह निर्लिप्त थे। सभी के प्रति उनके मानस में समभाव व प्रेम की भावना थी। उनके सम्पूर्ण प्रयासों के पीछे एक ही लक्ष्य रहा कि समाज संगठित हो, विकसित हो। उन्होंने समाज से दुर्गुण उपहार में मांगे, धन, वैभव नहीं चाहा। विपदा मांगी, सम्पदा की आस कभी नहीं की। उन्होंने जन-जन की व्यथा को समझा। यह भी सत्य है कि उनके चरणों में पहुंचने पर व्यथा के बिन्दु ठीक उसी तरह नष्ट हो जाते थे जिस तरह सूर्य के उदित होते ही अंधकार मिट जाता है। चाहे परिचित हो या अपरिचित, धनवान हो या निर्धन किसी भी जाति का हो, उनके हृदय में कोई भेद नहीं था। उनकी प्रफुल्लित वाणी की महक फूलों की भांति होती थी। उनके दर्शन के लिए अपार जन सागर श्रद्धा व प्रेम की तरंगों के साथ उमड़ता था। आचार्यश्री का ज्योर्तिमय व्यक्तित्व सभी के लिये श्रद्धा केन्द्र था। मार्धुय भरी वाणी के स्वामी श्रृद्धा के केन्द्र आनंद बाबा ने अपने जीवन में कभी कटु व तीक्ष्ण भाषा का उपयोग नहीं किया। महामहिम आचार्य भगवंत सर्वगुण सम्पन्न थे। विद्वता के साथ-साथ धैर्य, गंभीरता, सरलता, सहिष्णुता, उदारता, मृदुता, वात्सल्यभाव, करुणा, दया आदि अनेक गुण उनकं सहज ही विद्यमान थे।

"ज्ञान एवं ध्यान साधना में लीन रहे आप,
निशा के जगमगाते, दीप हो आप।
तीर्थंकरों द्वारा निर्मित राह पे चलने वाले,
आनंद ऋषिवर महान हो आप।।"

आचार्यश्री जी ने जीवन में बहुत काम किए। कई संस्थाओं का निर्माण किया, हजारों प्रवचन दिए, पर सबसे बड़ा कोई कार्य उनका था तो वह है हर व्यक्ति को आनंद प्रदान करना। किसी को भी उन्होंने अपने आचरण से, अपने व्यवहार से दुःखी नहीं किया। यह सबसे कठिन काम है। लोग छोटी-छोटी बातों में एक दूसरे को दुःखी कर देते हैं, अपमानित करते हैं। इससे बड़ा कार्य क्या होगा कि उनके पास आने वाला हर व्यक्ति आनंदित होता था। इससे बढ़कर साधना क्या हो सकती है? जहाँ चरण पड़े लोग आनंदित हुए। जिन पर दृष्टि पड़ी वे आनंदित हुए। प्रफुल्ल की तरफ देखा तो वो प्रफुल्लित हो गया। जिनको मुस्कान मिली उनके मन आनंदित हुए। उनका हर कर्म आनंद प्रदान करने वाला था।

वे जनता के लिए आनंद बाबा बन गए थे। आचार्यश्री जीवन के अरुणोदय से ही संगठन के प्रबल समर्थक थे। आपश्री के स्पष्ट विचार रहे कि **'संगठन जीवन है, विघटन मृत्यु'**। जैन एकता के संदर्भ में आपश्री के हृदय में अपार पीड़ा थी। आप सदा जैन एकता के लिए प्रफुल्लित मन से सतत प्रयत्नशील रहे।

आई रे आई जन्म जयंती, मिलकर आज मनाना,
मन की आशा ही हमारी, गुरु जैसे बन जाना,
चाँद की तरह शीतल से थे, आनंद गुरु गुणधारी,
वीरप्रभु के बने पुजारी, पंच महाव्रतधारी,
जिनवाणी को गूंजा के जग में, लिया प्रभु का शरणा,
मन की आशा यही हमारी, गुरु जैसे बन जाना।।

पूज्य गुरुवर शुरू से ही मित-हितभाषी रहे हैं। वे हमेशा फ़रमाते थे, हे जीवन साधक! अपनी वाणी पर संयम रखो, नियंत्रण रखो। मनुष्य के कुल की, ज्ञान की परीक्षा उसके शब्द प्रयोग से, वाणी से होती है। जैसे थाली में पकाये जाने वाले चावलों की परीक्षा एक कण से ही हो जाती है। अतः वाणी का संयम रखो। तुम शब्दों को जितना संभालकर उपयोग करोगे, उतनी ही तुम्हारे शब्दों की ज्यादा कीमत होगी। शब्द-शक्ति का जितना अपव्यय करोगे, शब्द की कीमत घट जायेगी। इसके लिए वे प्रायः सोने और लोहे का दृष्टांत देते हैं सोना देते समय रत्ती भर भी कम या ज्यादा नहीं दिया जाता, इसके विपरीत लोहा आधा पावर कम ज्यादा हो जाए तो कोई फर्क नहीं पड़ता। वैसे ही तोल कर बोला गया शब्द वजनदार और कीमती होता है। इसी मित, हित भाषिता के कारण आज ज्ञानाराधना कर पू. गुरुदेव हम सभी के आराध्य बने हुए है। पू. गुरुदेव की स्मरण शक्ति अत्यंत प्रखर एवं निर्मल थी।

यह उनकी कठोर संयम-साधना का ही परिणाम था। नब्बे वर्ष की उम्र में भी उनकी स्मृति उतनी ही युवा थी, जितनी युवावस्था में। तब भी वे सिर्फ शब्द और स्पर्श के माध्यम से ही व्यक्ति को तुरंत पहचान लेते थे। वर्षों पूर्व कंठस्थ किये हुए सैंकड़ों भजन हज़ारों श्लोक, आगमवाणी और उर्दू फारसी के सुवाक्य उनकी स्मृति में ताजे थे।

गुरु तेरे दर्शन से नूर मिलता है,
गमे दिल को सुरुर मिलता है,
जब भी झुका सिर तेरे चरणों में
'प्रफुल्ल' को सारे जहाँ आनंद मिलता है।।
हो जन्म आपका बार-बार,
ये युग प्रवर्तक तुम्हें प्रणाम!
हे युगाधार! तुम युगदृष्टा, हे धर्मावतार,
तुम धर्माधार, करके जगत में धर्मप्रचार,
दूर किया सब अंधकार।
दीनों से कर अमित प्यार, दिया विश्व को धर्मसार।
हे दीनबंधु करुणावतार, हमने जग का अंधकार,
हो जन्म आपका बार-बार,
हे आनंदबाबा नमन है प्रफुल्ल का
कोटि कोटि बार।।

✧✧

चार्तुमास को ऐतिहासिक बनाने से पहले आध्यात्मिक बनाएँ

- सुमेर सिंह मुणोत, बैंगलोर (कर्णाटक)

जैन धर्म में चार्तुमास का महत्त्व अत्याधिक गहरा एवं महत्त्वपूर्ण है। इन चार महीनों में जैन धर्म के अनुयायी जप,तप, सामाजिक, प्रतिक्रमण व अन्य धर्म आराधना के माध्यम से आत्म शुद्धि व कर्म निर्जरा करते हुए आत्म-सिद्धि प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। चार्तुमास आत्मा को सात्विक खुराक दने का मौसम है तथा स्व-कल्याण का सुनहरा अवसर प्रदान करता है। चार्तुमास अज्ञान के अंधेरे को हटाकर जीवन में नयी रोशनी लाने का सोपान है। चार्तुमास अंहिसा तथा अपरिग्रह का मार्ग प्रशस्त करता है, जीवन को अंतकरण से पर्यवलोकन करने का सुअवसर प्रदान करता है। वर्षावास अनुशासन, साधना, संयम एवं आत्म-उन्नति का पर्व है जिसमें संस्कार, संस्कृति तथा सदाचार के पालन का विशेष ध्यान दिया जाता है। आचार संहिता एवं समाचारी पालन हेतु जैन धर्म के सभी संत-सतियाँ विचरण न करते हुए चार महीने एक ही स्थान पर स्थिरता करते हैं तथा भगवान के सिद्धातों को अपनी अमृतमय वाणी से अध्यात्म चेतना जगाने का प्रयास करते हैं तथा स्वयं भी धर्म आराधना एवं धर्मोपासन करते हैं। वर्षावास में संत-सतियों के प्रोत्साहन व प्रेरणा से अनेक रचनात्मक, आध्यात्मिक, सामाजिक, मानव सेवा व तथा जीवदया के कार्य सम्पन्न होते हैं एवं त्याग की भावना जागृत होती है।

चार्तुमास में प्रत्येक जैनी को चिंतन करना चाहिए कि इन चार महीनों में उसकी क्या उपलब्धी रही, जीवन में कितना परिवर्तन आया, मन में पनप रहे राग-द्वेष को बाहर का रास्ता बताया या अब भी अंदर वास कर रहा है। मन की गांठें खोलकर क्षमायाचना की या नहीं, जीव के कषायों के पाश से मुक्त होने का प्रयास किया या नहीं। अपने दैनिक कृत-कारित दोषों को स्मरण कर पुनः न दोहराने की भावना, जगी या नहीं, जीव दया, मानव सेवा, व स्वधर्मी की सेवा कार्य किये या नहीं आदि अनेक सवाल खड़े होते हैं। अगर जवाब सकारात्मक है तो चार्तुमास सफल व आध यात्मिक रहा तथा गुरु भगवंतों के प्रयास सफल रहे, अन्यथा जीवन के अमूलम चार महीने व्यर्थ गवां दिये। आज सारे विश्व में जैन धर्म की श्रेष्ठता सदियों से है, जैन शब्द में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है क्योंकि इसमें उपासना, तप और त्याग की भावना के साथ-साथ चारित्र व आचारण के पालन को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है। लेकिन आज विषमता, यह कि हमारे चारित्र व आचरण में धर्म नहीं बोल रहा है बल्कि हम भौतिकता की चकाचौंध में भटक रहे हैं, अज्ञानी बनते जा रहे हैं। सारा समाज पैसा, पद, प्रतिष्ठा के पीछे अविवेकी बन रहा है। परिणाम स्वरुप वर्तमान के अनेक चातुर्मास प्रदर्शन व प्रतिष्ठा के विषय बनते जा रहे हैं तथा चर्तुविध संघ के आपसी मनमुटाव, ईर्ष्या, कड़वाहट तथा वैमनस्यता के कारण चार्तुमास की प्रांसगिकता को निरर्थक बना दिया है, मूल लक्ष्य से भटक रहे है, करनी-कथनी में ज़मीन, आसमान का अंतराल आ रहा है। धार्मिक व सामाजिक दूरियाँ बढ़ रही है, पारिवारिक संबध विच्छेद हो रहे हैं। एकता की जगह वैमनस्यता की दीवारें खड़ी हो रही है। आये दिन समाज टुकड़ों में बंटकर एक दूसरे को नीचा दिखाने में अपनी ताकत लगा रहा है, जिसके परिणाम भविष्य में घातम सिद्ध हो सकते हैं। यह जैनियों की विडम्बना है कि भगवान महावीर के सिद्धांतों के विपरीत सभी कार्य हो रहे हैं।

अनेक संघ जिनके तत्वावधान में चार्तुमास सम्पन्न होते है, यह कहते नहीं थकते कि उनका चार्तुमास ऐतिहासिक रहा, लेकिन किसी के मुंह से यह सुनने को नहीं मिलता कि चार्तुमास आध्यात्मिक रहा। अगर उनसे पूछे कि ऐतिहासिक चार्तुमास का मापदण्ड क्या है तो जवाब मिलेगा कि चातुर्मास में स्वर्गस्थ गुरुओं की जन्म जयंतियाँ बहुत धूम-धाम से मनाई, आठ पेज की पत्रिका छपवाई सैंकड़ों दर्शनार्थियों का हवाई जहाज से आवागमन रहा। उनके ठहरने की सुन्दर व्यवस्था होटलों में रखी, शाल-मालाओं से उनका सत्कार-सम्मान किया, अनेक अवसरों पर लुभावनी प्रभावनाएँ वितरित की गई। बहुत से वीआईपी

मंत्री आये, चार महीने भी अनेक व्यजंनों के साथ गौतम प्रसादी का आयोजन रहा इत्यादि यानि ऐतिहासिक चार्तुमास का मापदंड सिर्फ आंकडे बनाने में ही सीमित रह गया। अंत में आय - व्यय का हिसाब लगाया तो पता चला कि खर्चा लाखों करोड़ों का हो गया। क्या जितना महंगा चार्तुमास उतना ही उसे ऐतिहासिक माना जाये? चार्तुमास में कितनों ने सामायिक, प्रतिक्रमण सीखा, कितनी तप आराधना हुई, कितने मानव सेवा कार्य हुए, आर्थिक कमजोर स्वधर्मी भाई-बहनों के परिवार की कितनी मदद की आदि आदि आँकड़े तो गौण हो गये। मात्र मेला बनकर रह जाना ही चातुर्मास का लक्ष्य हो गया।

मेरा विरोधाभास जन्म-जयंतियाँ मनाने से नहीं है बल्कि उनके तौर-तरीकों से हैं। एक ही गुरु की जयंती विभिन्न संघ अपनी सुविधानुसार जन्म-तिथि बदलकर मनाते हैं जो उचित नहीं है। इन आयोजना में सिर्फ भाषणबाज़ी होती है और अभिनंदन की आड़ में शाल-मालाओं का दौर चलता है। जब संत-सतियों के प्रवचन का समय आता है तब तक आधी से ज्यादा जनता गौतम प्रसादी का जायका लेती रहती है। इस तरह के आयोजनों में प्रतिस्पर्धा, सम्प्रदायवाद, व्यामोह, स्वार्थ-सिद्धि, आडम्बर आदि की बू नज़र आती है। चातुर्मास के पश्चात आपसी समन्वय एवं एकता के स्थान पर वैमनस्य की ऐसी खाईयाँ व दीवारें खड़ी हो जाती हैं कि संघ-समाज टुकड़ों में बंटकर एक दूसरे को नीचा दिखाने में अपनी शक्ति सामर्थ्य को झोंक देता है। सादगी, सरलता त्याग, धर्म आराधना तो जैसे धर्म की जाजम, से विदाई ले चुकी है। आपसी परिवारिक दूरियाँ भी बढ़ती नज़र आती है। श्रद्धा, भक्ति, विवेक तथा क्रियाओं का अभाव हो गया है। गुरु भगवंतों की जन्म जयंतियाँ मनाना तभी सार्थक होगा। जब मानव सेवा व जीवदया के उत्कृष्ट कार्य होंगे। फिजूलखर्च व आडम्बर पर अंकुश लगाकर सधर्मी बंधुओं को आजीविका देकर उनको पैरों पर खड़ा करना, उनको शिक्षा, चिकित्सा व दो वक्त की रोटी, मुहैय्या कराना, जिनके सिर पर छत्त नहीं, उन्हें उपलब्ध कराना, उनके परिजनों में खुशियाँ भरना, उन्हें मर्यादापूर्ण जीवन जीने का अधिकार दिलाना ही गुरु की जन्म जयंती मनाने का लक्ष होना चाहिए। स्वयं संत-सतियां चार्तुमास में विचरण नहीं करते, एक ही स्थान पर स्थिर रहते है, लेकिन अपने भक्तों को निमंत्रण देकर दूर-दूर से बुलाना तो करनी कथनी में फर्क दर्शाता है। चर्तुविध संघ को अपनी सोच बदलने की आवश्यकता है और इसमें साधु-साध्वी अहम भूमिका निभा सकते हैं, सहयोग कर सकते हैं, आडम्बर व फिजूल खर्ची को रोकने का प्रयास कर सकते हैं, एक आदर्श स्थापित कर सकते हैं। समयानुसार कुछ ठोस निर्णय लेने पड़े तो भी उन्हें पीछे नहीं हठना चाहिए। गुरु को आदेश की अवहेलना कोई भी श्रावक नहीं करेगा। समय रहते सुधरने के प्रयास नहीं किये तो चार्तुमास सिर्फ जन्म-जयंतियों में सीमट कर रह जायेंगे। हमारी सोच, हमारा चिंतन सकारात्मक कम और नकारात्मक अधिक हो गया है। हमारे शरीर के जितने रोग नहीं उससे कहीं ज्यादा रोग हमने अपने मन में पाल रखे हैं। धर्मस्थान, राजनीति के अड्डे बनते जा रहे हैं। धर्म पर धन हावी होता जा रहा है। धर्म धनाड्य लोगों के हाथों में खिसकता जा रहा है, कौन कितना ज्यादा देता है, वही अग्रणी पंक्ति में आकर बैठता है। उसका व्यक्तित्व कार्य, धर्म आचरण कोई माईने नहीं रखता हैं आज मानव जी रहा है मानवता मर रही है। चार्तुमास हमें स्वर्णिम अवसर प्रदान करता है कि हम अच्छे और सच्चे श्रावक बनकर श्रमण बने। चार्तुमास में आत्म-चिंतन करते हुए कर्मों की निर्जरा करना, अध यात्म चेतना जगाना, जीवन का अंत करण से पर्यवलोकन, करना, जीवन को मांजना ही प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए। चार्तुमास तो संदकर्मों की ओेर जीवन को मोड़ने तथा अंर्तरात्मा को तराशने का संदेश देता है। चार्तुमास अनुशासन, साधना, संयम का पर्व है, जिसमें प्रेरणा मिलती है कि हम धार्मिक गतिविधियों में तल्लीन रहकर आत्मिक सुख पाने का प्रयास करें और अपने जीवन को सरल व मोक्षगामी बनायें। चातुर्मास का मात्र उद्देश्य ज्ञान-दर्शन चारित्र में अभिवृद्धि करना है। त्याग-तप की भावना, जागृत करनी है एवं युवा पीढ़ी में धर्म के संस्कार बढ़ाना है। चार्तुमास को ऐतिहासिक बनाने से पहले आध्यात्मिक बनाना जरूरी है। जिणाज्ञा के विरुद्ध कुछ लिखने में आया हो, किसी की अंर्तात्मा को ठेस पहुंची हो तो मैं क्षमापार्थी हूं।

✧✧

अल्पसंख्यक जैन समाज बनाएँ बहुउद्देशीय विद्यालय परिसर

- डॉ. एस. कृष्णचंद चोरडिया, चेन्नई (तमिलनाडु)

जैन धर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म है। इसके बावजूद वर्तमान समय में जैन धर्मावलंबियों की संख्या बहुत ही कम है। भारत के संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार जैन समाज की लम्बे समय से धार्मिक अल्पसंख्यक के रुप में मान्यता की मांग की जा रही थी, जो अंततः जनवरी, 2014 में पूरी हुई। भारत सरकार के राजपत्र में 27/1/2014 को प्रकाशित अधिसूचना क्रमांक 2171 के अनुसार जैन समाज को राष्ट्रीय स्तर पर धार्मिक अल्पसंख्यक की मान्यता मिली। अल्पसंख्यक की मान्यता तो मिली, लेकिन जैन समाज में अल्पसंख्यक से जुड़े हितों और सुविधाओं के प्रति पर्याप्त जागृति नही हुई।

जैनों को अल्पसंख्यक की मान्यता कोई आरक्षण नहीं है। यह एक संवैधानिक हक और हक़ीकत है। उदाहरण के तौर पर देश की आजादी के साथ ही इसाई समुदाय का धार्मिक अल्पसंख्यक की मान्यता दी गई। इसाई समुदाय ने इस मान्यता का पूरा लाभ उठाया। सरकारी सहायता से स्थान-स्थान पर विद्यालयों की स्थापना की। विद्यालयों के संचालन से उन्हें शिक्षा के प्रचार-प्रसार में योगदान का श्रेय मिला तथा वे समाज के साथ जुड़े रहे। इससे भी बड़ी बात यह है कि विद्यालयों का संचालन कभी भी भारभूत नहीं हुआ, अपितु आदमनी का जरिया बना। इसी आमदनी से, समाज व सरकार के सहयोग से वे अपने विद्यालयों की शृंखला को बहुगुणित करते गये। देशभर में बड़े-बड़े कैम्पस में उनके द्वारा संचालित बड़े-बड़े विद्यालयों से हम प्रेरणा ले सकते हैं।

भारत में जैन धर्म की अत्यंत समृद्ध विरासत रही है। जैन इतिहास के अनुसार किसी समय यह समाज ज्ञान-ध्यान के साथ ही शिक्षा में भी अग्रणी था। बड़े-बड़े शिक्षण संस्थान और विश्वविद्यालय जैनों के द्वारा संचालित किये गये थे। लेकिन बाद में शायद जैन समुदाय अपनी अनमोल धरोहर के प्रति बेफिक्र हो गया। जैनों को अल्पसंख्यक की संवैधानिक मान्यता हमें बहुत कुछ करने की प्रबल प्रेरणाएं देती हैं। यदि जैन समाज के संघ और संगठन बहुउद्देश्यीय विद्यालय निर्माण पर ध्यान दें तो काफी कार्य हो सकता है। जैन समाज एक आडम्बरमुक्त वैज्ञानिक धर्म है। साधना के क्षेत्र में ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप और स्वाध्याय, सामायिक पर यह धर्म जोर देता है। इसमें साधु-साध्वियों को चलते-फिरते तीर्थ माना जाता है। जैन धर्म व समाज को सुदृढ़ बनाने के लिए जैनविद्या का विकास, विद्यालय की स्थापना तथा विद्यालयों के साथ उपाश्रयों, साधना केन्द्रों, स्थानक-भवनों और जिनालयों का निर्माण समय की आवश्यकता है और मांग भी इस संबंध में कुछ सुझाव हैः-

1. एक ऐसी परियोजना तैयार की जाए जिसके तहत देश के प्रमुख क्षेत्रों में हर 50 किलोमीटर की दूरी पर विद्यालय परिसरों का निर्माण किया जाए। विद्यालय परिसर में आवासीय सुविधा अथवा छात्रावास की सुविधा भी रखी जाए।
2. विद्यालय के साथ ही उपाश्रय, स्थानक या साधना केन्द्र भी बने, जहां साधु-साध्वियों के अलावा सेवाभावी, सेवानिवृत्त और बुजुर्ग श्रावक-श्राविकाएं अपने जीवन की सांध्य वेला को साधनामय बना सके। आवासीय विद्यालय या छात्रावास मे रहने वाले विद्यार्थियों के साथ जुड़ी भोजन व्यवस्था से वहाँ प्रवास करने वाले साधु-साध्वी और बुजुर्ग श्रावक-श्राविकाएं भी जुड़ जाएंगे।
3. साधु-साध्वियों और अपने ही परिवार से उपेक्षित श्रावक श्राविकाओं की सांध्य वेला को साधनामय

और समतामय बनाने के लिए इस प्रकार की व्यवस्था से समाज को एक समाधान मिलेगा। विद्यार्थियों को संस्कार मिलेंगे तो निवृत्त साधकों को सम्मानपूर्ण पारिवारिक वातावरण मिलेगा।

4. विद्यालय समय और समाज की आवश्यंकता है। विद्यालय बनने से आमदनी होगी, अपने स्वधर्मी बंधुओं और बहिनों को रोजगार मिलेगा। नई पीढ़ी में अहिंसा शाकाहार और अपनी संस्कृति के श्रेष्ठ संस्कारों का बीज़ारोपण हो सकेगा। विद्यालय की अतिरिक्त आदमनी से उपाश्रय/स्थानक से जुड़े खर्चों को आसानी से वहन किया जा सकेगा। इसी आमदनी में से जैनविद्या से विकास को भी नई ऊंचाईयाँ दी जा सकेगी।

5. शुरुआती दौर में कुछ प्रमुख क्षेत्रों में विद्यालय जिनालय उपाश्रय परिसर का क्रमशः सभी क्षेत्रों में विस्तार करना। पहले 100 कि.मी. की दूरी पर निर्मित विद्यालय जिनालय उपाश्रय परियोजना को क्रमश 50 कि.मी. की दूरी में लागू करना। बहुउद्देशीय विद्यालयों के परिसरों में उपयुक्त वाहन और चिकित्सा का प्रबंध भी आवश्यक है। वाहन के लिये एक चालक और एक अन्य कर्मचारी की हो। संतों के साथ होने वाली सड़क दुर्घटनाओं से बचाने और सुरक्षित विहार के लिए भी इन वाहनों का उपयोग किया जा सकता है।

7. चेन्नई में पूझल क्षेत्र में रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलॉजी के अंतर्गत 12एकड़ के विस्तृत परिसर में जैन विद्याश्रम, (सीनियर सेकैण्ड्री विद्यालय) संचालित है। इस विद्यालय की आमदनी से जैन विद्या के विकास, अध्ययन व अनुसंधान की अनेक गतिविधियां आसानी से संचालित की जा रही है।

8. जैन विद्याश्रम के साथ जैन भोजनशाला भी संचालित है। इस भोजनशाला का लाभ सभी को मिलता है। कभी किसी कारण से घर से भोजन नहीं लाने वाले शिक्षक और विद्यार्थी भी भोजनशाला में अपना भोजन कर सकते हैं। आने वाले अतिथियों के लिए भोजनशाला के द्वार हमेशा खुले रहते हैं। कभी किसी संगोष्ठी या आयोजन के लिए चलती हुई भोजनशाला का लाभ तुरंत मिल जाता है।

9. एक उदाहरण है पू. श्री चन्दना जी म. का जिन्होंने जहां जिनालय, वहां विद्यालय की योजना के अंतर्गत जैन मंदिरो के साथ विद्यालय बनाने का अभियान चलाया है। उनका यह अभियान अनेक जैन मन्दिरों के साथ साकार होता हुआ समाज को लाभान्वित कर रहा है। समाज में शिक्षा और सदभाव की रोशनी फैला रहा है।

10. जहां जिनालय, वहां विद्यालय योजना गतिमान है। वैसे ही विद्यालय के साथ जिनालय क योजना भी जोड़ी जानी चाहिए। विद्यालय के विस्तृत परिसर में उपाश्रय या स्थानक के साथ ही जैन मन्दिर भी होने से श्रद्धा और संस्कृति को नया आयाम मिल सकेगी। विद्यालय के अलावा अकादमिक संस्थाओं के साथ भी जिनालय के दो उदाहरण समीचीन होंगे। जयपुर, राजस्थान में प्राकृत भारती अकादमी तथा शाजापुर, मध्य प्रदेश में प्राच्य विद्यापीठ के परिसर में जिनालय बने हुए हैं।

11. जैन समाज द्वारा संचालित हर विद्यालय और शिक्षण संस्था में किसी न किसी रुप में जैन शिक्षण या जैन विद्यालय के अध्ययन की व्यवस्था भी होनी चाहिए।

जैन धर्म और समाज के हितार्थ इस प्रकार की व्यवस्थाओं और शिक्षण संस्थाओं को स्थापित करने तथा संचालित करने के लिए अल्पसंख्यक कोटे के तहत सरकारी मदद का प्रावधान है, जिसका लाभ जैन समाज को उठाना चाहिए। ये बहुउद्देशीय विद्यालय परिसर अपनी गुणवत्ता और कुशल प्रबंधन के जरिय आत्म-निर्भर बनते हुए देश और समाज की सेवा में अधिक प्रभावी और व्यापक योगदान कर सकेंगे। ✧✧

रत्नललाम के अनमोल रत्न

- एस. सी. कटारिया, रतलाम (मध्य प्रदेश)

मालव भूमि आर्यावृत भारतवर्ष की पवित्र हृदय स्थली होकर ऋषि परम्परा वाला एक धर्मनिष्ठ, सुसंस्कृति से परिपूर्ण महान देश रहा है। जहाँ हर युग, हर काल में धर्म की ध्वजा ऊंची रही। महापुरुषों के तप-त्याग ने विश्व में इसे मान सम्मान दिलाया हैं इसी गौरवशाली परम्परा से जुड़े जैन धर्म में अनेक ऐसे संत मनीषी हुए जिन्होंने विश्व को सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया, परोपकार का पावन संदेश दिया। जैन श्रमणों की इन पावन शृंखला में कवि कुलभूषण पूज्यमना श्री तिलोक ऋषि जी म. का नाम एक चमकीले नक्षत्र के रुप में आज भी दैदीप्यमान है। मालवा की रतनपुरी के सुराणा परिवार में जन्मे इस लाल ने अपनी अल्प आयु में ही जैन धर्म को गौरवान्वित कर कुल परिवार तथा नगर को धन्य किया। **'रतनपुरी का रुखड़ा भला बताया राम, भूखों ने भोजन मिले धाप्या ने विश्राम'** मालवा की शस्य श्यामला धरती जो अपनी डग-डग रोटी पग-पग नीर की उक्ति के लिए प्रसिद्ध है, वीर भोग्या वसुंधरा माँ भारती के माटी, धर्म साहित्य और कला धरा जैसे महिमा वत्र पवित्र भू-भाग ग में स्थित रत्नललाम पर विक्रम सं. 1904 की चैत्र कृष्ण तीज़ बुधवार (1847) को धार्मिक पारमार्थिक संस्थाओं को संरक्षण देने वाले सुसंस्कृत सुश्रावक पिता श्री दुलीचंद जी सुराणा के घर पर माता नानू बाई की पावन कुक्षि (कोख) से पूज्यवाद चरित्र नायक का जन्म हुआ।

रतनपुरी के अनमोल रत्न, रतलाम की माटी के गौरव ने अपनी विद्वता विराट शालित्व काव्य और कला की प्रतिभा से जन जीवन तथा धार्मिक जगत को अचंभित कराने वाले युग ऋषि महापुरुष पूज्यपाद ने अल्पायु में सत्तर हजार श्लोकों की काव्य रचना कर ड़ाली। हमारे प्रतिक्रमण में जो पांच पदों की सवैया है। वह आप द्वारा ही रहित हैं।

आपके छंद व श्लोक कॉफी प्रसिद्ध है। आचार्य सम्राट पू. श्री गुरु भगवान श्री आनंदऋषि म. के आप दादा गुरु थे। आचार्यश्री का इन छंदों पर बड़ा विश्वास था, उनका नियम था जब तक छंद पद नहीं गाते तब तब वह विहार नहीं करते थे। पूज्य प्रवर एक उच्च कोटी के विद्वान कवि व आगम ज्ञाता ही नहीं बल्कि कुशल शिल्पी चित्रकार भी थे, वे अपने दोनों हाथों एवं पैरों से लिखने चित्र बनाने में सिद्ध महापुरुष थे। आपने जैन आगम शास्त्र, सिद्धांत और तत्व ज्ञान पर आधारित कई चित्र बनाए। मात्र पच्चीस वर्ष छः माह के संयम जीवन में उन्होंने विलक्षण ज्ञान लेखन प्रवचनों आदि से जिन शासन की प्रचुर प्रभावना की। महाराष्ट्र में जैन धर्म की अलख जगाने वालों में वे प्रथम स्थानकवासी ऋषि मुनिराज थे। अहमदनगर में पूज्यपाद श्री तिलोकऋषि जी के पधारने का अवसर बना, उनके पदार्पण की सूचना एक सुश्रावक ने वहां की धर्मनिष्ठ सुश्राविका को दी, वह श्राविका इस शुभ समाचार से इतनी हर्षोत्फुल्ल हुई कि उसने समाचार दाता को अपना स्वर्णकंकण भेंट कर दिया।

यह घटना पू. श्री तिलोकऋषि जी के विमल यश और विपुल प्रभाव का प्रमाण प्रस्तुत करती है। जैन धर्म के इतिहास में उत्कृष्ट त्याग और साहस के ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिसमें माता-पिता, पुत्र और पूरे परिवार ही संयम के कठिन मार्ग पर सरलता से अग्रसर हुए हैं। वर्तमान में भी ऐसे प्रसंगों को सुन देख

लोक चकित हो जाते हैं और धर्म की वैकालिक महत्ता के प्रति श्रद्धावत भी वैसे ही श्रद्धा और अचरज पू.श्री तिलोकऋषि जी और उनके परिवार के दीक्षा के निर्णय पर उस समय हुआ था। वि.स. 1914 को माघ कृष्णा प्रतिवदा गुरुवार को गुरु प्रवर पू.श्री अयवंता म. माता पुत्री और दोनों ने जैन आर्हती दीक्षा अंगीकार कर ली। उस समय तिलोक ऋषि जी म. की लघु वय नौ वर्ष दस माह थी। बहुमुखी प्रतिभा के धनी ऐसे विलक्षण मुनिराज के जीवन पर काव्य साहित्य और कलावृत्तियों पर शोध प्रबंध लिखे जा सकते हैं। पू. गणेश मुनि जी के शब्दों में आपके द्वारा निर्मित चित्र इतिहास की महत्त्व को प्रदर्शित करते हैं।

उनकी पुनीत स्मृति मे स्थापित श्री तिलोक रत्न स्थानकवसी जैन परीक्षा बोर्ड पाथर्डी के माध्यम से देश भर में जैन तत्व, ज्ञान, सिद्धांतों का सघन और व्यापक प्रचार हो रहा है। जैन जगत के ज्योतिर्धर संत साधक रतलाम नगर के गौरव सुराणा कुल दीपक ऐसे महिमावंत यशस्वी मुनिश्वर पू. श्री तिलोकऋषि जी म. 36 वर्ष की अल्पायु में वि.स. 1940 (सन् 1883) में महाप्रयाण कर अहमदनगर (महाराष्ट्र में अरिहंत शरणागम हो गए। गुरु प्रवर श्री के देवलोक गमन के सामचार सुनकर हुक्मगच्छ के आचार्य पू. श्री उदय सागर जी म. ने कहा कि **'आज स्थानकवासी जैन समाज का सूर्य अस्त हो गया'।** स्वामी विवेकानंद के समकक्ष माने गऐ रत्नत्रय के आरोधक, गुणालवृत मुनिश्वर पूज्य-पाद श्री तिलोकऋषि जी म. की पवित्र पावन स्मृति को आत्मीय श्रद्धार्चन करते हुए शत-शत वंदन नमन्। ✧✧

।।निंदा और प्रशंसा।।

एक महात्मा का एक भक्त अनेक वर्षों से उनकी सेवा टहल करता आ रहा था। वह महात्मा के गुणगान करते कभी थकता तक नहीं था, लेकिन एक दिन महात्मा जी की कोई बात उस भक्त को चुभ गई। उस दिन के बाद वह महात्मा जी का प्रबल विरोधी बन गया।

जो पहले दिन-रात उनकी महिमा गाता फिरता था अब हर वक्त उन महात्मा जी की निंदा करने लगा था। यही नहीं बल्कि वह महात्मा जी को बदनाम करने का कोई भी मौका हाथ से जाने नहीं देता था। निंदा की ये बातें महात्मा जी के कानों तक भी पहुंची, परन्तु वे शांत रहे।

इस पर आश्चर्य जताते हुए उनके एक अन्य शिष्य ने उनसे पूछा - भगवन् कल तक तो वह आपकी भक्ति किया करता था। अब वह आपका परम शत्रु बन गया है और आपकी घोर निंदा करता फिरता है। आप उसकी गलत बातों का खंडन क्यों नहीं करते हैं?

महात्मा जी ने बात को हँस कर टालते हुए कहा कि- देखो जैसे प्रशंसा शाश्वत नहीं होती है। वैसे ही निंदा भी शाश्वत नहीं होती है। निंदा या प्रशंसा दोनों का ही कोई न कोई कारण होता है। अतः इन्हें पाकर हमें हर्ष या शोक नहीं करना चाहिए और फिर जो भूल एक अज्ञानी करता है, वह भूल ज्ञानवान व्यक्ति को नहीं करनी चाहिए। इसलिए मैं अपने पूर्व शिष्य की बातों का बुरा नहीं मानता। महात्मा जी की बातें सुनकर शिष्य का मन शांत हो गया। **- त्रिलोक चंद जैन**

संशोधन के माध्यम से सेवा

- जीएम बोथरा, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

नीम के पौधे की परियोजना : पहली एक दो अच्छी बारिश के बाद और बरसात का मौसम खत्म होने से पहले नीम के तीन चार बीज अच्छी तरह से बढ़ने वाले कटीले बबूल के पौधे की जड़ में लगाना चाहिए। आपके ध्यान में आएगा कि छह से आठ माह पश्चात एक अच्छा हरा भरा नीम का कोमल पौधा बबूल के पौधे से बाहर आया है।

आप कहेंगे यह कैसे संभव है? नीम के पेड़ की वृद्धि कम पानी में कहीं भी होता है। नीम के पेड़ पहाड़ी इलाके में भी अच्छी तरह से आते है। थोड़ी सी मिट्टी होने पर नीम का पौधा फल-फूल जाता है। इर्द-गिर्द की ज़मीन से पानी सोखकर और वातावरा से मिल जुलकर पौधा खड़ा रहता है।

नीम के पौधे को पानी नहीं देने के बावजूद भी बरसात के दिनों में इर्द-गिर्द के पानी स्रोत से उसकी वृद्धि होती है। बरसाती वातावरण होने से पौधा सूखता नहीं है। नीम का पौधा लगाने के ज़मीन तैयार करने और गड्ढ़ा बनाने की आवश्यकता नहीं है। नीम की एक विशेषता है कि जहां नीम का बीज गिरता है वहां जमीन गिली रही तो तुरंत उसकी वृद्धि होती है। कटिले बबूल के पौधे छोटे नीम की सुरक्षा करने और सहारा देने का काम करते हैं। यहां बबूल का पौधा बहुमूल्य ट्रिगार्ड का काम करता है। कटिले बबूल से जानवर कोमल नीम के पौधों को छू नहीं सकते है। नीम का पौधा बड़ा होने के बाद उसके पत्तों का स्वाद बदलता है, इसलिए जानवर उसे नहीं छूते। लेकिन भेड-बकरियां ये कड़वे पत्ते भी खाती है। अब नीम का पौधा पांच से छः फुट ऊंचे पेड़ में तब्दील होता है इसलिए भेड़ -बकरिया उसे नहीं खा सकती ।

बरसात के पश्चात बबूल कापौधा ज़मीन से स्वयं के लिए पानी खींचता है। इस पानी में से आवश्यक पानी नीम का पौधा अपनी ओर खींचकर प्यास बुझाता हैं। यहां बबूल का पौधा नीम के पौधे को पानी देने का प्राकृतिक कार्य करता है। कुछ माह में नीम का पौधा ज़मीन में अपनी जड़े फैलाता है और पानी की व्यवस्था स्वयं करता है। कुछ समय पश्चात बबूल के पौधे से एक अच्छा नीम का पेड़ तैयार होता है।

कामयाबीः आप यह महसूस करेंगे कि थोड़ी सी मेहनत, एक पैसा खर्च किए बैगर हम एक अच्छा नीम का पेड़ इस पृथ्वी पर प्राकृतिक तरीके से तैयार करने में कामयाब हुए। यह सौ प्रतिशत सफल, स्वयं महसूस किया हुआ और अन्य लोगों को भी इसका अनुभव लेने का अवसर देने वाला प्रयोग है। वर्तमान में यह परियोजना लायंस क्लब, महावीर इंटरनेशनल और अन्य समाजसेवी संगठन क्रियान्वित कर रहे हैं। इसका हमें अभिमान है। खेद है कि उक्त संस्थायें यह परियोजना पूरी ताकत के साथ क्रियानिव्त नहीं करती। इस परियोजना को जितनी अहमियत देनी चाहिए उतनी नहीं दी जाती।

उद्देश्यः इस परियोजना का पर्यावरण संतुलन साधना और प्राकृतिक संकट पर मात करना यह प्राथमिक उद्देश्य है। उसके अलावा राष्ट्रीय समस्याओं पर विजय पाप्त करने का उद्देश्य भी अपने आप सफल रहा है। कृषि के लिए उपजाऊ भूमि कम हो रही है। जनसंख्या और बंजर जमीन का औसत तथा शहरी करण और बेकारी बढ़ रही है। बारिश और संतुलित बारिश की औसत कम हो रही है।

शेष अगले अंक में ...

प्रधानाचार्य श्री सोहनलाल जी म.

- तरुण जैन, अमृतसर (पंजाब)

भगवान महावीर स्वामी के पाँचवे गणधर श्री सुधर्माचार्य के शिष्य जम्बूस्वामी थे, जो अपने गुरु के मोक्ष होने के बाद मुक्त हुए। उनके बाद भगवान महावीर स्वामी के शासन की शिष्य परम्परा तब से लेकर अब तक प्रायः अविरल गति से चलती रही है। हमारे चरित्रनायक आचार्य श्री सोहन लाल जी म. भी उसी शिष्य परम्परा में आचार्य पद्वी के धारक थे। यद्यपि आरंभ में वह अपनी सम्प्रदाय के सभी आचार्यों के समान एक आचार्य मात्र थे, किन्तु बाद में उस समय के स्थानकवासी समज के 32 सम्प्रदायों के सभी आचार्यों ने उनको अपना मुक्टमणि मानकर उनको 'प्रधानाचार्य' मान लिया। आपका जीवन सार संक्षिप्त रुप से प्रस्तुत करन का प्रयास किया गया है।

आपका जन्म वर्तमान पाकिस्तान के स्यालकोट जिले के सम्बडियाल नाम नगर में हुआ था। आपका जन्म संवत 1906 रविवार माघ कृष्णा 1 को श्री मधुरादास जी ओसवाल की धर्मपत्नी श्री लक्ष्मीदेवी की रत्नकुक्षी से हुआ। माता-पिता दोनों का जी जीवन धार्मिक संस्कारों से ओ-प्रोत था। एक रात माता लक्ष्मी देवी ने अंतिम प्रहर में स्वपन में एक सफेद सिंह को अपने मुख में प्रवेश करते हुए देखा। निद्रा से जागृत होने पर न नवकार मंत्र का जाप कर देवी लक्ष्मी ने प्रति को स्वपन के बारे में बता दिया। शाह मधुरादास जी सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुआ तथा श्रेष्ठ, गुणी तथा धर्म हितैषी पुत्र रत्न की प्राप्ति की सूचना दी। जन्म होने पर जब धायमाता बच्चे की नाल दबाने हेतु ज़मीन खोदने लगी तब जमीन से स्वर्ण-अशरफियों से भरा लोटा निकला। किया गया पुण्य भावी जन्मों तक चलता है। एक वर्ष की आयु तक बालक सोहनलाल आराम से सो रहा था। खिड़की की ओर से सूर्य की किरणें बालक के मुखमंडल पर पड़ रही थी। तभी एक फणधारी सर्प आकर बालक के पास बैठ गया तथा फण छत्र बनाकर बालक की धूप से रक्षा करने लगा। सहसा माता लक्ष्मी देवी का वहां आना हुआ। सर्प को देखकर भयभीत होकर शंकर ग्रस्त हो गई तथा महामंत्र का जाप करने लगी। कुछ समय बाद सर्प वहां से ओझल हो गया। वह तुरंत दौड़कर बालक के पास आई तथा उस सोते हुए को ही उन्होंने उठाकर अपनी गोद में लेकर शाह मधुरादास जी के पास आकर सम्पूर्ण घटना बताई जिसे सुनकर उन्होंने हर्ष विभोर होकर कहा कि यह बालक अत्यंत पुण्यशाली है तथा बड़ा होकर अद्वितीय विद्वान तथा शूरवीर बनेगा तथा हमारे कुल का नाम उज्जवल करेगा।

जैन धर्म के संस्कार आपकी सांसों में रचे पड़े थे। बाल्यकाल से ही आप परम विचक्षण एवं प्रतिभाशाली थे। आपकी बुद्धि अत्यंत तीक्षण थी। विद्यार्थी जीवन में घर से मिलने वाले पैसों से वह दूसरे विद्यार्थियों की सहायता करते थे। एक बार लाहौर के अनारकली बाजार में उन्होंने एक रक्त पीप से भरे हुए अन्धे को गाड़ी से टकराते हुए देखकर उसे अपनी गोद में लेकर उसकी सेवा की थी। दीनों की सहायता करते का उनका यह व्रत उनकी युवावस्था में भी अनेक बार चला। शिक्षा पूर्ण होने पर पसरूर आ गाए और वहां जवाहरात का व्यवसाय करने लगे तथा आपने पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी से व्यवसाय प्रारंभ किया। कुछ ही समय में व्यवसाय चमक उठा। धर्म

प्रभावना करती हुई पसरूर पहुंची महासाध्वी पू. श्री शेरां जी म. के प्रवचन सुनने आप सोहनलाल के पैर के विलक्ष्ण चिन्ह 'जैन समाज में जैन ध्वजा फहराते महान आलौकिक कार्य करोगे जिससे तुम्हारा यश सदियों तक गूंजता रहेगा', की भविष्यवाणी की जो बाद में सत्य सिद्ध हुई।

19 वर्ष की अवस्था में पंजाबदशोदालक आचार्य देव पू. श्री अमरसिंह जी म. की सभा में खड़े होकर धावक के बारह व्रत अंगीकार किए। प्रत्येक मास में आप चार पोषध व्रत करते थे। पोशध मुनि जीवन की तैयारी की पूर्व भूमिका है। आपके माता-पिता जी ने पट्टी के एक प्रतिष्ठित परिवार की सुशील कन्या से आपका लग्न तय कर दिया। पर आपका मन विवाह बंधन में बंधने को राजी ना था। सांसारिक कार्य करते हुए भी आपका रस उनमें नहीं था। आप अपना अधिकांश समय साधु-साध्वियों के दर्शन, प्रवचन-श्रवण और समयिक में व्यतीत करते थे।

उस समय महाप्रभावशाली महासाध्वी पू. श्री पार्वती जी म. की आप पर विशेष कृपा थी। प्रभावक प्रवचन सुनकर युवक सोहनलाल ने महासाध्वी जी से ज्ञानचर्चा करने पर महासाध्वी जी ने जैन भगवती से दीक्षा ग्रहण कर धर्म प्रभावना की प्रेरणा दी। इस प्रकार युवा सोहनलाल के हृदय में वैराग्य की बीज़ अंकुरित हुआ।

सेवा, त्याग और धर्म के मार्ग पर चलते हुए आपने तीन मित्रों के साथ आपके प्रशस्त भावों को देखते हुए आचार्य पू. श्री अमर सिंह जी म. ने संवत 1933 मार्गशीर्ष वदि 3 को अमृतसर में भव्य दीक्षा महोत्सव में दीक्षा देते हुए पू. श्री धर्मचन्य जी का शिष्य घोषित किया। दीक्षित होने के पश्चात आप सेवा और स्वाध्याय में समर्पित बन गए। आपने जैन दर्शन का गहर गंभीर अध्ययन किया। प्रवचन पाट पर बैठे तो आपकी प्रवचन शैली ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध बना दिया। आप 12 वर्षों तक एक पात्र से ही काम चलाते रहे। लगातार 22 वर्ष तक एकांतर तप किया। 12 वर्ष तक एक ही चादर से काम चलाया। आपकी जीवन उच्च कोटि का संयममय जीवन था।

13 अप्रैल, 1919 को रौलट एक्ट के विरोध के लिये अमृतसर के जल्लियाँवाला बाग में विरोध सभा का आयोजन किया गया। आचार्यश्री ने वहां पर भयंकर अनिष्ठ की भविष्यवाणी की जो बाद में सही साबित हुई। इस प्रकार आचार्यश्री जी का जीवन साधना एवं वचन सिद्धि के अनेक अविस्मरणीय प्रसंग हैं। आपने संघ ऐक्य (संघ एकता) के अद्भुत प्रयास किएं विभिन्न सम्प्रदायों में विभक्त स्थानकवासी मुनियों को आपने एक सूत्र में पिरोने का भागीरथ अभियान चलाया। आचार्य पू.श्री सोहनलाल जी म. की इच्छानुसार ही जैन कॉन्फ्रेंस के श्री 4,5 एवं 6 अप्रैल 1931 को अमृतसर आए डैपूटेशन प्रतिनिधि मंडल के समक्ष अखिल भारतीय मुनि सम्मेलन की योजना बनाई। डैपूटेशन ने 16 अप्रैल, 1931 के 'जैन प्रकाश' के अंक में अमृतसर की इस भेंट का पूर्ण विवरण दिया।

यह आपके महाप्रयासों का ही परिणाम था कि अप्रैल 1933 में अजमेर में 15 दिनों तक चले अखिल भारतीय मुनि सम्मेलन में 32 सम्प्रदायों के मूर्धन्य आचार्यों ने 238 साधुओं एवं 40 साध्वियों की उपस्थिति में अमृतसर में ठाणपति आचार्य पू. श्री सोहनलाल जी म. को अपा मुक्टमणि मानकर प्रधानाचार्य बनाया गया। शताब्तियों के बाद यह प्रथम अवसर था जब समग्र स्थानकवासी मुनि एक झण्डे के नीचे एकत्रित हुए तथा एक प्रधानाचार्य के अज्ञामुवर्ती बने। आपको 32 आगम कंठस्थ थे। सूर्यप्रज्ञप्ति एवं चन्द्रप्रज्ञप्ति

सूत्रों पर उनका गहरा अध्ययन था। आपके गहन आगम ज्ञान, संयम यात्रा, तप साधना एवं संघ-ऐक्य की भावना को सुनकर राजस्थानी शतावधानी मुनि पू. श्री रत्नमुनि जी म. एक महाराष्ट्र के ऋषि जी विशेषरुप से अमृतसर प्रधानाचार्य श्री सोहनलाल जी म. के दर्शनाथ हेतु पधारे।

पू. श्री अमोलक ऋषि जी म. बड़े भारी विद्वान थे। उन्होंने बतीसों सूत्रों का हिन्दी में अनुवाद किया था। उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की। आचार्यदेव के महाप्रस्थान के लगभग 28 वर्षों के बाद भी व्याख्यान व्यायपति मुनि पू. श्री मदनलाल जी म. भी अपना अंतिम समय आचार्य भगवन की कर्म भूमि अमृतसर में बिताना चाहते थे। आपके 12 शिष्य (रत्न) थे :-

1. गणावच्छेदक पू. श्री गैडेरय जी म.
2. पू. श्री बिहारी लाल जी म.
3. पू. श्री विनय चंद जी म.
4. बहुसूत्री पू. श्री कर्मचन्द जी म.
5. आचार्य पू. श्री कांशीराम जी म.
6. पू. श्री ताराचंद जी म.
7. पू. श्री टेकचंद जी म.
8. पू. श्री लाभ चंद जी म.
9. पू. श्री जमीतराय जी म.
10. पू. श्री चिंतराम जी म.
11. पू. श्री गोबिन्द राम जी म.
12. पू. श्री रुपचंद जी म. आदि

आपने अपना उत्तराधिकारी पू. श्री कांशी राम जी म. को बनाया। आपके पौत्र शिष्यों में गणि पू. श्री उदय चन्द्र जी म., पंडित पू. श्री शुक्ल चन्द्र जी म., तपस्वी पू. श्री सुदर्शन लाल जी म. प्रमुख थे। घोर तपस्वी पू. श्री निहाल चन्द्र भी प्रसिद्ध थे। अमृतसर (पंजाब) में लगभग 30 वर्षों तक स्थिरवास रहे। आप आषाढ़ शुक्ल षष्ठी संवत 1992 सन 1935 को संथारापूर्वक प्रातः 8:00 बजे अमृतसर में देवलोक गमन हो गये।

इस प्रकार सम्पूर्ण स्थानकवासी जैन समाज का यह सौभाग्य सूर्य अपनी ज्योतिर्मय किरणों को लपेटते हुए नियति के गर्भ में विलीन हो गया। पंजाब का यह महान उदारकर्त्ता लगभग 60 वर्षों तक उत्कर्षठ संयम यात्रा पूर्णकर धर्मोपदेश का रसपान कर स्वर्ग सिधार गया। आपकी प्रेरणा से कई धर्मोयोगी संस्थायें स्थापित की गई जिनमें अमर जैन हॉस्टल लाहौर, जो विभाजन के बाद चंडीगढ़ में स्थापित हुआ। बनारस स्थित श्री पार्श्वनाथ विद्यापीठ प्रमुख है। इस प्रकार पू. श्री सोहनलाल जी म. द्वारा आरंभ किये संघ ऐक्य के कार्य को अजमेर में आरंभ करके सादड़ी में समाप्त किया गया।

अजमेर सम्मेलन का आयोजन पू. श्री सोहनलाल जी महाराज की आज्ञानुसार किया गया था। इस सम्मेलन के कारण सबके ध्यान में बात आ गई कि मुनिसंघ में प्रचलित तत्कालीन अनेक सम्प्रदाय समाज की एकता में बाधक थे और उनको आपस में संगठित करके एक आचार्य के नेतृत्व में लाना आवश्यक है। अजमेर में सब आचार्यों के ऊपर पू. श्री सोहनलाल जी म. को प्रधान आचार्य बनाया गया था। किन्तु सादड़ी में पृथक पृथक आचार्यों के पदों को समाप्त करके स्वर्गीय पू. श्री सोहनलाल जी म. की एकता की भावना के प्रयत्न को सफल कर समस्त संघ का एक आचार्य बनाया गया। इस प्रकार पू. श्री सोहनलाल जी म. द्वारा बोए हुए एकता के बीज़ में उनके उत्तराधिकारी पू. श्री कांशी राम जी म. ने अजमेर में व्यवस्था स्थापित करके मुंबई में एकता की ऐसी योजना बनाई, जिसको सादड़ी सम्मेलन में पूर्ण किया गया। ✧✧

रंगों का संसार

- निधि निदेश लोढ़ा, कांदिवली, मुंबई (महाराष्ट्र)

यह प्रकृति अति सुंदर है और इसकी सुंदरता में चार चाँद लगाते है में रंग। आसमान का नीलापन, मेघों का कालापन, सूर्य की लालिमा, खेतों की हरियाली, इन्द्रधनुष के विभिन्न रंग, बर्फ की सफेदी और भी कई प्रकृति के नजारे हमारा मन प्रफुल्लित करते हैं। इस आनंद का राज है रंग। मानव जीवन के रंगों के बिना उदास है। मुख्यतः सात रंग इस सृष्टि में है। हर रंग का हमारे मन पर प्रभाव पड़ता है।

रशिया (रूस) में एक प्रयोग हुआ। वहां एक स्कूल के बच्चे बहुत शरारती और पढ़ते में आलसी थें उन स्कूलों की दीवारें गुलाबी रंग से पुतवा दी गई। कुछ दिन बाद बच्चों की शरारतें कम हो गई और वे पढ़ने में रुचि लेने लगे। एक और प्रयोग किया गया। एक कमरे में बैंगनी रंग की पुताई की गई। वहाँ मजदूर साठ किलो अधिकतम भार उठा पाये और बहुत थक गये। फिर अगले दिल उन्हें लाल रंग के पुताई वाले कमरे में भार उठाने को कहा वहाँ उन्हीं मजदूरों ने 70 से 75 किलो वज़न आसानी से उठा लिया। लाल रंग सक्रियता पैदा करता है। सर्दी में काला कम्बल ओढ़ते हैं क्योंकि काले रंग में प्रतिरोधात्मक शक्ति होती है। वह बाहर की वस्तु को आत्मसात नहीं करता, बाहर ही रोक देता है गर्मी में सफेद कपड़े पहनते हैं, सफेद रंग में पारदर्शिता की शक्ति होती है। हरा रंग ठंडा होता है, हरे रंग में रोग मिटाने की शक्ति होती है। हरे पड़े पौधों के पास रहने वाले व्यक्ति ठंड़े स्वभाव के होते हैं। शांति और पवित्रता के लिये श्वेत रंग प्रभावशाली होता है।

जिन लोगों के बहुत देर तक बैठकर कम्प्यूटर पर काम करना पड़ता है उन्हें डेस्क्टोन का रंग हरा करना चाहिए। हरा रंग आँखों के लिये बहुत अच्छा होता है। व्यायाम करते समय नारंगी रंग बहुत ऊर्जा देता है।

वस्त्रों का रंग अधिक गहरा न हो। श्वेत, पीला, नीला, हरा आदि को चुने। जिस दिन आकाश बादलों से घिरा रहता है, शरीर सुस्ताने लगता है।, धूप होती है तो आदमी में स्फूर्ति होती है। वैसे ही रंगों का हमारे चिंतन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। जब मन में खराब चिंतन आता है, अशुभ विचार आते हैं तो चिंतन के पुदगल काले वर्ण के हो जाते हैं, कृष्ण लेश्मा होती है। अच्छा चिंतन चलता है शुभ-विचार आते हैं तो वे श्वेत वर्ण के भी हो सकते हैं।

आज कल रंगों के जरिये शारीरिक और मानसिक बीमारियों को दूर करने के लिये कलर थेरेपी का भी बहुत प्रचलन है। रंग हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। इनसे जीवन में रुचि, विविधिता और ताजगी बनी रहती है। विवाह, शादियों और धर्मोत्सों में हरी, पीली, लाल, नीली, साड़ियों से द्वारा सजाते हैं तो संबंधित व्यक्ति ही नहीं, वहाँ से गुजरने वाले दर्शक भी प्रसन्न हो उठते हैं यह रंगों का अर्थात मनोवैज्ञानिक प्रभाव है। अभी भी राजस्थान और उत्तर प्रदेश के कई भागों में दीवारों पर रंगीन चित्र बनाने की परम्परा है। उससे जान-अनजान में मानव प्रकृति प्रभावित होने का बड़ा रहस्य छुपा है। हमारे महाराज साहिब श्वेत वस्त्र पहनते हैं। श्वेत रंग, ज्ञान, मधुरता, गंभीरता और पवित्रता का उद्बोधक है। जब प्रवचन में जाए तो अधिक गहरे, चटख, लाल रंग, बहुत चमकीले वस्त्र न पहने तो सामाजिक साधना में अधिक मन लगे और हम ज्ञान-ध्यान अच्छे से सीखे।

"कितने कितने कैसे कैसे, रंगों का है लिये अंबार।
प्रकृति ने सजा रखी है, विभिन्न रंगों की कैसी बहार।"

✧✧

पूज्य आचार्य श्री आनंदऋषि जी - कुछ तथ्य एवं तिथियाँ

– संकलन स्व. उमराव देवी धींग, बम्बोरा (राज.)

1. **जन्म :** माता सौ. हुलसा, पिता श्री देवीचंद गुगलिया के घर आँगन में विक्रम संवत् 1957 श्रावण शुक्ल प्रतिपदा 27 जुलाई, 1900 शुक्रवार को चिचोंडी, अहमदनगर (महाराष्ट्र)।
2. **दीक्षा :** विक्रमी संवत् 1970 मार्गशीर्ष शुक्ल 9 (7 दिसम्बर 1973) रविवार को ग्राम मिरी, अहमदनगर, महाराष्ट्र में पूज्य श्री रत्नऋषि जी के शिष्य बने।
3. विक्रम संवत् 1988 (सन् 1931) में मनमाड़ में जैन दिवाकर मुनि चौथमल जी से मिलन। तब जैन दिवाकर जी ने उनमें समर्थ भावी आचार्य की प्रबल संभावना देखी।
4. **ऋषि संप्रदाय के युवाचार्य** : विक्रम संवत् 1993 भुसावल (महाराष्ट्र)
5. **ऋषि संप्रदाय के आचार्य** : विक्रम संवत् 1993 माघ कृष्ण 6 बुधवार (पाथर्डी, महाराष्ट्र)।
6. **श्री वीर वर्द्धमान श्रमण संघ के आचार्य :** विक्रम संवत् 2006 चैत्र कृष्ण प्रतिपदा (ब्यावर, राजस्थान)
7. **श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के प्रधानमंत्री** : सादड़ी, राजस्थान में विक्रम संवत् 2009 वैशाख शुक्ल तृतीय, (आखा तीज)
8. श्री व. स्था. जैन श्रमण संघ के उपाध्याय : विक्रम संवत् 2013 (1 अप्रैल, 1956) भीनासर, बीकानेर, राजस्थान।
9. श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन **श्रमण संघ के आचार्य :** विक्रम संवत् 2021, फाल्गुन शुक्ल 11 को अजमेर, राजस्थान में आचार्य आत्माराम जी के पट्टधर आचार्य बने।
10. फरवरी -1975 (विक्रम संवत 2031) में आचार्य आनंदऋषि अमृत महोत्सव का आयोजन और आचार्य आनंदऋषि अभिनंदन ग्रंथ (जैन विद्या एवं प्राकृत भाषा ज्ञानकोष) का प्रकाशन।
11. आचार्यश्री के सान्निध्य में पुणे, महाराष्ट्र में **विशाल संत सम्मेलन** मई, 1987।
12. आचार्य आनंदऋषि की 79वीं दीक्षा जयंती पर 15 दिसम्बर, 1991 को आचार्य आनंदऋषि साहित्य निधि, हैदराबाद की स्थापना।
13. **देवलोकगमन :** 28 मार्च, 1992 अहमदनगर, महाराष्ट्र।
14. 9 अगस्त, 2002 को भारत सरकार ने उनके सम्मान में चार रुपये मूल्य वर्ग का बहुरंगी **डाक टिकट** जारी किया।

प्रस्तुतिः **डॉ. दिलीप धींग**

।।जय आनंदऋषि जी।।

रिश्तों की बगिया में
एक रिश्ता नीम के पेड़
जैसा भी रखना,
जो सीख भले ही कड़वी देता हो
पर तकलीफ में मरहम
भी बनता है।।

समाचार - प्रकाश

आत्मदृष्टि धर्म प्रभावना

अध्यात्मिक होगा इंदौर चातुर्मास-आचार्य सम्राट पू. डॉ. शिवमुनि जी म.।
भीतर लौटने का संदेश देता है चातुर्मास - युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.

इंदौर (मध्य प्रदेश) : जिस क्षण की प्रतिक्षा इंदौर वाले बरसों से कर रहे थे। वह क्षण 3 जुलाई, 2017 को सभी के सामने आ गया। सुबह का सूरज बादल में छिपा मध्यम प्रकाश फैला रहा था रिमझिम इन्द्र देवता की फुहार आचार्य, युवाचार्यश्री का अभिनंदन कर रही थी। शुभ मुहुर्त्त सुबह सवा आठ बजे राजवाड़ा से प्रारंभ हुआ। शोभायात्रा में हजारों श्रावक-श्राविकाऐं भक्ति भावना श्रृद्धा भावना एवं अनुशासन का परिचय दे रहे थे। 508 श्राविकाएं मंगल का प्रतिक कलश सिर पर रखकर चल रही थी रंग-बिरंगे वस्त्रों में श्रावक श्राविकाएं एवं युवतियाँ जिनशासन की अलख जागते हुए जय नादों से आसमान गुंजायामान कर रही थी। झांकियां भी विशेष आकर्षण का केन्द्र थी जो सबको प्रेरणा प्रदान कर रही थी। राजवाड़ा चौक से आरंभ हुई शोभा यात्रा एम.जी. रोड़, छत्री सर्कल, कोठारी मार्केट चौराहा, रीगल तिराहा होते हुए अभय प्रशाल के शिवाचार्य समवसरण में पहुंची। साढ़े तीन किलोमीटर की शोभायात्रा में सम्पूर्ण अनुशासन एवं स्वच्छता का पूरा ध्यान रखा गया।

आचार्यश्री, युवाचार्यश्री का स्वागत अभिनंदन मुस्लिम बोरा समाज ने आदर की चादर प्रदान करके किया तो सिख संगत ने किताबें प्रदान करके अभिनंदन किया। दिगम्बर समाज ने भी इस अवसर स्वागत किया। शोभा यात्रा में इन्दौर की महापौर श्रीमती मालीनी गौड़, भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रभात झा, विधायक उषा ठाकुर, भाजपा प्रदेश महामंत्री विष्णुदत्त शर्मा आदि राजनीतिक पदाधिकारियों ने आचार्यश्री का अभिनंदन किया।

ठीक सवा दस बजे प्रवचन सभा का आरंभ युवाचार्य श्री के मंगलाचरण से हुआ। श्रीमान् हस्तीमल जी झेलावत ने समाज के आये हुए सभी अतिथियों का स्वागत पंचरंगी पटेका पहनाकर किया, श्रीमती मालिनी गौड़ ने सम्बोधित करते हुए कहा कि ऐसे आध्यात्मिक महापुरुषों का हमारी नगरी में पधारना हम सबका सौभाग्य हैं। चातुर्मास महासमिति के अध्यक्ष लाला नेमनाथ जी जैन ने आचार्य भगवन् का स्वागत करते हुए कहा कि मेरी वर्षो की भावना को आचार्य भगवन् ने साकार किया है। चातुर्मास हमारे लिए एक वरदान साबित होगा। श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री श्री शिरीष मुनि जी ने इस चातुर्मास को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि आचार्यश्री युवाचार्यश्री एवं प्रवर्तकश्री का संयुक्त चातुर्मास इतिहास में नया अध्याय लिखेगा। यह त्रिवेणी संगम समस्त कर्मों को धोने वाला साबित होगा। प्रमुख मंत्री जी ने समस्त चातुर्मास की रुपरेखा रखी। मधुर गायक सहमंत्री पू. श्री शुभम मुनि जी ने "पंखीड़ा" गीत सुनाया।

पूज्य प्रवर्तकश्री जी ने मालवा के प्रवर्तक के नाते आचार्य भगवन् का स्वागत अभिनंदन किया। फिर अपने अंदाज में उन्होंने कहा की यह अभय प्रशाल है यहां वैभा मैं निर्भय हूं। आज सोमवार है शिवजी का वार है और यहां विराजमान भी शिव भगवान है। उस शिव ने जहर को पीया था यह शिव भगवान सभी का राग द्वेषी रुपी जहर को दूर करने आएं है। आपके मन को पवित्र करने आएं है। पूज्य युवाचार्यश्री ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रवेश एक विशेष अहसास दिलाता है अब विहार को विराम देना है मतलब बहुत घूम लिए बहार बहुत देख लिया बहार के संसार को अब अपने भीतर लौटना है अब पापों से रुकना है। हम कहां रुके कब रुके यह संदेश है चातुर्मास विराधना से बचकर आराधना में आगे बढ़े यह संदेश देता है चातुर्मास।

इस अवसर पर आचार्य श्री भगवन् ने सम्बोधित करते हुए कहा कि कर्म निर्जरा का, आर्त्त रौद्र ध्यान से बचकर धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान में प्रवेश का अवसर है चातुर्मास। चातुर्मास में दान, शील, तप और भावना की आराधना ज्यादा से ज्यादा होनी चाहिए हम सबका लक्ष्य मोक्ष है उसके लिए पुरुषार्थ आवश्यक है। चातुर्मास तीर्थंकरों की परंम्परा है, जो अनादि काल से चली आ रही है। भगवान महावीर की ध्यान साधना करुणा, तपस्या सभी के जीवन में आयें। आप सभी सुबह से यहां बैठे है। मैं आप सबका स्वागत करता हूं। ये भगवान महावीर का तीर्थ है यहाँ सभी बराबर है। कैसे मैं महावीर बनूं यह संकल्प आपके भीतर होने चाहिए। भगवान महावीर की साधना मिली है यह जीवन हमको मिला है, इसका लाभ उठाईये। यह चातुर्मास चार महिने का अवसर आपको मिला है, अवसर का लाभ लेना, चूक मत जाना, बस यही मंगल कामना है।

श्रीमान मोहनलाल चोपड़ा जी जैन ने आचार्य भगवन् को महाराष्ट्र पधारने की विनंती की। युवा कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष पिन्टु भाई कर्नावट ने भी सभा को सम्बोधित किया। सभा में महामंडलेश्वर चेतन स्वामी, लक्ष्मण स्वामी, हिन्दू समाज ब्रह्माकुमारी जी से सीमा दीदी, अनीता दीदी, सिख समाज से ज्ञानी दलजीत सिंह उपस्थित थे।

प्रेषक : शमित मुनि जी

गढ़ सिवाना चतुर्मास प्रवेश पर उमड़ा जनसैलाब

बाड़मेर (राजस्थान) : गुरु पुष्कर देवेंद्र के विद्वान सुशिष्य उपाध्याय प्रज्ञा महर्षि पू. श्री रमेश मुनिजी म., संघ रत्न नवकार मंत्र के महान आराधक प्रवर्तक पू.श्री डॉक्टर राजेंद्र मुनिजी म., युवा हृदय सम्राट साहित्य दिवाकर पू. श्री सुरेंद्र मुनिजी म., सेवाभावी पू. श्री दीपेश मुनि जी म. एवं राजस्थान सिंहनी उप प्रवर्तनी श्री चरित्र प्रभा जी म., पू.श्री डॉक्टर रुचिका जी म., डॉक्टर राजश्री जी म., जिनाज्ञा श्रीजी म., पू. श्री प्रतीक्षा श्रीजी म., पू. श्री इशिता श्रीजी म. आदि का चंपावाड़ी से भव्य शोभायात्रा के साथ मंगलमय चातुर्मास हेतु गढ़ सिवाना के विभिन्न बाजारों में होते हुए महावीर भवन में मंगल प्रवेश हुआ। गढ़ सिवाना निवासी जो बेंगलुरु, चेन्नई, अहमदाबाद, सूरत, हलोल कंपनी मैसूर, रायचूर आदि क्षेत्रों मे निवास करते हैं, के अलावा जोधपुर पाली समदड़ी खंडप मोकलसर लूणी अनेक स्थानों से गुरुभक्त उपस्थित हुए। भगवान महावीर स्वामी गुरु ज्येष्ठ पुष्कर देवेंद्र, युगसम्राट आचार्य पू.श्री डॉ. शिवमुनि जी म. आदि के जयकारों से मेन रोड बस स्टैंड पर विभिन्न स्थानों से होते हुए जुलूस शहर स्थित महावीर भवन में सभा रुप में परिणत हुआ।

इस अवसर पर श्रावक संघ गढ़ सिवाना द्वारा आगंतुक अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया गया। स्थानीय झंकार चोपड़ा महिला मंडल, कन्या मंडल तथा जोधपुर श्रीसंघ के महामंत्री सुकन राज धारीवाल चंपालाल बागरेचा समदड़ी श्रीसंघ के महामंत्री प्रकाश मेहता आदि के अलावा पूज्य गुरुदेव जी गुरुणी जी महाराज ने चतुर्मास के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संत जीवन का चातुर्मास के साथ अत्यधिक संबंध है प्रस्तुत चातुर्मास रचनात्मक एवं आडंबर मुक्त बनाने का संदेश दिया गया। सिवाना में बेंगलुरु निवासी समाजसेवी दानवीर भामाशाह श्री बाबूलालजी राका एवं श्री अशोक कुमार जी महेंद्र कुमार जी राका परिवार द्वारा संपूर्ण चातुर्मास की आवास-निवास व भोजन व्यवस्था का लाभ लेने की घोषणा की गई तदर्थ श्रीसंघ के द्वारा आप दोनों परिवारों का हार्दिक अभिनंदन किया गया चतुर्मास को सफल बनाने में खेमराज जिनवाणी मदन लाल रांका बाबूलाल लूँकड पृथ्वीराज बागरेचा केसरीमल चोपड़ा लक्ष्मी लाल कोठारी भरत कानूनगो जोगराज रांका महेंद्र जी टाइगर सरपंच तथा सकल जैन समाज का योगदान रहा।

प्रेषक : मोहनलाल कानूनगो।

चार्तुमासिक मंगल प्रवेश

बड़ी सादड़ी (राजस्थान) : श्रमण संघीय उपप्रर्वतनीय महासती पू. श्री शांताकुंवर म., मधुर वयाख्यानी महासती मंगल प्रभाजी म. एवं प्रवचन प्रभाकर पू.श्री नयन प्रभाजी म. आदि ठाणा-3 का जैन दिवाकर के जयकारों के साथ प्रातः 9.15 बजे विवेकानंद स्कूल से अनेक श्रावक-श्राविकाओं के साथ कानोड दरवाजा, घंटाघर चौराया, निमच रोड, होते हुए दिवाकर सामयिक भवन से 32 वर्षो बाद चार्तुमासिक मंगल प्रवेश हुआ, जो धर्म सभा में परिवर्तन हो गया। धर्म सभा में उपप्रर्वतनीय महासती पू. श्री शांताकुंवर म. ने कहा कि संत-सतियों का मंगल प्रवेश बसंत के साथ होता है। जिनके आगमन पर प्रकृति मुस्कुराती है। संत प्रभु का पैग़ाम ओर मुक्ति का संदेश लेकर आते हैं। स्वागत रश्म अध्यक्ष मदनलाल कोठारी जैन, मंत्री अरविंद गदिया, मांगीलाल पितलिया आदि ने किया इस अवसर बाहर से पधारे श्रीसंघों में मुंबई, मंगलाझाड, डूंगला, सागरिया, चित्तौड़गढ़, बोहेडा आदि ने स्वागत किया **प्रेषक : सुनिल मेहता**

आसीन्द (राजस्थान) : भीलवाड़ा जिले के आसीन्द कस्बे में प्रधान उपप्रवर्तनी डॉक्टर पू. श्री दिव्य प्रभा जी म. सा. ने अपने साध्वी मंडल के साथ चातुर्मास हेतु महावीर हाल में मंगल प्रवेश किया। इस अवसर पर विशाल रैली निकाली गई जो बी.एस.एन.एल. कार्यालय के बाहर से शुरु हुई, कस्बे के प्रमुख मार्गों से गुजरती हुई महावीर हाल पहुंच कर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। स्वागत समारोह को बालिका मंडल, महिला मंडल सहित स्थानकवासी समाज के गणमान्य लोगों ने संबोधित किया। महाराज ने चार महीने के चातुर्मास काल मे अधिक से अधिक धर्मध्यान करने के लिए प्रेरित किया **प्रेषक : पूरण चौधरी जैन**

शक्ति, तप-त्याग की ऐतिहासिक नगरी चित्तौड़गढ में चातुर्मासक मंगल प्रवेश

चित्तौतगढ़ (राजस्थान) : भारत विश्रुत, ज्ञान सिंधु, श्रमण संघी महामंत्री पू.गुरुदेव श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद', महाश्रमण पू. प्र. श्री मदन मुनि जी म 'पथिक' युवा मनीषी सेवारत पू. श्री कोमल मुनि जी म. 'करुणाकर', स्वाध्याय प्रेमी सेवाभावी पू. श्री संभव मुनि जी म., नवदीक्षित पू. श्री शेखर मुनि जी म. आदि ठाणा-5 एवं श्रमणी शिरोमणी उप.प्र. पू. श्री डॉ. रवि रश्मि जी म. पंजाब सिंहनी पू. श्री प्रदीप रश्मि जी म. , तप ज्योति पू. श्री राकेश जी म., सेवाभाविनी पू. श्री निधि जी म. विद्यामिलाषीनी पू. श्री वृद्धि रश्मि जी म., नवदीक्षिता पू. श्री मृगांक रश्मि जी म. आदि ठाणा-6 का 5 जुलाई 2017 को प्रातः आठ बजे नगर के ओसवाल भवन, खातर महल में भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में भव्यता के साथ सानंद सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास के मंगल प्रवेश पर आचार्य सम्राट पू. श्री डॉ. शिव मुनि जी म. एवं युवाचार्य पू. श्री महेन्द्र ऋषि म. से प्राप्त शुभकामना संदेश पढ़कर सुनाया। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्रमण संघीय महामंत्री पू. श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' ने कहा कि आत्मा में परमात्मा स्वरुप है, इसलिए आंतरिक आध्यात्मिकता को जागरुक करना होगा जो चातुर्मास के दौरान संयम, साधना, तप, त्याग एवं ज्ञान चर्चा से प्राप्त हो सकेगी। धर्मसभा को जैन कॉन्फ्रेंस उपाध्यक्ष श्री औंकारसिंह जी सिरोया, जयपुर, राजस्थान प्रांत जैन कॉन्फ्रेंस अध्यक्ष श्री नेमीचंद जी धाकड़, राष्ट्रीय मंत्री श्री कंवरलाल जी सूर्या, मेवाड़ संघ मुंबई अध्यक्ष श्री चतरलाल जी लोढ़ा,

मेवाड़ भवन गोरेगांव अध्यक्ष श्री दिलीप जी नाबेड़ा, महामंत्री श्री सुरेश जी आंचलिया, मेवाड़ युवक मंडलाध्यक्ष श्री नरेश जी लोढ़ा, पूर्व राष्ट्रीय युवाध्यक्ष श्री महेन्द्र जी पगारिया, श्री भंवरलाल जी बोहरा मुंबई, सौ.प्रमीला सूर्या, भीलवाड़ा, संयुक्त मेवाड़ महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती निर्मला जी सिंघवी, श्री अरिहंत सिसोदिया भीलवाड़ा, श्री बलवंतसिंह हिंगड़ महामंत्री, फतहनगर पावनधाम ने भी विचार रखे। **प्रेषक : डॉ. रतनलाल मारू**

पिंपलगांव में पू. श्री जागृति जी म. आदि ठाणा का चातुर्मास मंगल प्रवेश

पिंपलगांव बसवंत (महाराष्ट्र) : प्रवचन प्रभाविका महासाध्वी पू. श्री जागृति जी म. आदि ठाणा-2 का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश 5 जुलाई, 2017 बड़े ही हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रमण संघीय जैन श्रावक संघ, पिंपलगांव द्वारा भव्य जुलूस शहर में स्थित भंडारी निवास से प्रारंभ होकर शहर के प्रमुख मार्ग से नेमिनाथ नगर स्थानक तक उत्साहपूर्वक जयकारे लगाते हुए नेमिनाथ नगर के स्थानक भवन में धर्मसभा में परिवर्तित हुआ। पू.श्री जागृति जी म. ने चातुर्मास परम्परा एवं जिनेश्वर भगवान ने बताये सिद्धांतों को समाज के अध्यात्मिक उत्थान के लिए अपनाने का आवाहन करते हुए अपने प्रभावी वाणी का परिचय दिया। इस अवसर पर सभी श्रीसंघों के अध्यक्ष/श्रीसंघपति का यथोचित सम्मान पिंपलगांव श्रीसंघ की ओर से किया गया। सूत्र संचालन महामंत्री राजेन्द्र सोनी ने किया। **प्रेषक : राजेन्द्र सोनी**

बैंगलोर में भव्य चातुर्मास मंगल प्रवेश

बैंगलोर (कर्नाटक) : श्रमण संघीय उप प्रवर्तक पूज्य श्री विनयमुनिजी म. 'वागीश' व पूज्यश्री गौतममुनिज़ी म. 'गुणाकर' आदि ठाणा-5 का सभी संत सतीवृंद के पावन सान्निध्य में भव्य दिव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश दिनांक 2.7.2017 रविवार को प्रातः 9.30 बजे राजाजीनगर, बैंगलोर स्थानक में सम्पन्न हुआ।

प्रेषक : अशोक जैन

बैंगलोर (कर्नाटक) : 28 जून 2017 श्रमण संघीय सलाहकार भीष्म पितामह राजऋषि पू. श्री सुमतिप्रकाशजी म., वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर पू. श्री विशालमुनिजी म. आदि संतो का चातुर्मासार्थ गणेश बाग, बैंगलोर में मंगल प्रवेश हुआ। **प्रेषक : सुनील सांखला**

नीमच में चातुर्मास मंगल प्रवेश

नीमच (मध्य प्रदेश) : उपप्रवर्तिनी जिनशासन चंद्रिका संघ गौरव पू. श्री डॉ. सुभाषा जी म. का आत्मसिद्धि आश्रम लेवाड़ा गांव नीमच में चातुर्मास मंगल प्रवेश 3 जुलाई, 2017 को प्रातः 7.00 बजे हुआ। इस अवसर पर सैंकड़ो भक्तजन उपस्थित थे। **प्रेषक : अविनाश चोरडिया**

रमणीक कुंवर जी म. का चातुर्मास प्रेवश शुजालपुर मंडी में

शुजालपुर मंडी (मध्य प्रदेश) : बालब्रह्मचारी गुरुवर्या विदुषी पू. श्री चांद शांति कुंवर जी म. की सुशिष्या निमाड़ सौरभ गुरुछाया गुरुवर्या पू. श्री रमणीक कुंवर जी म. आदि ठाणा-6 को चातुर्मास नवनिर्मित नूतन स्थानक भवन में धर्म ध्यान तप आराधना के साथ आरंभ हो गया हैं श्री वर्ध. स्था. जैन श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री विनोद जैन ने बताया कि प्रतिदिन प्रवचन, ज्ञानार्जन व प्रतिक्रमण के साथ-साथ प्रश्न मंच के साप्ताहिक आयोजन हर्ष व उल्लास के वातावरण में चल रहे हैं। **प्रेषक : रचना जैन**

चेन्नई में पू. श्री दिव्यज्योति जी म. आदि ठाणा का चातुर्मास मंगल प्रवेश

चेन्नई (तमिलनाडु) : उ.प्र. प्रवचन प्रभाविका खानदेश भूषण पू. श्री दिव्यज्योति जी म. 'अर्पणा' आदि ठाणा-5 का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के लिये 5 जुलाई, 2017 को प्रातः 8.00 बजे श्री वर्धमान स्थानकवसी जैन संघ, एमसी रोड से विहार करके पुरानी धोबीपेट महावीर भवन में पधारे। चातुर्मास हेतु पवेश में सैंकड़ो लोगों ने भाग लिया।। मंगल प्रवेश के पश्चात महावीर भवन में स्वागत सभा का आयोजन रखा गया। संचालन चेयरमैन श्री सज्जनराज जी तालेड ने किया। **प्रेषक : रमेश ओस्तवाल**

पू. श्री सुमनजी म. का चातुर्मास नाशिक में संपन्न

नाशिक (महाराष्ट्र) : जैन दिवाकर पू. श्री चौथमल जी म. की आज्ञानुवर्ती व्याख्यान वाचस्पति पूज्यपाद नान कवंर जी म. की सुशिष्या अरिहंत आराधिका प्रसन्नमना प्रवचन मनिषी श्रमणी रत्ना पू. विजया श्रीजी 'सुमन' का भव्य चातुर्मास प्रवेश नाशिक में हुआ। **प्रेषक : मानक शाह**

दुर्ग, छत्तीसगढ़ में भव्य चातुर्मास मंगल प्रवेश

दुर्ग (छत्तीसगढ़) : राजगुरुमाता श्री उमराव कुंवर जी 'अर्चना' महासती मंडल का जय आनंद मधुकर रतन भवन बांधा तालाब दुर्ग में भव्य चातुर्मास प्रवेश 3 जुलाई को सम्पन्न हुआ। मंगल प्रवेश पर छत्तीसगढ़ के विभिन्न अंचलों से पधारे भक्तगण तो उपस्थित थे ही साथ ही चेन्नई, अहमदाबाद, इन्दौर, जोधपुर, जयपुर, नागौर आदि दूर-सुदूर प्रांतों से भी श्रद्धालुजन पधारे। प्रवेश के साथ ही मंगल जुलुस सभा रुप से परिणत हुआ। स्थानीय महिला मंडल, पाठशाला के बच्चों ने सुन्दर स्वागत गीत गाया। मंगलाचरण के उपरांत महासती श्री निलेश प्रभाजी म.सा. एवं उन्नतिप्रभा जी म.सा. द्वारा प्रवेश गीत प्रस्तुत किया गया। साध्वी डॉ. श्री इमित प्रभा जी ने कहा कि आज अर्चना साध्वी मंडल का स्वागत किया, स्वागत का गूढार्थ है अपनी आत्मा में आना। आज चातुर्मास वोट नोट का हो गया लेकिन ज्ञानी कहते है हमें खोट निकालनी है। खोट निकालने के लिए आत्म चिंतन-मंथन करना होगा उसके लिए जिनवाणी का पान करना होगा। राजस्थान प्रवर्तिनी महासती पू. श्री सुप्रभाजी म.सा. ने उद्‌बोधन देते हुए कहा कि चातुर्मास के चार माह हमें आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। आदर्श जीवन में क्षमा, शांति, सरलता, सहिष्णुता सभी सद्‌गुण समाहित है। साधु-साध्वी भगवान महावीर के एजेन्ट के रुप में विभिन्न प्रकार की एजेंसिया लेकर चातुर्मास का मंगल प्रवेश करते है अतः सबको अधिक से अधिक लाभ लेना चाहिए। मंच का संचालन संघ मंत्री श्री टीकमचंद जी जैन छाजेड़ ने किया था।

प्रेषक : नवीन संचेती

श्रीमद राजचंद्र पर जारी डाक टिकिट का लोकार्पण

पुणे (महाराष्ट्र) : भारत सरकार के डाक विभाग की ओर से शुक्रवार श्रीमद राजचंद्र पर पाँच रुपये का स्मारक डाक टिकट जारी किया गया। जिसका लोकार्पण पुणे शहर के कात्रज स्थित आनंद दरबार में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक महासंघ एवं जैनिज्म फिलैटली ब्यूरों के पदाधिकारियों द्वारा श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री दिनेश मुनि जी म. के सान्निध्य में किया गया। जिससे जैन समाज में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई। जैनिज्म फिलैटली के सदस्य श्रमण पू. श्री डॉ. पुष्पेन्द्र ने जानकारी देते हुए बताया कि महात्मा गांधी और श्रीमद राजचंद्र की मुलाकात 1891 में हुई थी और वे उनके शास्त्रों के ज्ञान और गहरी समझ से बहुत

प्रभावित हुए थे। जिसका जिक्र उनकी आत्म-कथा 'सत्य के प्रयोग' में भी मिलता है। गाँधी जी प्यार से उन्हें रायचंद भाई कहते थे। यह वर्ष श्रीमद राजचंद्र की 150वीं जन्म जयंती मना रहा है इसी मौके पर डाक विभाग के फिलैटली ब्यूरो द्वारा उनकी स्मृति में डाक टिकट जारी किया। इस अवसर पर पू. श्री द्वीपेन्द्र मुनि जी म. , महासंघपति श्री बालासाहेब जैन धोका, जैन कॉन्फ्रेंस के महामंत्री डॉ. प्रो. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, उपाध्यक्ष विजयकांत कोठारी, जैनिज्म फिलैटली के राष्ट्रीय महासचिव श्री मीठालाल जैन, मुंबई से पधारे रशेश भाई दोशी व प्रकाश सिंयाल, लुधियाना से विजय जैन हैदराबाद श्रीसंघपति श्री सुरेश जैन कीमती इत्यादि अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। **प्रेषक : श्री तारकगुरु ग्रंथालय**

एक अनोखा सामाजिक कार्यक्रम

पालघर (महाराष्ट्र) : जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय युवा शाखा के युवा संरक्षक श्री पारस जी जैन मोदी एवं सौ. छाया पारस जी जैन मोदी की विवाह की 38वीं विवाह वर्षगांठ पर पालघर में रविवार 18 जून, 2017 को युवा शाखा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बालचंद जी जैन खरवडञ्ञ और युवाध्यक्ष श्री शशिकुमार जी जैन कर्णावट (पिंटू भाऊ) की अध्यक्षता में बड़े ही धूमधाम से एक नए प्रारुप के साथ मनाया। पालघर में यु‌ा शाखा के राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष श्री रमेश जी जैन पुनमिया की ओर से गौशाला में चारा वाट्प, पानी की टंकी टंकी फिटिंग के साथ स्कूल में भेंट, शिलाई मशीन और 251 विद्यार्थियों को नोट बुक वितरित की गई।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय शाखा के श्री बालचंद जी जैन खरवड़, राष्ट्रीय युवा मुख्य संरक्षक प्रकाश जी जैन बुरड़, युवाध्यक्ष श्री शशिकुमार कर्णावट, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा रुचिराताई जैन जी सुराणा, निवर्तमान अध्यक्ष श्री महेन्द्र पगारिया जैन, प्रमुख मार्गदर्शक निमेश जी जैन राठौड, युवा महामंत्री रवि लोढ़ा जैन, कोषाध्यक्ष श्री नवीन मुणोत सहित कई राष्ट्रीय पदाधिकारी उपस्थित थे। पालघर से राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष रमेश जी जैन पुनिमिया, ललित जी जैन के साथ उनकी पूरी टीम का पूरा सहयोग मिला। **प्रेषक : ललित जैन**

राष्ट्रीय युवा शाखा नई दिल्ली की चतुर्थ मिटिंग संपन्न

पालघर (महाराष्ट्र) : जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय युवा शाखा की चतुर्थ राष्ट्रीय कार्यकारिणी सभा 'पालघर' में हुई। पालघर में रविवार, 18 जून 2017 को युवा शाखा के राष्ट्रीय अध्यक्ष शशिकुमार कर्णावट (पिंटु भाऊ) के अध्यक्षता में सम्पन्न मीटिंग में आंध्र प्रदेश, गुजरात बैंगलोर, राजस्थान, महाराष्ट्र मुंबई आदि जगह से युवा साथी पधारे। मीटिंग में अनेक सुझाव दिए तथा सर्व सम्मत्ति से 24 सितंबर 2017 को राष्ट्रीय युवा सम्मेलन लेना का निश्चित हुवा है। मीटिंग में राष्ट्रीय युवा मुख्य सरंक्षक प्रकाश जी बुरड़ जैन युवाध्यक्ष शशिकुमार जैन कर्णावट, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा सौ. रुचिराताई सुराणा जैन, निवर्तमान अध्यक्ष महेंद्र पगारिया जैन, प्रमुख मार्गदर्शक निमेशजी राठौड़, युवा महामंत्री रवि लोढ़ा, कोषाध्यक्ष नवीन मुणोत सहित कई राष्ट्रीय पदाधिकारी उपस्थित थे, पालघर से राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष रमेशजी पुनमिया, ललितजी जैन के साथ उनके पूरी टीम ने मीटिंग की व्यवस्था की। **प्रेषक : शशि कुमार जैन कर्णावट**

मूसलाधार बारिश में सांताक्रूज महिला मंडल पहुंचा रिद्धिमाश्री जी म. की सेवा में

सांताक्रूज (महाराष्ट्र) : सांताक्रूज महिला मण्डल चातुर्मास प्रारंभ होते ही खार (अहिंसा हॉल) उप-प्रवर्तिनी श्री रिद्धिमाश्री जी म., तप ज्योत्सनाश्री म., हिमानीजी म., कर्मठ सेवाभावी श्री संबोधिजी म., बाल तपस्विनी जी म., कर्मठ सेवाभावी श्री संबोधि जी म., बाल तपस्विनी श्री शुभांगीजी म., बाल योगिनी श्री

संस्कृति जी म. आदि ठाणा के सान्निध्य में भारी वर्षा होते हुए भी बहनों ने सेवा व धर्मवाणी का पूरा-पूरा लाभ लिया।

प्रेषक : कंचन लोकेश सिंघवी

महाराष्ट्र प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषि जी म. का औंध में चातुर्मास प्रवेश

औंध (महाराष्ट्र) : पुणे के औंध क्षेत्र में महाराष्ट्र प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषि जी म., जिन शासन प्रभावक पू. श्री प्रशांतऋषि जी म., संस्कार दिवाकर पू. श्री आलोकऋषि जी म., पू. श्री विनीतदर्शना जी म. एवं पू. श्री तिलकदर्शना जी म. आदि ठाणा का चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश जुलूस सिद्धार्थ नगर से शुरु हुआ। जुलूस में युवा साथी और महिलाओं ने भारी मात्रा में हिस्सा लेकर प्रवेश की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाश जी चोरड़िया जैन, कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोककुमार एन. पगारिया जी जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री सागरजी जी सांखला जैन, नगर सदस्य श्री प्रवीणजी चोरबोले आदि गणमान्यजन उपस्थित थे।

प्रवचन भास्कर जिनशासन प्रभावक पू. श्री प्रशांतऋषि जी म. ने चातुर्मास के महत्व के विषय में विस्तृत प्रवचन दिया। संत समागम की उपलब्धियों के बारें में प्रवचन दिया। पू. श्री कुंदनऋषि जी म. ने औंध श्रीसंघ को धन्यवाद दिया और चातुर्मास की व्यवस्था के लिए उनका अभिनंदन किया। पू. श्री आशीषऋषि जी म. एवं श्री अनिल जी नाहर ने सभा का संचालन किया।

प्रेषक : अनिल नाहर जैन

पुणे शहर के सादड़ी सदन, कोथरूड़, सातववाडी, शिवाजीनगर, कासारवाडी एवं बिबवेवाड़ी में चातुर्मास प्रवेश बड़े हर्ष भरे वातावरण में जोर-शेर से संपन्न हुए

पुणे (महाराष्ट्र) : बिबवेवाड़ी यशलॉन्स में संस्कार भारती, वाणीभूषण पू. श्री प्रीतिसुधा जी म. आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश सोल्लास संपन्न हुआ। विधायक माधूरी मिसाद, नगर सदस्य श्री भिमालेजी, नगर सदस्य श्री प्रवीण जी चोरबोले, डॉ. कल्याणजी गंगुवाल, जैन कॉन्फ्रेंस के महामंत्री श्री अशोककुमार जी एन. पगारिया जैन तथा स्थानीय संघ के अध्यक्ष एवं पदाधिकारी, श्रावक-श्राविका भारी संख्या में उपस्थित हुए। पू. श्री प्रतिभाकुंवर जी म. तथा पू. श्री प्रियसाधना जी आदि ठाणा भी विराजमान थे। संघ के अध्यक्ष श्री पोपटलाल जी ओसवाल ने सभी का स्वागत किया तथा उपाध्यक्ष श्री माणिक जी दुग्गड़ ने सभा का संचालन किया।

सादड़ी सदन में पू. श्री प्रियसाधना जी म. आदि ठाणा, कोथरूड़ में पू. श्री पदमऋषि जी म., पू. श्री अचलऋषि जी म. का, शिवाजीनगर में पू. श्री वैभवश्री जी म. 'आत्मा' आदि ठाणा का सातावावाड़ी में पू. श्री मंजुश्री जी म., पू. श्री अक्षयश्री जी म. 'आखा' आदि ठाणा एवं कासारवाड़ी, पू. साध्वीरत्ना श्री किरणप्रभा जी म. की सुशिष्या, प्रखर वक्ता पू. श्री विपुलदर्शना जी म. आदि ठाणा का प्रवेश सोल्लास संपन्न हुआ।

जयकारों के बीच ऋषभ मुनि जी म. का मंगल प्रवेश

ब्यावर (राजस्थान) : जैन दिवाकर गुरुदेव पू. श्री चौथमल जी म. के सुशिष्य ऋषभ मुनि जी म. , जिनेन्द्र मुनि जी म. सहित महासती श्यामाश्री जी म. व महासती पू. श्री सुदर्शनाश्री जी म. ने जयकारों के बीच चातुर्मास के लिए कुंदन भवन में मंगल प्रवेश किया। श्रावक-श्राविकाओं के बीच संत-साध्वियों का यह जुलूस विनोद नगर से रवाना हुआ। मांर्ग में कई स्थानों पर स्वागत किया गया। कुंदनभवन में ऋषभ मुनि म. के मांगलिक के बाद जिनेन्द्र मुनि जी म. ने गीत प्रस्तुत किया।

प्रेषक : पारसमल श्रीमाल

दान मुक्ति के द्वार हैं

बड़ीसादड़ी (राजस्थान) : दिवाकर प्रवचन हाल में आयोजित धर्मसभा में श्रमण संघीय उ.प्र. महासती पू. श्री शांताकुंवर जी म. ने चातुर्मास प्रारंभ के प्रथम दिवस पर दान का महत्त्व बताते हुए कहा कि दान हमेशा शुद्ध भावना से करें। अर्थात् मलीन भावना का त्याग करें। पाँच प्रकार के दान सुपात्रदान, अभय दान, अनुकम्पा दान, उचित दान और कीर्ति दान हैं। जिसमें सुपात्र और अभय दान मुक्ति के द्वार हैं। जिनको देने से मोक्ष के द्वार भी खुल जाते हैं। पावन बनो अर्थात् गिरते हुए को उठाना और अधर्मी को धर्म के मार्ग पर लाना। मधुर व्याख्यानी महासती पू. श्री मंगल प्रभा ने कहा कि जब तक जिनवाणी 'जीवनवाणी' नहीं बन जाती अर्थात् हृदय में नहीं उतरेगी तब तक कर्मों की निर्जरा नहीं होगी। अर्थात् जिनवाणी का एक वचन ही जीवन को परमात्मा बना सकता है।

प्रेषक : सुनील मेहता

शिवाचार्य ध्यान केन्द्र का लोकार्पण

उज्जैन (मध्य प्रदेश) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ नमक मंडी द्वारा सन् 1971 से संचालित जैन छात्रावास श्रावक संघ के पुराने शांति भवन में चल रहा था। विगत 46 वर्षों में जैन समाज के ज़रुरतमंद बच्चों को आवासीय एवं भोजन व्यवस्था नाममात्र की राशि लेकर प्रदान की जाती रही। श्रावक संघ के निर्णयानुसार पुराना भवन तोड़कर उसी स्थान पर भव्य चार मंज़िला भवन निर्मित किया गया, जिसका कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। नवनिर्मित भवन की प्रथम मंज़िल पर दिनांक 5 जून को दोपहर 1 बजे **'शिवाचार्य ध्यान केन्द्र'** का लोकार्पण पूज्य आचार्य श्री एवं पू. श्री शिरीष मुनि जी म. के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

लोकार्पण के इस अवसर पर श्रावक संघ संरक्षक सर्वश्री विमलचंद मूथा जैन, रामचन्द्र श्रीमाल, अध्यक्ष प्रकाशचंद सूर्या जैन, कार्याध्यक्ष मदनलाल दुग्गड़ जैन, उपाध्यक्ष कांतिलाल भटेवराजैन आदि भारी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्रावक संघ के उत्सव महोत्सव संयोजन सुनील कुमार श्रीमान ने किया।

प्रेषक : रामचन्द्र श्रीमाल

छत्तीसगढ़ में आयोजित श्रमण संघीय जैन धार्मिक परीक्षा परिणाम

दुर्ग (छत्तीसगढ़) : श्रमण संघीय प्रथम युवाचार्य पू. गुरुदेव श्री मिश्रीमल जी म.सा. 'मधुकर' एवं काश्मीर प्रचारिका महायोगेश्वरी पू. राजगुरुमाता श्री उमरावकुंवर जी म.सा. 'अर्चना' की सुशिष्यायें महासती जी श्री कंचनकुंवर जी म.सा. राज प्रवर्तिनी डॉ. श्री सुप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-8 के रायपुर (छत्तीसगढ़) चातुर्मास में महासती पू. श्री डॉ हेमप्रभाजी म.सा. की सत्प्रेरणा एवं अथक प्रयास से श्रमण संघीय जैन धार्मिक परीक्षा विभिन्न परीक्षा केन्द्रों में आयोजित की गई। उसमें दुर्ग,रायपुर, भिलाई, साजा, बीजा, कवर्धा, डौण्डी लोहारा आदि विभिन्न क्षेत्रो के बच्चे, महिलायें एवं पुरुषों ने बड़े ही उत्साहपूर्वक भाग लिया।

अर्चना महासती मंडल के दुर्ग चातुर्मास मंगल प्रवेश के शुभ अवसर पर परीक्षा परिणाम घोषित किया गया जिसमें डौंडी लोहारा की मधु लोढ़ा, दुर्ग की रचिता श्री श्रीमाल कवर्धा की रश्मि बाफना ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर निशा लोढ़ा एवं सुलेखा लोढ़ा डौंडी लोहारा तृतीय स्थान पर गीता नाहटा, रायपुर व नेहा लोढ़ा-लोहारा रहे। बच्चों में प्रगति गुंदेचा-रायपुर प्रथम, उज्जवल भंसाली व ऋषि लोढ़ा लोहारा द्वितीय तथा सर्वज्ञ सांखला लोहारा तृतीय रहे। इन सभी उतमांक प्राप्त करने वाले एवं विशेष योग्यता वाले परिक्षार्थियों

को छ.ग. श्रमण संघीय श्रावक परिवार ने चांदी के सिक्कों के द्वारा सभा में पुरस्कृत कर सम्मानित किया। शेष सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को भी सांत्वना पुरस्कार देकर उत्साहवर्धन किया गया। परीक्षा आयोजन में रायपुर निवासी श्रीरामचंद जी मीना जी पींचा का पूर्ण सहयोग रहा। उनका छ.ग. श्रमण संघीय अध्यक्ष डॉ. बी.सी. कर्नावट एवं महामंत्री श्री निर्मल जी बाफना द्वारा सम्मान किया गया। आगामी परीक्षा अक्टूबर 2017 को होने की घोषणा की गई।

प्रेषक : नवीन संचेती

जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश द्वारा वंदन नमन यात्रा

नई दिल्ली : श्री आल इंडिया एस.एस. जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश द्वारा नगर में विराजित पू. साधु-साध्वियों के दर्शन हेतु वंदन नमन यात्रा 9 जुलाई से आरंभ की गई। जिसके तहत दिल्ली में 9 चातुर्मास स्थलों तक पहुंचने का कार्यक्रम निर्धारित किया गया।

पहले दिन 9 जुलाई, को पू. श्री ज्ञानमुनि जी म. ठाणा-1 गोल मार्किट, जैन भवन, महासाध्वी पू. श्री रानीजी म. ठाणा-3 जैन स्थानक, त्रिनगर, प्रवचन प्रभावक पू. श्री गौतम मुनि जी म. ठाणा-2 स्थानक त्रिनगर, कर्मठ वक्ता साध्वी पू. श्री विमला जी म. ठाणा-2 जैन स्थानक इन्द्र पुरी, तपाचार्य उपप्रवर्तिनी पू. श्री मोहनमाला जी म. ठाणा-7 करोल बाग जैन स्थानक, महासाध्वी श्री मंगल ज्योति जी म. ठाणा-3 जैन स्थानक महावीर भवन बारादरी, चाँदनी चौक, महासाध्वी पू. श्री कमलप्रभा जी म. ठाणा-5 जैन स्थानक शास्त्री नगर, महासाध्वी एषना जी म. ठाणा-5 जैन स्थानक लारेंस रोड के चरणों में वंदन अर्जकर सुखसाता पूछी गयी। इस दर्शन वंदन यात्रा में प्रांतीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन व महामंत्री श्री जसवंत जी जैन सहित दिल्ली के प्रदेश के कई वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित थे।

प्रेषक : जसवंत जैन

मंद बुद्धि बच्चों की नेत्र जाँच का द्वितीय चरण शिविर

नई दिल्ली : गुरु शुक्ल जैन चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान में बंद बुद्धि गृह 'आशा किरन' समाज कल्याण विभाग दिल्ली सरकार, रोहिणी (अवन्तिका) लॉयन्स नया बाजार चेरिटबेबल सोसाएटी के सहयोग से 11 जून 2017 रविवार को फ्री नेत्र जाँच शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर को मिलाकर लगभग 950 मंद बुद्धि बच्चों की आँखें चैक करके उन्हें दवाई एवं चश्मे फ्री वितरण किये गये।

शिविर का आयोजन उ.भा. प्रवर्तिनी महासाध्वी पू. श्री डॉ. सरिता जी म.सा. की पौत्र शिष्या श्रमणी महासाध्वी पू. श्री श्रेया जी म.सा की पावन प्रेरणा से किया गया। महासती श्री श्रेया जी म.सा. सेवा कार्यों में रुचि एवं सेवा लग्न, गरीब-दीन दुःखियों की सेवा, ऐसे मंद बुद्धि गृह, अपंग गृहों की सेवा, हमारे गुरु शुक्ल जैन चैरिटेबल ट्रस्ट को सदैव प्रेरित करती है। ट्रस्ट का परम लक्ष्य मानव सेवा के उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए ट्रस्ट दिन प्रतिदिन सेवा के कार्यों में तरक्की कर रहा है।

अभूतपूर्व सहयोग श्री राजपाल जैन, महामंत्री आदर्श नगर, श्री जे.पी. मित्तल, जी का सराहनीय रहा। समाज कल्याण विभाग 'आशा किरन' के अधिकारीगण, विशेषरुप से डॉ. रचना भारद्वाज जी पंकज कुमार जी का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। ट्रस्ट के प्रधान श्री विजय गर्ग जी, मंत्री श्री अजय जैन, कोषाध्यक्ष सुशील जैन सभी का आभार प्रकट करते हैं।

प्रेषक : नरेन्द्र जैन

जैन कॉन्फ्रेंस पंचम जोन रा. का. सदस्य की ओर से निर्मित ओम जय आनंद डायलिसिस सेंटर के उद्घाटन की कुछ झलकियाँ

... को को-ऑर्डिनेटर पद पर नियुक्त

बागलकोट (कर्नाटक) : प्रांतीय कांग्रेस कमेटी, अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के ... खान ने जैन समाज के वरिष्ठ समाजसेवी श्री पुखराज जैन बेताला को को-आर्डिनेटर पद पर ... है। अपनी नियुक्ति के बाद श्री पुखराज जी बेताला ने कहा कि वे निष्ठा व ... जैन समाज को शासकीय नीतियों के साथ जोड़ने का भरसक प्रयास करेंगे ...

प्रेषक : बागलकोट जैन श्रीसंघ

मरण दो प्रकार के है पहला बाल मरण दूसरा पंडित मरण

विरार (महाराष्ट्र) : विरार प. परिसर के मेवाड़ भवन में श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री रामसुनि जी म. 'निर्भय' ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए अपने प्रवचनों में कहा कि मनुष्य जीवन का फल कुदरत की किसी महत् अनुकंपा, पुण्य से खिलता है। हम अपने आस-पास यही देखते हैं कि मनुष्य जन्म लेता है, पलता है, बड़ा होता है जीवन भर संघर्ष करता है। कंचन कामिनी प्राप्त करता है, ऐशो-आराम, मौज-मस्ती, फिर अपने बनाये हुये संसार को छोड़कर एक दिन मृत्यु का ग्रास हो जाता है। यह जीवन चक्र है। एक विद्वान ने कहा है **'पापी जीता, धर्मी जीता है जीता है सारा संसार, कला नहीं आयी तो जीना है बेकार'**। जीना संयम पूर्वक जीओ पंडित मरण करो स्वीकार, फिर मरने की नहीं रहेगी दरकार। के साथ संथारे की विस्तृत जानकारी देते हुए बालमरण और पंडित मरण दो तरह का मरण बताया है बाल मरण यानी अज्ञानी, पंडित मरण ज्ञानी। अज्ञानी हाय हाय करके प्राण छोड़ता है और ज्ञानी हरे-हरे।

प्रेषक : दलपत शेठिया

महाराष्ट्र चेंबर ऑफ कॉमर्स, इंडस्ट्री एंड अग्रीकल्चर के अध्यक्ष के पद संतोष मंडलेचा जी का पदग्रहण

मुंबई (महाराष्ट्र) : राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख श्री मोहनजी भागवत, केन्द्रीय रेलमंत्री श्री सुरेश प्रभु तथा संरक्षण राज्यमंत्री डॉ. सुभाष भामरे की उपस्थिति में नाशिक के प्रसिद्ध उद्योजक श्री संतोष मंडलेचा जी ने महाराष्ट्र चेंबर ऑफ कॉमर्स, इंडस्ट्री, और अग्रीकल्चर के अध्यक्ष पद का पदभार स्वीकार किया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद का पदभार श्री अमित कामत जी ने स्वीकार किया। आर.एस.एस. प्रमुख ने कहा कि भारत की प्रतिभा विश्व के सभी देशों से अलग है। हमें भारत को महासत्ता नहीं विश्वगुरु बनाना है। पद ग्रहण समारंभ के लिए पूरे महाराष्ट्र के व्यापारी, उद्योजक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

प्रेषक : चन्द्रकांत दीक्षित

उपाध्याय पू. श्री जितेन्द्र मुनि जी म. का पाली में मंगल प्रवेश

पाली (राजस्थान) : श्रमण संघ के आगम ज्ञाता, आगम पुरुष, जिन शासन रत्न, उपाध्याय पू. श्री जितेन्द्र मुनि जी म., उग्र तपस्वी पू. श्री रमण मुनि जी म., तपस्वी पू. श्री प्रभव मुनि जी म., मधुर गायक पू. श्री प्रभासमुनि जी म., सेवाभावी पू. श्री प्रशमित मुनि जी म. आदि ठाणा पावन पवित्र भूमि पाली में मंगल प्रवेश किया। जहां स्थानक में शोभायात्रा धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। अनेक गणमान्य श्रावक और श्राविकायें उपस्थित थी। कार्यक्रम का संचालन श्री सज्जनराज जी गुलेच्छा ने किया। प्रवेश प्रवचन की प्रभावना श्री नेमीचंद जी, देवेन्द्रकुमारजी, दर्शनकुमार जी चोपड़ा परिवार की ओर से थी।

प्रेषक : ताराचंद जैन

शोक समाचार

धर्मनिष्ठ, सुश्रावक श्री नेमीचंद जी जैन नाहटा का देवलोक गमन

नगरी (छत्तीसगढ़) : धर्मनिष्ठ, सुश्रावक श्री नेमीचंद जी जैन नाहटा का 81 वर्ष की आयु में संथारा पूर्वक देवलोक गमन हो गया। वे अपने पीछे पत्नी श्रीमती प्रेमबाई सुपुत्र गौतमचंद पौत्र मनीष चार पौत्री, पड़पौत्री सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं वे वीर पिता गुलाबचंद जी शांतिलाल जी नाहटा जैन के बड़े भ्राता व कमलचंद निर्मलचंद महेश नाहटा जैन के मौसा जी थे। आप प्रतिदिन तीन सामायिक नवकार जाप स्वाध्याय, रात्रि भोज त्याग आदि कई नियम प्रत्यख्यान का पालन करते थे। जीवन के अंतिम क्षणों में महासतियों द्वारा संथारा पच्कखाण व मांगलिक श्रवण किया।

प्रेषक : महेश नाहटा

धर्मनिष्ठ, सरलमना सुश्रावक श्री धर्मचंद जी जैन मेहता का स्वर्गवास

रतलाम (मध्य प्रदेश) : धर्मनिष्ठ, सुश्रावक सरलमना के प्रतीक जैन श्रीसंघ सज्जन मिल क्षेत्र वरिष्ठ श्रावक व पूर्व अध्यक्ष श्री धर्मचंद जी जैन मेहता का गुरुवार 29.06.2017 को यहां अरिहंत शरण गमन हो गया, जो पिछले तीन माह से अस्वस्थ चल रहे थे। श्री धर्मचंद जी का अपने नाम के अनुरुप ही धर्म में स्थान थां आप सज्जन मिल क्षेत्र के जैन समाज के आधार स्तम्भ थे। प्रातः व सांय सामयिक प्रतिक्रमण, नवकारसी आदि धार्मिक क्रियाएं नियमित रुप से किया करते थे। आपके स्वर्गवास से प्राचीन परम्परा के आदर्श श्रावक रत्न की न्यूनता हो गई। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। अंतिम यात्रा गुरुवार को कस्तूरबा नगर स्थित निवास से निकली जिसमें समाज व क्षेत्र के गणमान्य जनों ने शामिल होकर अपनी आदरजंलि के साथ पुष्पांजलि दी।

प्रेषक : आर.सी. कटारिया

धर्म निष्ठ सुश्राविका श्रीमती चान्दबाई जी जैन का स्वर्गवास

हिम्मत नगर (गुजरात) : जैन कॉन्फ्रेन्स गुजरात प्रांतीय शाखा के सहमन्त्री श्री दिनेशकुमारजी मादरेचा, हिम्मतनगर के दादीसा श्रीमती चान्दबाई धर्मपत्नी स्व. श्री कजोडीमलजी मादरेचा (पाण्डोली स्टेशन वाले) का स्वर्गवास हो गया। स्व. श्रीमती चान्दबाईजी का जीवन धर्म से ओत प्रोत था। देव गुरु धर्म के प्रति आस्थावान चान्दबाईजी के निधन से समग्र जैन समाज को एक होनहार सुश्राविका की क्षति हुई है। स्व. श्रीमती चान्दबाईजी अपने पीछे पाँच सुपुत्र तीन, सुपुत्रियाँ, ग्यारह पौत्र, बारह पौत्रियाँ, सोलह पड़पौत्र-पौत्रियाँ सहित भरा पूरा परिवार छोड गयी हैं।

प्रेषक : कोमल कुमारी

पाँच पीढियाँ देखने वाली शतायु श्रीमती धापूबाई पावेचा जैन का स्वर्गवास

बखतगढ़ (म.प्र.) : स्वर्गीय श्री सूरजमलजी पावेचा जैन की धर्मपत्नी शतायु धर्मनिष्ठ श्राविका श्रीमती धापूबाई पावेचा बखतगढ़ वाले का 23 जून, 2017 को इंदौर में स्वर्गवास हो गया। वे लंबे समय तक यहां रहने के बाद बखतगढ़ से इंदौर चले गए थे। नियमित नवकार महामंत्र की माला गिनना, सामायिक, स्वाध्याय, धर्म आराधना, संयमी आत्माओं के दर्शन, मांगलिक का लाभ लेना, बच्चों से धर्म संस्कार की चर्चा करना आदि को इस उम्र में भी उन्होंने अपने जीवन जीने का अहम हिस्सा बना लिया था। आपने इतनी लंबी शतायु उम्र में परिवार में पाँच पीढ़ीयाँ देखने का सौभाग्य प्राप्त किया हैं।

प्रेषक : दिलीप दरड़ा

दिवंगत आत्माओं के प्रति कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

जैन कॉन्फ्रेंस पंचम जोन रा. का. सदस्य की ओर से निर्मित ओम जय आनंद डायलिसिस सेंटर के उद्घाटन की कुछ झलकियाँ

श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री सुमतिप्रकाश जी म., उपाध्याय पू. डॉ. श्री विशाल मुनि जी म. बैंगलोर में चातुर्मास प्रवेश की ओर जाते हुए

श्रमण संघीय महामंत्री पू. श्री सौभाग्यमुनि जी म. 'कुमुद' आदि संत-सतीवृंद चित्तौड़गढ़ प्रवेश के उपरांत उपस्थित श्रद्धालुजनों को प्रवचन फरमाते हुए।

श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री दिनेशमुनि जी म. आदि ठाणा दत्त नगर पुणे में चातुर्मास प्रवेश के उपरांत प्रवचन फरमाते हुए।

साध्वी रत्ना पू. श्री किरणप्रभा जी म. की सुशिष्या पू. श्री विपुलदर्शना जी म. आदि ठाणा कासवाडी पुणे में चतुर्मास प्रवेश के उपरांत प्रवचन फरमाते हुए

को छ.ग. श्रमण संघीय श्रावक परिवार ने चांदी के सिक्कों के द्वारा सभा में पुरस्कृत कर सम्मानित किया। शेष सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को भी सांत्वना पुरस्कार देकर उत्साहवर्धन किया गया। परीक्षा आयोजन में रायपुर निवासी श्रीरामचंद जी मीना जी पींचा का पूर्ण सहयोग रहा। उनका छ.ग. श्रमण संघीय अध्यक्ष डॉ. बी.सी. कर्नावट एवं महामंत्री श्री निर्मल जी बाफना द्वारा सम्मान किया गया। आगामी परीक्षा अक्टूबर 2017 को होने की घोषणा की गई।

प्रेषक : नवीन संचेती

जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश द्वारा वंदन नमन यात्रा

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया एस.एस. जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश द्वारा नगर में विराजित पू. साधु-साध्वियों के दर्शन हेतु वंदन नमन यात्रा 9 जुलाई से आरंभ की गई। जिसके तहत दिल्ली में 9 चातुर्मास स्थलों तक पहुंचने का कार्यक्रम निर्धारित किया गया।

पहले दिन 9 जुलाई, को पू. श्री ज्ञानमुनि जी म. ठाणा-1 गोल मार्किट, जैन भवन, महासाध्वी पू. श्री रानीजी म. ठाणा-3 जैन स्थानक, त्रिनगर, प्रवचन प्रभावक पू. श्री गौतम मुनि जी म. ठाणा-2 स्थानक त्रिनगर, कर्मठ वक्ता साध्वी पू. श्री विमला जी म. ठाणा-2 जैन स्थानक इन्द्र पुरी, तपाचार्य उपप्रवर्तिनी पू. श्री मोहनमाला जी म. ठाणा-7 करोल बाग जैन स्थानक, महासाध्वी श्री मंगल ज्योति जी म. ठाणा-3 जैन स्थानक महावीर भवन बारादरी, चाँदनी चौक, महासाध्वी पू. श्री कमलप्रभा जी म. ठाणा-5 जैन स्थानक शास्त्री नगर, महासाध्वी एषना जी म. ठाणा-5 जैन स्थानक लारेंस रोड के चरणों में वंदन अर्जकर सुखसाता पूछी गयी। इस दर्शन वंदन यात्रा में प्रांतीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन व महामंत्री श्री जसवंत जी जैन सहित दिल्ली के प्रदेश के कई वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित थे।

प्रेषक : जसवंत जैन

मंद बुद्धि बच्चों की नेत्र जाँच का द्वितीय चरण शिवर

नई दिल्ली : गुरु शुक्ल जैन चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान में बंद बुद्धि गृह 'आशा किरन' समाज कल्याण विभाग दिल्ली सरकार, रोहिणी (अवन्तिका) लॉयन्स नया बाजार चेरिटबेबल सोसाएटी के सहयोग से 11 जून 2017 रविवार को फ्री नेत्र जाँच शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर को मिलाकर लगभग 950 मंद बुद्धि बच्चों की आँखें चैक करके उन्हें दवाई एवं चश्मे फ्री वितरण किये गये।

शिविर का आयोजन उ.भा. प्रवर्तिनी महासाध्वी पू. श्री डॉ. सरिता जी म.सा. की पौत्र शिष्या श्रमणी महासाध्वी पू. श्री श्रेया जी म.सा की पावन प्रेरणा से किया गया। महासती श्री श्रेया जी म.सा. सेवा कार्यों में रुचि एवं सेवा लग्न, गरीब-दीन दुःखियों की सेवा, ऐसे मंद बुद्धि गृह, अपंग गृहों की सेवा, हमारे गुरु शुक्ल जैन चैरिटेबल ट्रस्ट को सदैव प्रेरित करती है। ट्रस्ट का परम लक्ष्य मानव सेवा के उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए ट्रस्ट दिन प्रतिदिन सेवा के कार्यों में तरक्की कर रहा है।

अभूतपूर्व सहयोग श्री राजपाल जैन, महामंत्री आदर्श नगर, श्री जे.पी. मित्तल, जी का सराहनीय रहा। समाज कल्याण विभाग 'आशा किरन' के अधिकारीगण, विशेषरुप से डॉ. रचना भारद्वाज जी पंकज कुमार जी का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। ट्रस्ट के प्रधान श्री विजय गर्ग जी, मंत्री श्री अजय जैन, कोषाध्यक्ष सुशील जैन सभी का आभार प्रकट करते हैं।

प्रेषक : नरेन्द्र जैन

श्री पुखराज बेताला जैन को-आर्डिनेटर पद पर नियुक्त

भागलकोट (कर्नाटक) : प्रांतीय कांग्रेस कमेटी, अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के चेयरमैन श्री खुर्शीद अहमद खान ने जैन समाज के वरिष्ठ समाजसेवी श्री पुखराज जैन बेताला को को-आर्डिनेटर पद पर नियुक्त किया है। अपनी नियुक्ति के बाद श्री पुखराज जी बेताला ने कहा कि वे निष्ठा व ईमानदारी के साथ अल्पसंख्यक जैन समाज को शासकीय नीतियों के साथ जोड़ने का भरसक प्रयास करेंगे। भागलकोट जैन समाज ने श्री पुखराज जी को बधाईयां दी हैं

प्रेषक : भागलकोट जैन श्रीसंघ

मरण दो प्रकार के हैं पहला बाल मरण दूसरा पंडित मरण

विरार (महाराष्ट्र) : विरार प. परिसर के मेवाड़ भवन में श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री राममुनि जी म. 'निर्भय' ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए अपने प्रवचनों में कहा कि मनुष्य जीवन का फल कुदरत की किसी महत् अनुकंपा, पुण्य से खिलता है। हम अपने आस-पास यही देखते हैं कि मनुष्य जन्म लेता है, पलता है, बड़ा होता है जीवन भर संघर्ष करता है। कंचन कामिनी प्राप्त करता है, ऐशो-आराम, मौज-मस्ती, फिर अपने बनाये हुये संसार को छोड़कर एक दिन मृत्यु का ग्रास हो जाता है। यह जीवन चक्र है। एक विद्ववान ने कहा है **'पापी जीता, धर्मी जीता है जीता है सारा संसार, कला नहीं आयी तो जीना है बेकार'**। जीना संयम पूर्वक जीओ पंडित मरण करो स्वीकार, फिर मरने की नहीं रहेगी दरकार। के साथ संथारे की विस्तृत जानकारी देते हुए बालमरण और पंडित मरण दो तरह का मरण बताया है बाल मरण यानी अज्ञानी, पंडित मरण ज्ञानी। अज्ञानी हाय हाय करके प्राण छोड़ता है और ज्ञानी हरे-हरे।

प्रेषक : दलपत शेठिया

महाराष्ट्र चेंबर ऑफ कॉमर्स, इंडस्ट्री एंड अग्रीकल्चर के अध्यक्ष के पद संतोष मंडलेचा जी का पदग्रहण

मुंबई (महाराष्ट्र) : राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख श्री मोहनजी भागवत, केन्द्रीय रेलमंत्री श्री सुरेश प्रभु तथा संरक्षण राज्यमंत्री डॉ. सुभाष भामरे की उपस्थिति में नाशिक के प्रसिद्ध उद्योजक श्री संतोष मंडलेचा जी ने महाराष्ट्र चेंबर ऑफ कॉमर्स, इंडस्ट्री, और अग्रीकल्चर के अध्यक्ष पद का पदभार स्वीकार किया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद का पदभार श्री अमित कामत जी ने स्वीकार किया। आर.एस.एस. प्रमुख ने कहा कि भारत की प्रतिभा विश्व के सभी देशों से अलग है। हमें भारत को महासत्ता नहीं विश्वगुरु बनाना है। पद ग्रहण समारंभ के लिए पूरे महाराष्ट्र के व्यापारी, उद्योजक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

प्रेषक : चन्द्रकांत दीक्षित

उपाध्याय पू. श्री जितेन्द्र मुनि जी म. का पाली में मंगल प्रवेश

पाली (राजस्थान) : श्रमण संघ के आगम ज्ञाता, आगम पुरुष, जिन शासन रत्न, उपाध्याय पू. श्री जितेन्द्र मुनि जी म., उग्र तपस्वी पू. श्री रमण मुनि जी म., तपस्वी पू. श्री प्रभव मुनि जी म., मधुर गायक पू. श्री प्रभासमुनि जी म., सेवाभावी पू. श्री प्रशमित मुनि जी म. आदि ठाणा पावन पवित्र भूमि पाली में मंगल प्रवेश किया। जहां स्थानक में शोभायात्रा धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। अनेक गणमान्य श्रावक और श्राविकायें उपस्थित थी। कार्यक्रम का संचालन श्री सज्जनराज जी गुलेच्छा ने किया। प्रवेश प्रवचन की प्रभावना श्री नेमीचंद जी, देवेन्द्रकुमारजी, दर्शनकुमार जी चोपड़ा परिवार की ओर से थी।

प्रेषक : ताराचंद जैन